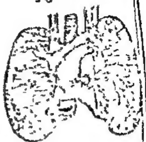


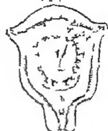

गर्भाशयका चित्र

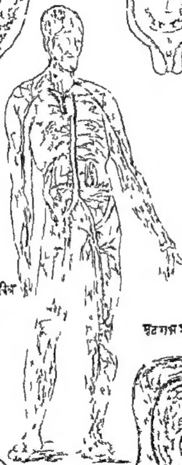

फुप्फुस (फेंफड़ा)


आंत्र (आंतड़े)




ध्यनयु गर्भका चित्र

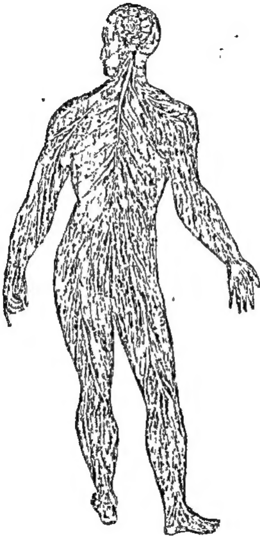

भ्रूणाकी स्थिति प्रदर्शक चित्र


धमनी प्रदर्शक चित्र


मृतगर्भ निकालनेका चित्र




मृतगर्भ प्रदर्शक चित्र



स्नायु प्रदर्शक चित्र.

अनुक्रमणिका.

नाडीज्ञानतरंगिणी प्रारंभः

श्रीर्जयति ॥ ॥ अथातोनाडीज्ञानतरंगिणीं रचयिष्यामः ॥ नत्वाश्रीराघवंदेवंभूमिजा रमणंहरिम् ॥ रचयाम्ययिलोलाक्षिनाडीज्ञा नतरंगिणीम् ॥ १ ॥ ज्ञात्वाकालंबलंबाले नृणामाधुनिकंवयः ॥ पराशरादिकर्षीणांवा क्यैःसिद्धांतिनामपि ॥ २ ॥ नीरतीरादिरू पैश्वस्वर्णरत्नादिकैर्यथा ॥ किरीटंभूमिपाला नांमहर्घैःसुषमाप्रदं ॥ ३ ॥

टीका–अथ शकुनज्ञानतरंगिणीरचनानंतर, नाडीज्ञानतरंगिणी रचता हौं. तहां प्रथम निर्विघ्नसमाप्त्यर्थ स्वइष्ट देव राघवजीको नमस्कार करिके मंगलाचरण करता हौं. अथ श्लोकार्थ–हे लोलाक्षि, प्रथम भूमिपुत्री जो श्रीजानकीजी तिनके पति श्रीरघुकुलोत्पन्न रामचंद्र साक्षात् हरि भगवान्को नमस्कार करिके औ उनकी कृपासें इस समयका काल औ मनुष्योंका अवस्था औ वलको जानिके फिरि परा-

शरादि जे सिद्धांतके करनेवाले ऋषि तिनके वाक्य तेई जल औ किनारेरूप हैं, तिनकरिके यह नाडीज्ञानतरंगिणी मैं रचता हौं जैसे अमोल्य स्वर्णरत्नादिकरिके राजांके परम शोभा देनेवाला, मुकुट रचते हैं तैसे ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

चापल्यंमेक्षमिष्यंतिविद्वांसोगतमत्सराः॥ मूर्खाणांमत्सरवतांविरोधैःकाक्षतिर्मम ॥ ४ ॥

टीका–हे प्रिये, जे विद्वान् औ ईर्षारहित हैं ते मेरी चपलताको क्षमा करैं औ जे मूर्ख हैं ओ ईर्षा करनेवाले हैं तिनके विरोधसैं मेरी क्या हानि है याने कुछभी हानि नहीं है ॥ ४ ॥

लोलाक्षीपृच्छति॥वदभिषग्वरकंजविलोचन पवनपित्तकफैर्धमनीगतिं॥तवमुखाब्जवचोऽमृतपानतोभवतिमेमनसिप्रवरंसुखं ॥ ५ ॥

टीका–लोलाक्षी पूछती है हे वैद्यश्रेष्ठ, हे कमलनयन, वातपित्तकफकरिके जो जो नाडीकी गति होती है सोई सोई कहो. तुह्मारे मुखरूप चंद्रमासें वचनरूप अमृतपान करनेसें मेरे मनमें परम सुख होता है॥५॥

केचिद्वातंवदंत्यादौकेचित्पित्तंभिषग्वराः॥निश्चितंब्रूहिकश्चादौकोमध्येऽतेचकःपृथक् ॥६

टीका—कितने विद्वान् वैद्य आदिमें वात कहते हैं. कितनें पित्त कहते हैं. तहां आप निश्चै करिके कहौ की, कौन दोप आदिमें, औ कौन मध्यमें, औ कौन अंतमें है सो पृथक् पृथक् कहो ॥ ६ ॥

केदेवाःसंतिनाडीनांकथंतांश्चपरीक्षयेत् ॥ अनापृष्टंचयत्किंचित्तदपिप्रवदप्रिय ॥ ७ ॥

टीका—हे प्रिय, वात, पित्त, कफ, इनकी नाडियोंके देवता कौन हैं और नाडीकी परीक्षा कैसे करना? औरभी जो मैनें न पूछा होई सोभी कहौ॥७॥

रघुनाथप्रसादः ॥ अयिशृणुकुंजरगामिनि कांतेऋषिवचनानिवदाम्यहमद्धा ॥ घनकुचयुग्मवरेविधुवक्त्रमतिमतिबुद्धिमदात्मभवा त्वम् ॥ ८ ॥

टीका—अयि कुंजरगामिनि हे कांते, तुम सुनो. मैं साक्षात् ऋपिनके वचन कहौंगा. हे घनकुचयुग्मवरे, हे चंद्रवदने, हे बुद्धिमति, तुम बुद्धिवानकी पुत्री हौ, इसवास्ते तुम प्रीतियुक्त सुनो ॥ ८ ॥

श्रीश्रीनिवासतातार्यःसुप्रसन्नोमयिस्थितः ॥ रघुनाथप्रसादोऽपिकविस्तेतोऽश्रमंक्षमः॥९॥

शरादि जे सिद्धांतके करनेवाले ऋषि तिनके वाक्य तेई जल औ किनारेरूप हैं, तिनकरिके यह नाडीज्ञानतरंगिणी मैं रचता हौं जैसे अमोल्य स्वर्णरत्नादिकरिके राजोंके परम शोभा देनेवाला, मुकुट रचते हैं तैसे ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

चापल्यंमेक्षमिष्यंतिविद्वांसोगतमत्सराः॥ मूर्खाणांमत्सरवतांविरोधैःकाक्षतिर्मम ॥ ४ ॥

टीका—हे प्रिये, जे विद्वान् औ ईर्षारहित हैं ते मेरी चपलताको क्षमा करें औ जे मूर्ख हैं ओ ईर्षा करनेवाले हैं तिनके विरोधसें मेरी क्या हानि है याने कुछभी हानि नहीं हैं ॥ ४ ॥

लोलाक्षीपृच्छति॥वदभिषग्वरकंजविलोचन पवनपित्तकफैर्धमनीगतिं॥तवमुखाब्जवचोऽमृतपानतोभवतिमेमनसिप्रवरंसुखं ॥ ५ ॥

टीका—लोलाक्षी पूछती है हे वैद्यश्रेष्ठ, हे कमलनयन, वातपित्तकफकरिके जो जो नाडीकी गति होती है सोई सोई कहो. तुह्मारे मुखरूप चंद्रमासें वचनरूप अमृतपान करनेसें मेरे मनमें परम सुख होता है॥५॥

केचिद्वातंवदंत्यादौकेचित्पित्तंभिषग्वराः॥निश्चितंब्रूहिकश्चादौकोमध्येऽतेचकःपृथक् ॥६॥

टीका–कितने विद्वान् वैद्य आदिमें वात कहते हैं. कितनें पित्त कहते हैं. तहां आप निश्चै करिके कहो की, कौन दोष आदिमें, औ कौन मध्यमें, औ कौन अंतमें है सो पृथक् पृथक् कहो ॥ ६ ॥

केदेवाःसंतिनाडीनांकथंतांश्चपरीक्षयेत् ॥ अनापृष्टंचयत्किंचित्तदपिप्रवदप्रिय ॥ ७ ॥

टीका–हे प्रिय, वात, पित्त, कफ, इनकी नाडियोंके देवता कौन हैं और नाडीकी परीक्षा कैसे करना? औरभी जो मैनें न पूछा होई सोभी कहो॥७॥

रघुनाथप्रसादः ॥ अयिशृणुकुंजरगामिनि कांतेऋषिवचनानिवदाम्यहमद्धा ॥ घनकुचयुग्मवरेविधुवक्त्रमतिमतिबुद्धिमदात्मभवा त्वम् ॥ ८ ॥

टीका–अयि कुंजरगामिनि हे कांते, तुम सुनो. मैं साक्षात् ऋषिनके वचन कहोंगा. हे घनकुचयुग्मवरे, हे चंद्रवदने, हे बुद्धिमति, तुम बुद्धिवानकी पुत्री हो, इसवास्ते तुम प्रीतियुक्त सुनो ॥ ८ ॥

श्रीश्रीनिवासतातार्यःसुप्रसन्नोमयिस्थितः ॥ रघुनाथप्रसादोऽपिकविस्तेतोऽश्रमंक्षमः॥९॥

टीका—श्रीश्रीनिवास ताताचार्य, अतिप्रसन्न मेरे हृदयमें स्थित हैं; इसवास्ते मैं कवितामें विनाश्रम समर्थ हौं. इहां केवल गुरुकृपामात्र समर्थताके कारण है. यह निश्चै जानो ॥ ९ ॥

वातिकायाःपतिर्ब्रह्मापैत्तिकाया
स्त्रिशूलधृक् ॥ श्लैष्मिकायाःपति
र्विष्णुर्वदंतीतिविपश्चितः ॥ १० ॥

टीका—वायूकी नाडीका देवता ब्रह्मा है, पित्तकी नाडीका शिव देवता है, कफकी नाडीका विष्णु देवता है ॥ १० ॥

अन्यच्च ॥ वातिकायाःपतिर्वायुःपैत्ति
कायादिवाकरः ॥ श्लैष्मिकायाःपति
श्चंद्रोवदंतीतिमुनीश्वराः ॥ ११ ॥

टीका—औरभी मुनीश्वर कहते हैं. वायूकी नाडीका वायु देवता है, पित्तकी नाडीका सूर्य है, कफकी नाडीका चंद्र है ॥ ११ ॥

अथनाडीज्ञानयोग्यवैद्यः ॥ स्थिरचित्तोनि
रोगश्चसुखासीनःप्रसन्नधीः ॥ नाडीज्ञान
समर्थःस्यादित्याहुःपरमर्षयः ॥ १२ ॥

टीका—स्थिरचित्त, निरोग, सुखसें बैठा हुआ, प्रसन्नबुद्धि ऐसा वैद्य नाडीज्ञानमें समर्थ होता है. ऐसे श्रेष्ठ ऋषि कहते हैं ॥ १२ ॥

अथनाडीज्ञानायोग्यवैद्यः ॥ पीतमद्यश्चं
चलात्मामलमूत्रादिवेगयुक् ॥ नाडीज्ञानेऽ
समर्थःस्याल्लोभाक्रांतश्चकामुकः ॥ १३ ॥

टीका—अथ नाडीज्ञानमें असमर्थ वैद्य कहते हैं. जिसनें मदिरा पियी होई, और जिसका मन चंचल होय, और जिसका मलमूत्रादि त्यागनेकी इच्छा होयरही है, औ जिसको लोभ अत्यंत होई औ कामकरिके पीडित होई सो वैद्य नाडीज्ञानमें असमर्थ है ॥ १३ ॥

अथनाडींद्रष्टुंयोग्योरोगी ॥ त्यक्तमूत्रपुरीष
स्यसुखासीनस्यरोगिणः ॥ अंतर्जानुकरस्या
पिनाडींसम्यक्परीक्षयेत् ॥ १४ ॥

टीका—जो मल और मूत्र त्यागिके सुखसें बैठा होई औ दोनों जानूके बीचमें हाथ किये होई तिस रोगीकी नाडी अछी तरहसें परखना ॥ १४ ॥

अथनाडींद्रष्टुमयोग्यः ॥ सद्यःस्नातस्य

भुक्तस्यतथातैलावगाहिनः ॥ क्षुत्तृषार्त
स्यनुतस्यनाडीसम्यङ्नबुध्यते ॥ १५ ॥

टीका—जो तत्काल स्नान किया होय, वा भोजन किया होय, अथवा तेल मर्दन कराया होय, अथवा भूखाप्यासा होय अथवा सोता होई उसकी नाडी अछी तरहसें देखनेमें नहीं आती है ॥ १५ ॥

अथस्त्रीपुंसोर्नाडीज्ञानभेदमाह ॥ योषितोवा
मभागस्यदक्षिणस्यचनुर्भिषक् ॥ पश्येत्स्वा
नुभवान्नाडीमभ्यासेनापिरत्नवत् ॥ १६ ॥

टीका—अब स्त्रीपुरुषोंकी नाडीका भेद कहते हैं. स्त्रीके वाम अंगमें औ पुरुषके दक्षिण अंगमें वैद्य साक्षात अपने अनुभवकरिके औ अभ्यासकरिके जानना. जैसे जौहरि रत्नकी परीक्षा स्वानुभव औ अभ्यासकरिके करता है ॥ १६ ॥

अस्यभेदस्यकारणंतंत्रांतरेचोक्तं ॥ कूर्मोविदे
हिनामस्तिनाभिस्थानेसदास्थितः ॥ स्त्रीणा
मूर्ध्वमुखःपुंसामधोवक्त्रःप्रकीर्तितः ॥ १७ ॥
तस्यैवदक्षिणेभागेनाडीज्ञेयाभिषग्वरैः ॥ अ
नेनकारणेनैवनारीपुंसोर्व्यतिक्रमः ॥ १८ ॥

टीका—जो कहाकी, पुरुषके दाहिने औ स्त्रीके वामे अंगमें नाडीकी निश्चे करना चाहिये. सो इसका कारण यही है की, देहधारीमात्रके नाभिस्थानमें कूर्म सदा रहता है, सो स्त्रीके ऊर्ध्वमुख रहताहै औ पुरुषके अधोमुख रहता है उसी कूर्मके दाहिने भागमें वैद्योंकरिके नाडी जानने योग्य है; इसवास्ते स्त्रीसें पुरुषके व्यतिक्रम है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथनाडीस्पर्शनविधिः ॥ वारत्रयंपरीक्षेतधृत्वाधृत्वाविमुच्यच ॥ विमर्श्यबहुधाबुध्यात्तोरोगंविनिर्दिशेत् ॥ १९ ॥

टीका—वैद्य रोगीकी नाडीपर तीनि वखत अंगुली धरि धरि औ उठाई उठाइके अछी तरहसें बुद्धीमें विचार लेई फिरि रोग कहै ॥ १९ ॥

अन्यच्च ॥ ईषद्विनामितमयेविततांगुलिंचवालेनिगृह्यकरमामयिनोजनस्य ॥ पुंसोपसव्यमपिसव्यकरेणपश्येनाड्यांचशश्वदपसव्यकरांगुलीभिः ॥ २० ॥ पित्तंसमीरणमथोहिकफंक्रमेणह्यंगुष्ठमूलतइतिप्रवदंतिवैद्याः ॥

नार्यास्तुवाममपसव्यकरेण धीरःसंगृह्यसव्यकरकांगुलिभिस्तथैव ॥ २१ ॥

टीका— अव नाडीस्पर्श करनेकी विधि कहते हैं. रोगी पुरुषके दाहिने हाथको सीधी अंगुली करिके औ किंचित् नवाइके आपके वामे हाथसे पकडीके नाडीकेविषे अंगुष्ठाकी मूलसें लैके आपके दाहिने हाथकी तीनि अंगुली रखीकरिके क्रमसें तर्जनीके नीचे पित्त, मध्यमाके नीचे वायु, अनामिकाके नीचे कफको देखना. ऐसे वैद्य कहते हैं. और स्त्रीका वाम हस्त आपके दाहिने हाथसें पकडीके उसी क्रमसें आपके वामे हाथकी अंगुलीनसें देखना चाहिये ॥ २० ॥ २१ ॥

उक्तंचपराशरसनत्कुमाराभ्याम् ॥ वाताधिक्यावहेन्मध्येत्वग्रेवहतिपित्तला ॥ अंतेश्लेष्मधर्तीज्ञेयामिश्रितेमिश्रिताभवेत् ॥ २२ ॥

टीका—वाताधिक नाडी मध्यमें चलती है, पित्ताधिक आदिमें वहती है, कफाधिक अंतमें वहती है, औ मिश्रित होनेसें मिश्रित चलती है ॥ २२ ॥

अत्रदृष्टांतः ॥ तृणंपुरःसरंकृत्वायथावातोवहे

ड्ली ॥ स्वानुगंचतृणंगृह्यपृथिव्यावक्रगोय था ॥२३॥ एवंमध्यगतोवायुःकृत्वापित्तंपुरःसरम् ॥ स्वानुगंकफमादायनाड्यांवहतिसर्वदा ॥ २४ ॥ अतएवचपित्तस्यज्ञायतेचपलागतिः ॥ वक्राप्रभंजनस्यापिवैद्यैर्मन्दाकफस्यच ॥२५॥ वाताग्रेऽस्तिगतिःशीघ्रातृणस्येतिविदृश्यताम् ॥ मंदानुगस्यवक्रावैमरुतोमध्यगस्यह ॥२६॥ तथाऽत्रैवचज्ञातव्यागतिर्दोषत्रिकोद्भवा ॥ नान्यथाज्ञायतेस्नायुर्गतिरेतद्विनिश्चितं ॥ २७ ॥

टीका–इहां दृष्टांत देते हैं. जैसे पृथ्वीमे जब ति प्रवल पवन चलता है तव देखनेमें आता है कि, तृणको अगाडीभी वडे वेगसे उडाता जाता है. औ पिछाडीकाभी तृण खीचता जाता है, औ आप वीचमे वक्रगतीसें चलता है ॥ २३ ॥ ऐसे नाडीमे सर्वदा आप मध्यमे वक्रगतीसें रहिके पित्तको अगाडी करिके कफको पिछाडी लिये चलता है ॥ २४ ॥ इसीवास्ते पित्तकी चपलगति वैद्योंकरिके जाननेमें आती है. और वायूकी वक्रग-

ति कफकी मंदगति जानी जाती है ॥ २५॥ देखो. प्रसिद्ध है की, जब जोरसें हवा चलती है; जिसको लोग आंधी कहते है, उसके अगाडी औ जो तृण उडता हैं सो बडे वेगसें चलता है. औ जो पीछे उडता है सो मंदगतीसें चलता है. वीचमें वायु आडाटेढा घूमता चलता है ॥ २६ ॥ तैसेही इहांभी नाडीमें वात पित्त कफकी गति जानना चाहिये; और तरहसें नाडीकी गति बरोबरी निश्चै नहीं होती है ॥ २७ ॥

तदिदंकारणं ॥ पित्तंपंगुकफःपंगुः
पंगवोमलधातवः ॥ वायुनायत्रनीयंतेतत्रवर्षंतिमेघवत् ॥ २८ ॥

टीका—तिसका यह कारण है की, पित्त औ कफ पंगुले हैं औ औरभी मलधातु पंगुले हैं; जहां वायु ले जाता है वहां मेघ किसीनांई वर्षते हैं ऐसे यहांभी वायुके आधीन पित्तादिक हैं ॥ २८ ॥

अथस्वस्थस्यनाडीलक्षणम् ॥ भूनागसदृशी प्रायःस्वच्छास्वस्थस्यवैशिरा॥ सुखितस्यस्थिरालेयातथाबलवतीमता ॥ २९ ॥

टीका–स्वस्थ सुखीकी नाडीके चुवा जंतुसरीखी वहुधा चलती है, औ स्वच्छ, स्थिर, वलसंयुक्त होती है ॥ २९ ॥

प्रातःस्निग्धाशिराज्ञेया मध्यान्हे प्युष्णतान्विता ॥ सायान्हेधाव मानाचसदारोगविवर्जिता ॥ ३० ॥

टीका– रोगरहित नाडी प्रातःकालमें स्निग्ध यानें स्थिर सचिक्कन सदा रहती है, मध्यान्हमें उष्णतायुक्त, सायंकालमें शीघ्रगति होती है ॥३०॥

अथनाड्यागतिरुच्यते ॥ वाताद्वक्रगतिर्नाडीपित्ताच्चपलगाभवेत् ॥ कफान्मंदगतिश्चैपामिश्रितेमिश्रिगातथा ॥ ३१ ॥

टीका–वातसें नाडी वक्रगति होती है. पित्तसें चंचल होती है. कफसें मदगति होती है. मिश्रितसें मिश्रित होती हे ॥ ३१ ॥

अन्यच्च ॥ सर्पजलौकादिगतिंवदंति हिवुधाःप्रभंजनेनाडीम्॥पित्तेचकाक लावकभेकादिगतिंतथाचपलाम् ॥३२॥

टीका– वातरोगमें सर्प और जलौकादिककी

गति चलती है. पित्तरोगमें काक, लाव, मेडूक, इत्यादि गति औ चपल चलती है ॥ ३२ ॥

राजहंसमयूराणांपारावतक
पोतयोः ॥ कुक्कुटादिगतिंध
त्तेधमनीकफसंगता ॥ ३३ ॥

टीका–राजहंस औ मोर औ खबूतर, पडूखी औ कक्कुट जो मुरग इनकी गतीसें कफकी नाडी चलती है ॥ ३३ ॥

सर्पादिगतिकांनाडींकाकादिगति
कांतथा ॥ वातपित्तामयोन्मिश्रां
प्रवदंतिभिषग्वराः ॥ ३४ ॥

टीका–जो नाडी कहीं सर्पादिक गति औ कहीं काकादिक गति मिश्रित चले तिसको वैद्यश्रेष्ठ वातपित्तमिश्रितरोगकी कहते हैं ॥ ३४ ॥

दंदशूकगतिंनाडींकदाचिद्धंसगामि
नीं ॥ कफवातामयोन्मिश्रांप्रवदंति
भिषग्वराः ॥ ३५ ॥

टीका–जो नाडी कदाचित् सर्पगति ओ कदाचित् हंसगतीसें चलती है उसको श्रेष्ठवैद्य कफवातमिश्रितरोगकी कहते हैं ॥ ३५ ॥

मंडूकादिगतिंनाडींकदाचिद्धंसगामिनीं ॥ कफपित्तामयोन्मिश्रांप्रवदंति भिषग्वराः ॥ ३६ ॥

टीका– जो नाडी कदाचित् मेंडूककी गति औ कदाचित् हंसकी गतीसें चलती है उसकों श्रेष्ठवैद्य कफपित्तकी नाडी कहते हैं ॥ ३६ ॥

अन्येऽप्याहुः ॥ क्षणेवक्राक्षणेतीव्रा मध्यमातर्जनीतले ॥ स्फुटाभवति सानाडीवातपित्तगदोद्भवा ॥ ३७ ॥

टीका–जो नाडी क्षणमें वक्र औ क्षणमें तीव्र गतीसें तर्जनी औ मध्यमाके नीचे प्रकट होती है सो वातपित्तरोगकी है ॥ ३७ ॥

स्फुटावक्राचमंदाच मध्यमानामिकातले ॥ याभवेत्साहिविज्ञेया कफवातसमुद्भवा ॥ ३८ ॥

टीका–जो नाडी क्षणक्षणमें वक्र औ मंदगतीसें मध्यमा ओ अनामिकाके नीचे प्रकट होती है सो वातकफकी है ॥ ३८ ॥

क्षणेमंदाक्षणेतीव्राऽनामिकातर्जनी

तले ॥ स्फुटास्यात्साधराज्ञेया कफ पित्तसमुद्भवा ॥ ३९ ॥

टीका–जो नाडी क्षणमें तीव्र औ क्षणमें मंदगतीसें अनामिका औ तर्जनीके नीचे प्रकट होती है सो कफपित्तकी है ॥ ३९ ॥

अन्ये चान्यरीत्या स्फुटमाहुः ॥ वातस्था नेचयातीव्रावातपित्तगदोद्भवा ॥ मंदावा तकफोन्मिश्रामध्यमाधोहिनाडिका ॥४०॥

टीका–जो नाडी मध्यमा अंगुलीके नीचे जो वातस्थान है तहां तीव्र चलै तौ वातपित्तकी औ मंद चलै तौ वातकफकी जानना ॥ ४० ॥

पित्तस्थानेचयावक्रापित्तवातोद्भवाचसा ॥ मंदापित्तकफातंकसंभवातर्जनीतले ॥ ४१ ॥

टीका–जो नाडी तर्जनीके नीचे पित्तस्थानमें वक्र चलै तौ पित्तवात, औ मंद चलै तौ पित्तकफसंभव है यह जानना ॥ ४१ ॥

कफस्थानेचयातीव्राकफपित्तगदोद्भवा॥वक्रा श्लेष्ममरुन्मिश्रातंकेसानामिकातले ॥ ४२ ॥

टीका–जो नाडी अनामिकाके नीचे कफस्थानमें

तीव्र चलती होय सो कफपित्तकी, औ वक्र होय सो कफवातकी है यौं जानना ॥ ४२ ॥

अथज्वरकामादिनाडीलक्षणं ॥ ज्वरकोपेनधमनीसोष्णावेगवतीभवेत् ॥ कामक्रोधाद्वेगवहाक्षीणाचिंताभयप्लुता॥४३॥ मंदाग्नेःक्षीणधातोश्चनाडीमंदतराभवेत् ॥ असृक्पूर्णाभवेत्कोष्णागुर्वीसामागरीयसी ॥ ४४ ॥ लघ्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथावेगवतीमता ॥ सुखितस्यस्थिराज्ञेयातथाबलवतीस्मृता ॥ ४५ ॥

टीका–अथ ज्वर औ कामादिकके नाडीलक्षण कहते हैं. ज्वरके कोपसें नाडी उष्णता औ वेगयुक्त होती है. काम औ क्रोधसें वेगयुक्त होती है. चिंता औ भयकी नाडी क्षीण होती है ॥ ४३ ॥ जिसका जठराग्नि मंद औ धातुक्षीण होती है उसकी नाडी अतिमंद चलती है. जिसके रक्तविकार है उसकी नाडी पत्थरसी भारी औ किंचित् गरम चलती है. औ आमरोगयुक्त नाडी भारी लदेभैसेकी चालपर होती है ॥ ४४ ॥ जिसका जठराग्नि प्रदीप्त है उ-

सकी नाडी हलकी औ वेगयुक्त चलती है औ सु-
खीकी नाडी स्थिर औ बलयुक्त होती है ॥ ४५ ॥

अथसन्निपातनाडीलक्षणं ॥ लावतित्ति रवर्तीकगमनासन्निपाततः ॥ अंगुलीत्रितयेऽपिस्यात्प्रव्यक्तासाधराध्रुवं ॥ ४६ ॥

टीका—जो नाडी लावपक्षी ओ तित्तिर औ बटेर-
की गतीसैं चलती है सो सन्निपातकी तीनों अंगु-
लीके नीचे प्रसिद्ध होती है ॥ ४६ ॥

अन्यच्च ॥ काष्ठकुट्टोयथाकाष्ठंकुट्टते चातिवेगतः ॥ स्थित्वास्थित्वातथा नाडीसन्निपातेभवेद्ध्रुवम् ॥ ४७ ॥

टीका—जैसे कठफोरापक्षी अतिवेगसें काष्ठकों
रहिरहिके फोरता हे तैसे सन्निपातमें नाडी होती है ॥

अथसाध्यासाध्यविचारः ॥ स्पंदतेचैकमानेनत्रिंशद्वारंयदाधरा ॥ स्वस्थानेनतदानूनं रोगीजीवतिनान्यथा ॥ ४८ ॥

टीका—जो नाडी एकलग निरंतर आपके स्थान-
पर तीसवेर फरकै तो रोगी जीवें, नहीं तो नहीं ४८
,

अथासाध्यनाडीलक्षणं ॥ स्थिरानाडीभवे द्यस्यविद्युद्द्युतिरिवेक्षते ॥ दिनैकंजीवितंत स्यद्वितीयेमृत्युरेवच ॥ ४९ ॥

टीका—जिसकी नाडी स्थिर होय औ विजुलीस- रीखी रहिरहिके चले तिसकी आयुः एक दिनकी है, दूसरे दिन मृत्यु है ॥ ४९ ॥

अतिसूक्ष्मातिवेगावाशीतलाचभवेद्यदि ॥ त दावैद्योविजानीयादयंरोगीविनश्यति ॥५०॥

टीका—जिसकी नाडी अतिसूक्ष्म अथवा अतिवे- गसें चलती है तौ वैद्य ऐसा जाने की, यह रोगी मरेगा ॥ ५० ॥

तिर्यग्गुष्णाचयानाडीसर्पवद्वेगवत्तरा ॥ कफपूरितकंठस्यजीवितंतस्यदुर्लभं ॥ ५१ ॥

टीका—जिसकी नाडी वक्र औ सर्पसरीखी अ- तिवेगसें चलती होय और कंठ कफकरिके भरा होई तिस रोगीका जीवना दुर्लभ है ॥ ५१ ॥

दृश्यतेचरणेनाडीकरेनैवविदृश्यते ॥ मुखंवि कसितंयस्यजीवितंतस्यदुर्लभं ॥ ५२ ॥

टीका—जिसके पगकी नाडी चलती होय औ

हाथकी न चलती होय ओ मुख फैली रहा होय तिस रोगीका जीवना दुर्लभ है ॥ ५२ ॥

कंपतेस्पंदतेऽत्यंतंपुनःस्पृशतिचांगुलीः ॥ तामसाध्यांविजानीयान्नाडीं दूरेणवर्जयेत् ॥ ५३ ॥

टीका—जिसकी नाडी कंपयुक्त चलती चलती रही जाय, ओ फिरि अंगुलीनकों स्पर्श करै तिसकी नाडी असाध्य जानिके दूरिहिसें त्यागि देई ॥ ५३॥

शीघ्रानाडीमलोपेताशीतलावाथदृश्यते ॥ द्वितीयेदिवसेमृत्युस्तस्यनुर्भवतिध्रुवं ॥ ५४॥

टीका—जिसकी नाडी शीघ्र औ मलयुक्त चलती होई वा शीतला याने थंड चलती होई तिसकी मृत्यु दूसरे दिन जरूर होती है ॥ ५४ ॥

सुखेनाडीवहेत्तीव्राकदाचिच्छीतलावहेत्॥आयातिपिच्छिलःस्वेदःसप्तरात्रंसजीवति॥५५॥

टीका—जिसकी नाडी अग्रभागमें अतिशीघ्र चलती होय औ कदाचित् ठंडी होई ओ देहमें चिकटापसीना आता होई तौ सो रोगी सात दिन जीवै ॥ ५५ ॥

सुखेनाडीयदानास्तिमध्येशैत्यंबहिःक्कमः ॥
यदामंदावहेन्नाडीसत्रिरात्रंनजीवति ॥ ५६॥

टीका–जिसकी पित्तनाडी नष्ट होगई ओ मध्यमें वातनाडी शीतल होगई औ बाहर ग्लानि होय औ नाडी मंद चलती होय सो तीनिरात्रि न जिवैगा ॥ ५६ ॥

शीघ्रानाडीमलोपेतामध्यान्हेऽग्निसमोज्वरः॥
दिनैकंजीवितंतस्यद्वितीयेऽह्निम्रियेतसः ५७

टीका–जिसकी नाडी मलयुक्त होई औ मध्यान्हमें अग्नितुल्य ज्वर होई सो एक दिन जीवै ॥ ५७ ॥

हिमवच्छीतलानाडीज्वरदाहेनतापिनः ॥ त्रिदोषरुग्विभजतोमृत्युरेवदिनत्रयात् ॥ ५८॥

टीका–जिसकी नाडी हिमसरीखी ठंढी होय ओ जो ज्वरके दाहकरिके तपायमान होई ओ त्रिदोषरोगको प्राप्त भयी होई तिसकी मृत्यु तीनि दिनमें हे ॥ ५८ ॥

स्वस्थानविच्युतानाडीयदावहतिवा
नवा ॥ ज्वालाचहृदयेतीव्रातदाज्वा
लावधिस्थितिः ॥ ५९ ॥

टीका—जिसकी नाडी स्थान छोडीके कधी चले, कधी न चले औ हृदयमें तीव्र ज्वाला होई तौ जहांतक ज्वाला है तहांतक जीता है ॥ ५९ ॥

अंगुष्ठमूलतोबाह्येद्व्यंगुलेयदिनाडिका ॥ प्रहरार्धाद्वहिर्मृत्युंजानीयाच्चविचक्षणः ॥ ६० ॥

टीका—अंगुष्ठाकी मूलसें दो अंगुल छोडिके जो नाडी होई तो आधे पहर पीछे मरै ॥ ६० ॥

मध्येरेखासमानाडीयदितिष्ठतिनिश्चला॥ षड्भिश्चप्रहरैस्तस्यमृत्युर्ज्ञेयोविचक्षणैः ॥ ६१॥

टीका—जिसकी नाडी वातस्थानमें जो रेखासरीखी निश्चल चलती होई तिसकी छप्रहरमें मृत्यु है ॥ ६१ ॥

मंदंमंदंशिथिलशिथिलंव्याकुलंव्याकुलंवा स्थित्वास्थित्वावहतिधमनीयातिसूक्ष्मान राणां ॥ नित्यंस्थानात्स्खलतिपुनरप्यंगुलीःसंस्पृशेद्वाभावैरेवंबहुविधतरैःसन्निपातेत्वसाध्या ॥ ६२ ॥

टीका—जिन मनुष्योंकी नाडी मंद मंद, औ शिथिल शिथिल ओ व्याकुल व्याकुल चलती होई औ

रहिरहिके अतिसूक्ष्म औ निरंतर स्थानको छोडिके फिरिभी अंगुलीनको स्पर्श करे ऐसे अनेकलक्षण-युक्त सन्निपातकी नाडी असाध्य है ॥ ६२ ॥

अथचैतादृशलक्षणापिअनयागत्यासाध्या ॥ पूर्वंपित्तगतिंप्रभंजनगतिंश्लेष्माणमाबिभ्र तीस्वस्थानाद्भ्रमणंमुहुर्विदधतीचक्रादिरूढा मिव॥तीव्रत्वंदधतीकदाचिदपिवासूक्ष्मत्व मातन्वतींनाऽसाध्यांधमनींवदंतिसुधियो नाडीगतिज्ञानिनः ॥ ६३ ॥

टीका–अब ऐसे लक्षणयुक्त नाडीभी इस रीतिसे साध्य है सो कहते हैं. जो नाडी स्पर्शसमयमें प्रथम पित्तगति, फिरि वातगति फिरि कफगति चले औ आपके स्थानसें भ्रमती हुई वारवार जैसे चक्रपर स्थित होती है, ऐसे चले. कभी तीव्र, औ फिरि सूक्ष्मभी चले तो इस नाडीको नाडीज्ञानवाले असाध्य नहीं कहते हैं ॥ ६३ ॥

भारप्रवाहमूर्च्छाभयशोकप्रमुखकार णान्नाडी ॥ संमूर्च्छितापिगाढंपुनर पिसाजीवितंधत्ते ॥ ६४ ॥

टीका—मारले चलनेसें, मूर्च्छासें, भयसें शोकसें, जो नाडी मूर्च्छितभी होती है तौभी साध्य है ॥ ६४॥

भूतावेशयुतस्यापिनष्टशुक्रस्यनाडिका ॥ त्रिदोषगमनाचापिसूक्ष्माचापिनमृत्युदा॥६५॥

टीका—भूतावेशयुक्तकी औ धातुक्षीणकी नाडी त्रिदोषगतिभी चलती है. औ सूक्ष्म तौभी मृत्युदायक नहीं है ॥ ६५ ॥

स्वस्थानहीनाशोकेचहिमाक्रांतेचनिर्गदा॥भवंतिनिश्चलानाड्योनकिंचित्तत्रवैभयम्॥६६

टीका—शोकमे औ शीतलगनेमे स्थिर नाडी होय तौभी भय नहीं हे ॥ ६६ ॥

स्तोकंवातकफंनष्टंपित्तंवहतिदारुणम् ॥ पित्तस्थानंविजानीयात्तत्रभेषजमाचरेत् ॥६७॥

टीका—थोडा वात औ कफ नष्ट भया होई औ पित्त दारुण चलै तौ औषध करना ॥ ६७ ॥

स्वस्थानच्यवनंयावद्धमन्यानोपजायते ॥ तत्स्थचिह्नस्यसत्वेऽपिनाऽसाध्यत्वमितीरितम् ॥ ६८ ॥

टीका—जहातक नाडी बिनकुल स्थानभ्रष्ट न होई

औ चिन्ह त्रिदोषके होई तौभी असाध्य नहींहै ॥६८॥

अथाहारवशान्नाड्यागतिरुच्यते ॥ पुष्टिस्तैलगुडाहारेमाषेचलगुडाकृतिः ॥ क्षीरेस्तिमितवेगाचमधुरेहंसगामिनी ॥ ६९ ॥

टीका–अब आहारके वशसें नाडीकी गति कहते हैं. तेल औ गुड खानेंसें नाडी पुष्ट होती है, औ उडद खानेसें लकुटके आकार होती है, दूध खानेसें मंदगति होती है औ मिष्ट भोजनसें हंसकी गति होती है ॥ ६९ ॥

मधुरेबर्हिगानाडीतिक्तेस्थूलगतिर्भवेत् ॥ अम्लेभेकगतिः कोष्णाकटुकेभृंगसन्निभा ७०

टीका–मधुर भोजनसें नाडी मयूरगति होती है, तिक्त भोजनसें स्थूलगति होती है, खटाईसें किंचित् उष्ण औ मेडूककी गति चलती है. कडूयेसें भ्रमरकी गति चलती है ॥ ७० ॥

कषायेकठिनाम्लानालवणेसरलाद्रुता ॥ एवंद्वित्रिचतुर्योगेनानाधर्मवतीधरा ॥ ७१ ॥

टीका–कषैले भोजनसें कठिन औ मलिन यानें किंचित् मंद चलतीहै. लवणरस भक्षणसें सरल औ

शीघ्रगति होती है. ऐसेही दो तीनों चारी वा सर्व मिलनेसें नानाप्रकारकी गति होती है ॥ ७१ ॥

द्रवेतिकठिनानाडीकोमलाकठिनाशने ॥ द्रवद्रव्यस्यकाठिन्येकोमलाकठिनापिच ॥ ७२

टीका—द्रव यानें पतला जैसे काठिन इत्यादि भक्षण करनेसें अतिकठिन नाडी चलती है औ कठिन आहारसें कोमल चलती है औ जो द्रवद्रव्य कठिनता लियेहोई तौ कोमल औ काठिनभी चलती है ॥७२॥

द्रव्यैश्चमधुराम्लाद्यैर्नाडीशीताविशेषतः ॥ चिपिटैर्भ्रष्टद्रव्यैश्चस्थिरामंदतराभवेत् ७३

टीका—मीठे और खट्टे मिश्रितसें नाडी विशेषकरिके ठंढी रहती है औ चूरा जिनको पोहाभी कहते हैं इनसें औ सिके चर्वनसें स्थिर औ मंद होतीहै ॥७३॥

कूष्मांडैर्मूलकैश्चैवभवेन्मंदाहिनाडिका ॥ शाकैश्चकदलैश्चैवरक्तपूर्णेवसाभवेत् ॥७४॥

टीका—कूष्मांड औ मूलीसें नाडी मंद होती है. शाक अरु केलेसे रक्तपूर्ण जैसी होती है ॥ ७४ ॥

मांसात्स्थिरवहानाडीदुग्धाच्छीता बलीयसी ॥ गुडक्षीरैःसपिष्टैश्च स्थिरामंदाधराभवेत् ॥ ७५ ॥

टीका—मांसखानेसें नाडी स्थिर, दूधसें ठंढि औ बलयुक्त, गुड, दूध औ पिष्टसें स्थिर औ मंद होती है ॥ ७५ ॥

मैथुनांतेभवेच्छीघ्रासरलापिचनाडिका ॥
मलाजीर्णेननितरांस्पंदतेतंतुसन्निभा ॥७६॥

टीका—मैथुनांतमें नाडी शीघ्र ओ सरल चलती है औ मलाजीर्णमें तंतुसरीखी किंचित् किंचित् चलती है ॥ ७६ ॥

व्यायामेभ्रमणेचैवचिंतायांधनशोकतः ॥
नानाप्रकारगमनाजीवितज्ञाभवेद्ध्रुवं ॥७७॥

टीका—कसरति करनेमें, फिरनेमें, चिंतामें, धनके शोकमे, नाडीकी नानाप्रकारकी गति होती हे ७७

अजीर्णेतुभवेन्नाडीकठिनापरितोजडा ॥ पक्काजीर्णेपुष्टिहीनामंदंमंदंप्रवर्तते ॥ ७८ ॥

टीका—अजीर्णमें नाडी कठिन औ जड होती है औ पक्काजीर्णमें पुष्टिहीन औ मदगतीसें चलती है ॥ ७८ ॥

विषूचिकाऽभिभूतेचनाडिकाभेकसंक्रमा ॥
प्रमेहेचोपदंशेचग्रंथिरूपाधरास्मृता ॥७९॥

टीका–विषूचिका रोगमें नाडी मेंडुकगती चलती हे, प्रमेह ओ उपदशमें ग्रंथिरूप चलती हे. ॥ ७९ ॥

प्रदरेरक्तपीतेचश्वेतेग्रंथिवदुच्छंति ॥ क्षत कासेतथाराजयक्ष्मणिग्रंथिरूपिणी ॥ ८० ॥

टीका–श्वेतप्रदर, रक्तपीत ओ क्षतकास, तथा क्षयीरोगमें ग्रंथिरूप चलती हे ॥ ८० ॥

वांतस्यशल्याभिहतस्यजंतोर्वेगावरोधाकुलि तस्यचैव॥ गतिंविधत्तेधमनीगजेंद्रमराल कानांचकफोल्बणस्य ॥ ८१ ॥

टीका–जिस पुरुषनें वांति किमी होई, अथवा जिसके तीर वगेरे लगाहोई अथवा जो मलादिक-वेगसें व्याकुल होई, अथवा जिसके कफ वहुत होई तिसकी नाडी हाथी औ हसकी गतीसें चलती हे ॥ ८१ ॥

अथान्यमतानुसारेणस्वस्थनाडीलक्षणम् ॥ अयिप्रियेशृणुष्वैववदाम्यहंमतांतरं ॥ नर स्यजन्मकालतोह्यशीतिवत्सरावधि ॥ शि शोर्हिजन्मकालतः पलावधिप्रकंपते ॥ धरा रसेपुवारकंनिरंतरंशिशुप्रिये ॥ ८२ ॥

टीका–हे प्रिये, अब मैं मतातरसें स्वस्थनाडीका लक्षण कहता हौं. जन्मकालसें असी वर्षपर्यंत कहता हौं, जन्मकालसें एक पलपर्यंतमें नाडी ५६ छप्पन्न वार फरकती है ॥ ८२ ॥

पलादारभ्यवर्षांतंपलैकेनचनाडिका ॥ नेत्रेपुक्तश्चलतिमत्तकुंजरगामिनि ॥ ८३ ॥

टीका–जन्मकालसें पलपरमितकाल पीछे एक वर्ष पर्यंत एक पलमें बावन ५२ वेर चलती है ॥ ८३ ॥

अब्दादब्दद्वयंनाडीपलैकेनप्रवेपते ॥ वेदाब्धिवारंलोलाक्षिचलत्कुंडलशालिनि ॥८४॥

टीका–एकवर्ष पीछे दोवर्षपर्यंत एकपलमें नाडी चौवालिश ४४ वेर कंपती है ॥ ८४ ॥

वर्षद्वयात्रिवर्षांतंपलैकेनचतंतुकी ॥ खवेदकृत्वश्चलतिपीनोत्तुंगपयोधरे ॥ ८५ ॥

टीका–दोवर्षपीछे तीनिवर्षतक एकपलमें चालीश ४० वेर नाडी चलती हे ॥ ८५ ॥

त्रिवर्षात्सप्तवर्षांतंषट्त्रिंशद्वारकंप्रिये ॥ कंपतेचपलैकेनजीवितज्ञाप्रियंवदे ॥ ८६ ॥

टीका–तीनिवर्षकी अवस्थापीछे सातवर्षकी आ-

टीका—विषूचिका रोगमें नाडी मेडुकगती चलती हे, प्रमेह ओ उपदंशमें ग्रंथिरूप चलती है. ॥ ७९ ॥

प्रदरेरक्तपीतेचश्वेतेग्रंथिवदुच्छंति ॥ क्षत कासेतथाराजयक्ष्मणिग्रंथिरूपिणी ॥ ८० ॥

टीका—श्वेतप्रदर, रक्तपीत ओ क्षतकास, तथा क्षयीरोगमें ग्रंथिरूप चलती हैं ॥ ८० ॥

वांतस्यशल्याभिहतस्यजंतोर्वेगावरोधाकुलि तस्यचैव॥ गतिंविधत्तेधमनीगजेंद्रमराल कानांचकफोल्बणस्य ॥ ८१ ॥

टीका—जिस पुरुषने वांति किपी होई, अथवा जिसके तीर वगैरे लगाहोई अथवा जो मलादिक-वेगसें व्याकुल होई, अथवा जिसके कफ बहुत होई तिसकी नाडी हाथी औ हंसकी गतीसे चल-ती है ॥ ८१ ॥

अथान्यमतानुसारेणस्वस्थनाडीलक्षणम् ॥ अयिप्रियेश्रृणुष्वैववदाम्यहंमतांतरं ॥ नर स्यजन्मकालतोह्यशीतिवत्सरावधि ॥ शि शोर्हिजन्मकालतः पलावधिप्रकंपते ॥ धरा रसेषुवारकंनिरंतरंशिशुप्रिये ॥ ८२ ॥

टीका—हे प्रिये, अव मैं मतांतरसें स्वस्थनाडीका लक्षण कहता हौं. जन्मकालसें असी वर्षपर्यंत कहता हौं, जन्मकालसें एक पलपर्यंतमें नाडी ५६ छप्पन्न वार फरकती है ॥ ८२ ॥

पलादारभ्यवर्षांतंपलैकेनचनाडिका ॥ नेत्रेपुक्षश्चलतिमत्तकुंजरगामिनि ॥ ८३ ॥

टीका—जन्मकालसें पलपरमितकाल पीछे एक वर्ष पर्यंत एक पलमें वावन ५२ वेर चलती है ॥ ८३ ॥

अव्दादव्दद्वयंनाडीपलैकेनप्रवेपते ॥ वेदाब्धिवारंलोलाक्षिचलत्कुंडलशालिनि ॥८४॥

टीका—एकवर्ष पीछे दोवर्षपर्यंत एकपलमें नाडी चौवालिश ४४ वेर कंपती है ॥ ८४ ॥

वर्षद्वयात्त्रिवर्षांतंपलैकेनचतंतुकी ॥ खवेदकृत्वश्चलतिपीनोत्तुंगपयोधरे ॥ ८५ ॥

टीका—दोवर्षपीछे तीनिवर्षतक एकपलमें चालीश ४० वेर नाडी चलती है ॥ ८५ ॥

त्रिवर्षात्सप्तवर्षांतंषट्त्रिंशद्वारकंप्रिये ॥ कंपतेचपलैकेनजीवितज्ञाप्रियंवदे ॥ ८६ ॥

टीका—तीनिवर्षकी अवस्थापीछे सातवर्षकी आ-

युःपर्यंत नाडी एकपलमें छत्तिसवार ३६ फरकती है ८६

सप्तमान्मनुवर्षांतंवेदाग्निवारकंधरा ॥ तत श्चत्रिंशद्वर्षांतंद्वात्रिंशद्वारमेवहि ॥ ८७ ॥

टीका—सातवर्षपीछे चौदहवर्षतक नाडी एकपलमें चौतीस ३४ वार चलती है औ चौदवर्षपीछे तीसवर्षतक एक पलमें बत्तीस ३२ वार चलतीहै ८७

त्रिंशदब्दात्समारभ्यखशराब्दांतमेवच ॥खाग्निवारान्त्रिशालाक्षिजीवितज्ञाप्रकंपते॥८८॥

टीका—तीसवर्षसें पचासवर्षतक नाडी एकपलमें तीश ३० वार चलती है ॥ ८८ ॥

शतार्धवर्षादारभ्याशीतिवर्षांतमेवहि ॥ चतुर्विंशतिवारान्वैकंपतेधमनिःप्रिये ॥ ८९ ॥

टीका—पचास वर्षके पीछे अशीवर्षतक चोवीस २४ वार नाडी एकपलमें चलती है ॥ ८९ ॥

एवमुक्तप्रमाणाच्चभवेन्न्यूनाधिकंयदि ॥ न्यूनाधिकेक्रमात्स्यातांशीतोष्णेचघटस्तनि ॥

टीका—ऐसे उक्त प्रमाणसें जो न्यून चले तौ शीतत्व औ जो जादा चले तौ उष्णता है ॥ ९० ॥

अथनाडीगतिकारणम् ॥ हृदयंचेतना.

स्थानंतज्ज्ञातृसुखदुःखयोः ॥ तत्संकोच विकाशाभ्यांजीवितज्ञाप्रकंपते ॥ ९१ ॥

टीका—अथ नाडीके गतिका कारण कहते हे. चेतनाका स्थान हृदय है सोई सुखदुःखका ज्ञाता है. तिसके संकोच औ विकाशसें नाडी चलतीहै॥९१॥

वायुरंतर्बहिर्यातितत्संकोचविकाशतः ॥ तेननाड्यांवहत्यसृक्तेनतस्यागतिर्भवेत्॥९२॥

टीका—उसी संकोचविकाशतें वायु अंदर औ वाहर चलता है, उस चलनेसें नाडीमें रक्त वहता है. उसी प्रवाहकरिके नाडीकी गति जानी जाती है ॥ ९२ ॥

अथनाडीज्ञानेप्रयत्नोऽवश्यमेवकर्तव्यः ॥ स यथा ॥ नाडीज्ञानंविनाकश्चिद्वैद्यःसद्भिर्नपूज्यते ॥ ततश्चातिप्रयत्नेनतज्ज्ञानंगुरुतो लभेत् ॥ ९३ ॥

टीका—अथ नाडीज्ञानमें प्रयत्न तो अवश्य करना सो कहते हैं. नाडीज्ञानविना कोईभी वैद्य श्रेष्टजनोंमें पूज्य नहीं होता है. इसवास्ते वडा प्रयत्न करिकै नाडीज्ञान गुरूसें लेना ॥ ९३ ॥

क्वचिद्ग्रंथानुसंधानाद्देशकालविभागतः ॥
क्वचित्प्रकरणाच्चापिनाडीज्ञानंभवेदपि॥९४॥

टीका—कहीं ग्रंथके अनुसंधानसें, कहीं देशकालके विभागसें, कहीं प्रकरणसें नाडीज्ञान होता है॥९४॥

यथावीणागतातंत्रीसर्वान्रागान्प्रभाषते ॥ तथाहस्तगतानाडीसर्वान्रोगान्प्रकाशते ॥९५

टीका—जैसे वीणामें तांति सब रागोंके भाषण करती है, तेसे हाथमें नाडी सर्व रोगोंका प्रकाश करती है ॥ ९५ ॥

सद्गुरोरुपदेशाच्चदेवतानाप्रसादतः ॥ नाडीपरिचयःसम्यक्प्रायःपुण्येनजायते ॥ ९६ ॥

टीका—सद्गुरुके उपदेशसें औ देवताकी प्रसन्नतासें औ बहुधा पुण्यसें नाडीका पहिचानना आता है ॥९६॥

अथग्रंथकर्तुःपरंपरा ॥ वालाशर्माऽभवद्विप्रः सुकलःकुलवर्धनः ॥ कान्यकुब्जोहितद्वंशेभवद्गोवर्धनोभिषक् ॥ ९७ ॥ तापीरामःसुतस्तस्यतस्यासंस्तनुजास्त्रयः ॥ सीतारामश्चदत्तश्चमोतीरामइतिप्रिये ॥ ९८ ॥ सीतारामप्रियालक्ष्मीस्तत्साकंयादिवंगता ॥ दग्ध्वा

गौप्राकृतंदेहंतच्छरीरेणसंयुतं ॥ ९९ ॥ तस्याएवहिपुत्रोऽहंपतिदेववरेंगने ॥ निर्मितेयं मयाबालेनाडीज्ञानतरंगिणी ॥ १०० ॥

टीका—अथ ग्रंथकर्ताकी परंपरा. अगाडी एक बालाशर्मा कान्यकुब्ज ब्राह्मण सुकल होते भए. सो आपके कुलके वढानेवाले होते भए. तिनके वंशमें गोवर्धन सुकल भए ॥ ९७ ॥ तिनके तापीराम भए, तिनके तीनि पुत्र भए; सीताराम, दत्तप्रसाद, मोतीराम ॥ ९८ ॥ तिनमें सीतारामकी स्त्री लक्ष्मी जो आपकी प्राकृत देह आपके पतिके देहके साथ जलाइके औ उनके संगही स्वर्गकों गई ॥ ९९ ॥ हे पतिव्रतनमें श्रेष्ठ मैं उसी माताका पुत्र हौं यह-नाडीज्ञानतरंगिणी मैंनें रची है. ॥ १०० ॥

लोलाक्षी ॥ पंपप्यानामगंधर्वोविलग्रामेऽभवत्किल ॥ तस्याहमौरसीकन्यादासीत्वच्चरणाब्जयोः ॥ १०१ ॥ तवरूपगुणौदार्यैविश्रुतंगुणवारिधे ॥ जनैःख्याततंथादृष्टंकृतकृत्यास्मिसांप्रतम् ॥ १०२ ॥

इतिश्रीमत्सुकलसीतारामात्मजरघुनाथ प्रसादविरचितानाडीज्ञानतरंगिणीसमाप्ति- मगात्.

टीका—हे गुणवारिधे, पंपयानाम गंधर्व विलग्राम- नामनगरमें होता भया तिसकी मैं कन्या हौं. औ आपके चरणकमलकी दासी हौं ॥ १०१ ॥ लो- कोंकरिके विख्यात आपका रूप, गुण, उदारता, सु- निके आपके सन्निध मैं आई सो जैसा सुना तैसा- देखा. अब मैं कृतकृत्य भई ॥ १०२ ॥

॥ इतिश्रीरमणविहारीविरचिता नाडीज्ञान तरंगिणीटीका सरणीसंज्ञिका समाप्ता ॥

श्रीः

अनुपानतरंगिणीप्रारंभः ।

नमोगजास्येश्वरदेवदेवत्वत्तोऽस्यजन्मादय एवतुभ्यं ॥ भवंतितस्याअतईशरक्षधन्वंतरि येःकृपयाऽभवस्त्वम् ॥ १ ॥

टीका—अथ कवि प्रथम निर्विघ्नसमाप्तिके वास्ते इष्टदेवताकों नमस्कारपूर्वक मंगलाचरण करते हैं.

नमोऽइत्यादि करिके–हे गजास्येश्वरदेवदेव, तुमकों मेरा नमस्कार होई, तुमहीसें इस जगतके जन्म रक्षा प्रलय होते है और जो आप इस जगतपर कृपा करिके धन्वंतरि होते भए इसवास्ते आप रक्षा करौ॥१॥

अथकविप्रिया ॥ प्राणेशधातवःसप्ततथासप्तोपधातवः ॥ शोधनंमारणंतेषामनुपानंगुणागुणम् ॥ २ ॥

टीका–कविप्रिया पूछती है की, हे प्राणनाथ, सातधातु औ सात उपधातु हैं, तिनका सोधन, मारण, अनुपान, गुण औ अवगुण कहो ॥ २ ॥

तथान्येषांरसानांवाओषधीनांचमानद ॥ प्रीतयेममकंजाक्षवदवैद्यशिरोमणे ॥ ३ ॥

टीका–तैसेही और रसोंका और औषधिनकाभी मेरी प्रीतकेवास्ते कहो. आप कमलनयन हैं औवैद्योंमें श्रेष्ठ हैं ॥ ३ ॥

कविः॥ अयिनितंबिनिकंजविलोचनेघनकुचेवनितामदमोचने ॥ शृणुवदामिहितांहिनृणामहंगदवतामनुपानतरंगिणीं ॥ ४ ॥

टीका–कवि उत्तर देताहै हे नितंबिनि, हे कंज-

विलोचने, इत्यादि संबोधनयुक्त प्रिये, तुम सुनो. मैं अनुपान तरंगिणी कहता हों. केसी हे यह अनुपानतरंगिणी की रोगी मनुष्योंकी हितकारक है ॥४॥

अथसप्तधातवः ॥ स्वर्णंतारंप्रियेताम्रंनागंवंगंमनोहरे॥ स्वर्णांगिजसदंलोहंसप्तैतेधातवः स्मृताः ॥ ५ ॥

टीका–अब सप्त धातु गनातेहैं. हे प्रिये, सोना १,(रुपा २,) तांबा ३,(सीसा ४,(रांगा ५) जिसै कलईभी कहते हैं. जसद ६) लोह ७(ये धातु हैं ॥५॥

जसदादित्यजंविद्धिपित्तलंप्रियवल्लभे ॥ रविरंगभवंकांस्यंकश्यपान्वयरत्नजे ॥ ६ ॥

टीका–हे प्रियवल्लभे, जसद और ताम्रसे पितल होता है, औ हे कश्यपान्वयरत्नजे, ताम्र रांगेसे कांसा होता हे. ॥ ६ ॥

अथशुद्धिंप्रवक्ष्यामिधातुदोषापनुत्तये ॥ तैलेतक्रेचगोमूत्रेकांजिकेकुलत्थजे ॥७॥ सूक्ष्मपत्राणिसंताप्यनागवंगेसुगालिते ॥ जसदंगलितंचैवसप्तवारंविनिःक्षिपेत् ॥ ८ ॥ शुद्धिमायांतिसंशुद्धकुलोद्भूतवरांगने ॥ नागवंगे

तुवार्कस्यदुग्धेवारत्रयंक्षिपेत् ॥ ९ ॥ द्रवीभू तेविशुद्धेतेअमीषांमारणंशृणु ॥ मृताहेमा दिकाःसर्वेधातवोगदघातकाः ॥ १० ॥

टीका—अथ धातुनके दोष दूरिकरनेकेवास्ते शुद्धि कहते हैं. तेलमें १, तक्रमें २, तक्रको मठा औ छाछीभी कहते हैं, गोमूत्रमें ३, कुलथीकी काढेमें ४, औ कांजीमें ५ कांजीकी विधि भातका मांड अथवा कुलथीका जूसमें सोंठी, राई, जिरा, हिंग, लवण ये माफिकसा मिलाइके तीनि वा चारी दिन रखि छोडै. जब खट्टा होई तब काममे लेवै. इन पांचोंमे तपाई २ सात सात वखत बुझावै तौ शुद्ध होई. तहां सोना १, चांदी २, तांबा ३, लोह ४, पितल ५, कांसा ६, इनके बारिक पत्र करिके तप्त करि करिके बुझावै. औ रांगा सीसा जसद गलाइके बुझाई लेई, अथवा रांगे सीसेको आंकके दूधमें तीनि वखत बुझायलेनेसें शुद्ध होते हैं. अथ इनका मारण कहते है. क्यौं की, मरे भये धातु रोगके मारनेवाले होते है ॥ १० ॥

तत्रादौस्वर्णविधिः ॥ तत्रापिशुद्धस्वर्णपरी

क्षा ॥ वन्हितप्तंहियच्छीतेरक्तत्वंभजतेचतत् शुद्धंश्वेतत्वमपियद्भजतेऽशुद्धमीरितं ॥११ ॥

टीका—तहां प्रथम धातुनमें सोनेका मारना कहते हैं, तहांभी प्रथम परीक्षा कहते हैं, जो सोना अग्निमें तपाइके ठंढा किए पीछे लालरंग रहै सो श्रेष्ठ, श्वेत नहीं ॥ ११ ॥

अथमारणं ॥ शुद्धसूतसमंखल्वेस्वर्णंगोलं विधायच ॥ द्वयोस्तुल्यंबलिंशुद्धंदत्वाधश्चोर्ध्वमेवहि ॥ १२ ॥ शरावसंपुटेदत्वापुटंत्रिंशद्वनोपलैः ॥ चतुर्दशपुटैरेवंनिरुत्थंभस्मजायते ॥ १३ ॥

टीका—शुद्ध पारा औ सोनेका चूरन खल करिके गोला बनावै फिरि दोनोंकी तुल्य शुद्ध गंधक नीचे ऊपर रखिके शरावसंपुटमें तीस जंगली कंडोंकी आंच देई ऐसे चौदह पुटमें निरुत्थ भस्म होता है. निरुत्थ उसको कहते हैं की, जो मधुघृतटंकणयुक्त आंच देनेसें न जियै ॥ १३ ॥

अथान्यप्रकारः ॥ गालितेहाटकेनागंषोडशांशंविनिःक्षिपेत् ॥ शीतेतस्मिन्सुसंमर्द्यनिंबु

॥ श्री ॥

नाडीज्ञानतरंगिणी

औ

अनुपानतरंगिणी.

यहपुस्तक

प्रसिद्ध कर्त्ता

हरिप्रसादभगीरथ गौडब्राह्मण.

मुंबई

निर्णयसागरछापखाना.

संवत् १९४६

७ का आक्ट २५ प्रमाणे रजिस्टर किया है

लेप लगावै और शरावसंपुटमें पुट देई तौ एकहीं गजपुटमें शुद्ध भस्म होई ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथहेमभस्मसामान्यगुणाः ॥ तपनीयंस्त्र तंकांतिंकंदर्पंतनुतेतथा ॥ वातंपित्तंप्रमेहंच कासंश्वासंक्षतंक्षयं ॥ १९ ॥ ग्रहणीमतिसारं चज्वरंकुष्ठंविषंहरेत् ॥ वयसःस्थापनंस्वर्यं बल्यंवृष्यंरुचिप्रदं ॥ २० ॥

टीका–अथ सोनेकी भस्मके सामान्य गुण कहते हैं, मरा सोना कांति औ कामदेवकी वृद्धि करता है, औ वात, पित्त, कफ, प्रमेह, श्वास, घाव, क्षयरोग, संग्रहणी, अतिसार, ज्वर, कुष्ठ, विष इन रोगोंका नाश करता है ओ अवस्थाका स्थापन करनेवाला है. स्वर सुंदर करै है, बल बढाता है, स्त्रीगमनकी इच्छा जादा बढाता है ओर अन्नपर रुची बढानेवाला है ॥ १९ ॥ २० ॥

अथापक्वदोषाः ॥ स्वर्णमपक्वंहरतेबलंचवीर्यंकरोतिरोगचयम् ॥ सुखस्यनाशंमरणंतस्माच्छुद्धंचसेवेत ॥ २१ ॥

टीका–अत्र अधपके सोनेके अवगुण कहते हे

अधपका सोना वल ओ वीर्यका नाश करता है, और सुखकाभी नाश औ मरणभी करता है. इसवास्ते शुद्ध भसमका सेवन करना ॥ २१ ॥

अथतद्दोषशांतिः ॥ अभयासितयाभुक्तात्रिदिनंत्रिभिरंगने ॥ हेमदोषहरीख्यातासत्यंप्राणकुमारिके ॥ २२ ॥

टीका—अव अपक्वदोषशांति कहते हैं. हरडे और शक्कर तीन दिन खानेसें स्वर्णविकार जाता है. हे प्राणकुमारि यह सत्य है ॥ २२ ॥

अथानुपानं ॥ वाजीकरंभृंगरसेनतूर्णंदुग्धेनशक्तिंप्रददातिनित्यं ॥ पुनर्नवायुग्नयनामयघ्नंजराहरंचाज्ययुतंनराणां ॥ २३ ॥

टीका—अथ अनुपान कहते है. सोनेकी भस्म भांगरेके रसमें लेनेसें वाजीकरण है, वाजीकरण उसकों कहते हैं. जिसके लेनेसें घोडासारिखा स्त्रीके संग रमण करे. दूध संग लेवें तो शक्ति बढावें, पुनर्नवासंग नेत्ररोग हरता है. घृतसंग वृद्धपनेको मिटायके ज्वान करता है ॥ २३ ॥

बुद्धिदंतुवचायुक्तंदाहघ्नंकटुकायुतं ॥
कांतिदंकुंकुमेनेदंकांतिजिन्नवनीरजे ॥ २४ ॥

टीका—वचके साथ वुद्धि देता है. कुटकीके सा-
थ दाहशांति करता हे. कुटकीकों कडूभी कहते है.
केसरसंग कांति वढाता है ॥ २४ ॥

सद्योदुग्धयुतेहंतियक्ष्माणमतिदारुणं ॥ ल
वंगशुंठिमरिचैरुन्मादंचत्रिदोषकं ॥ २५ ॥

टीका—तुरत दुहे दूधसाथ क्षयरोग दूरि करता
है. लवंग सोंठी काली मरीचके साथ उन्मादरोग
हरता है. औ त्रिदोषकोंभी हरता है ॥ २५ ॥

मध्वामलकसंयुक्तंग्रहणींप्रवलांहरेत् ॥
मधुनावरखंहेमंविषदोषनिवारणं ॥ २६ ॥

टीका—मधु औ आमलाके साथ संग्रहणीकों, सो-
नेके वरख औ मधुयुक्त विष हरता है ॥ २६ ॥

शंखपुष्पीरसैरायुःप्रदंचंदनचर्चिते ॥ विदा
रीकंदसंयुक्तंपुत्रदंपुत्रवत्सले ॥ २७ ॥

टीका—संखाहुलीके रससंग आयुष्य वढाता
है. विदारिकंदसंग पुत्र देनेवाला है ॥ २७ ॥
इति स्वर्णानुपानानि.

अथरौप्यविधिः ॥ तत्रपरीक्षा ॥ शृणुहिरू
पमतिप्रमदोत्तमे वदभिषग्वररूपगुणाकर ॥

त्रिविधमाहुरयेरजतंप्रियेखनिजवेधजवंगज मार्यकाः ॥ २८ ॥

टीका–अथ रौप्यविधि, तहां प्रथमपरीक्षा, रूपा तीनि प्रकारका है. एक खानिसें पैदा, दूसरा वेधसें, तीसरा वंगसें पैदा होताहै ॥ २८ ॥

उत्तमंवंगजंवेधजंकीर्तितंयन्मृदुत्वांहिशौ क्ल्यंभजेदंगने ॥ शुभ्रवर्णंमृदुत्वेनहीनंय तोऽग्राह्यमित्याहुरार्याःखनिस्थंततः॥२९॥

टीका–तिनमें वेधसें औ वंगसेंभी उत्पन्न रौप्य जो कोमल औ श्वेतवर्ण है सो श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥

अथमारणं ॥ तारपत्राणिसूक्ष्माणिकृत्वासं शोध्यपूर्ववत् ॥ तत्समौसूतगंधौचकांजिके नविलेपयेत् ॥ ३० ॥

टीका–अथ मारणविधि. चांदीके कंटकवेधी सूक्ष्म-पत्रकरिके पूर्ववत् शोधन करै. उनपत्रोंकी समान पारा, गधकको कांजीमें घोटिके लेप करै ॥ ३० ॥

स्थाल्यांपचेद्दिनंरुध्वाभस्मस्यात्तीक्ष्णवह्निना ॥ वालकैणाक्षिबिंबोष्ठिस्वर्णकुंभकुचेप्रिये ३१

टीका–फिर उनको एक हांडीमें मुद्रित करिके एक दिन तीक्ष्ण अग्निकी आंच देइ तौ भस्म होई ३१

अथान्यःप्रकारः ॥ तारपत्रचतुर्थांशं शुद्धतालंविमर्दयेत् ॥ जंबीरजैर्द्रवैस्तेनतत्पत्राणिविलेपयेत् ॥ ३२ ॥

टीका—अथ दूसरा प्रकार. रूपेके पत्रसें चतुर्थ भाग शुद्ध हरिताल निंबूके रसमें घोटिके लेपन करे ॥३२॥

संपुटेपाचयेद्बुध्वात्रिभिरेवपुटैर्भवेत् ॥ त्रिंशद्वनोपलैर्भूतिःशीलरूपगुणान्विते ॥ ३३ ॥

टीका—फिरि शरावसपुटकरिके तीस जंगली कंडाकी आंच देई ऐसी तीनि पूटमें भस्म होता है. ३३

अथान्यः ॥ रजतेनसमंसूतंपेषयित्वाप्रमेलयेत् ॥ तत्समंतालकंगंधंनिंबुनीरैर्विमर्दयेत्॥

टीका—अथ तिसरा प्रकार. प्रथम रूपा औ पारा दोनौ समभाग लेकै खल करे. फिरि इनि दोनौके बरोबर हरिताल ओ गंधक मिलाइके निंबूके रसमें घोटै ॥ ३४ ॥

संपुटेरोधयित्वातुपाच्यंत्रिंशद्वनोपलैः ॥ एवं रामपुटैस्तारंनिरुत्थंभसितंभवेत् ॥ ३५ ॥

टीका—फिरि शरावसंपुटमें तीस कंडाकी पुट देई ऐसे तीनि पुटमें भस्म होता हे ॥ ३५ ॥

अथान्यः ॥ शुकप्रियापीतकपत्रकल्केचतुर्गु णेतारकमेवरुध्वा ॥ शरावकेसंपुटकेपुटेच्चत्रि भिःपुटैरेववराहसंज्ञैः ॥ ३६ ॥

टीका—अथ चौथा प्रकार, दाडीम और बबूरके पत्र तोले चारिकी लुगदीमें एक तोला रूपा रखिके हाथ भरि गहिरे चौडे खाडेमें शरावसंपुटसें पुट देई तौ तीनि पुटसें भस्म होता है ॥ ३६ ॥

अथगुणाः ॥ तारंकरोत्यामयसिंधुपारंपित्ता पहंवातकफौनिहंति ॥ गुल्मंप्रमेहंश्वसनंच कासंप्लीहक्षयक्षीणयकृद्विषार्तिम् ॥ ३७ ॥

टीका—अथ सामान्य गुण. रौप्यभस्म रोग समुद्रके पार उतारता है. पित्त, कफ, वात, गुल्म, प्रमेह, श्वास, कास, प्लीहा, क्षय, क्षीण, यकृत, विष इनरोगोंका नाश करता है ॥ ३७ ॥

वलीपलितनाशनंक्षुधाकांतिपुष्टिदं ॥ पांडु शोफहंददातिचायुषंनृणामिदं ॥ ३८ ॥

टीका—औ वलीपलितनाशकभी है, क्षुधा औ तेजकों बढाता है. पांडु औ शोथकों नाश करता है. आयुष्यदायक है ॥ ३८ ॥

अथापक्वदोषाः ॥ देहेहितापंप्रकरोत्यपक्वंता रंविबंधंकिलशुक्रनाशं ॥ अपाटवंचैवबलप्र हानिंमहागदान्पालयतीतिसत्यं ॥ ३९ ॥

टीका—अथ अपक्वदोष. अपक्व रौप्य भस्म देहमें ताप, विबंध औ धातुका नाश, चातुर्य औ बलकी हानि करता है. औ बडे रोगोंकी रक्षा करता है ॥३९॥

अथतच्छांतिः ॥ शर्करांमधुसंयुक्तांसेवयेद्यो दिनत्रयम् ॥ अपक्वरौप्यदोषेणविमुक्तःसुख मश्नुते ॥ ४० ॥

टीका—अथ रौप्यदोपशांति. मिश्री औ मधु ती नि दिन खानेसें रौप्यविकार मिटै ॥ ४० ॥

अथानुपानं ॥ दाहेशर्करयायुक्तंवातेपित्तेवरा युतं ॥ त्रिसुगंधयुतंमेहेगुल्मेक्षारसमन्वितं ॥

टीका—अनुपान दाहमें शकरयुक्त, वात औ पि त्तमें त्रिफलायुक्त, प्रमेहमें तज पत्र इलायचीके चूर्णयुक्त, गुल्ममें क्षारयुक्त देना ॥ ४१ ॥

कासेकफेटरूपस्यरसेत्रिकटुकान्विते ॥ भा र्ङ्गीविश्वयुतंश्वासेक्षयाजित्साशिलाजतु ॥४२॥

टीका—कास औ कफमें त्रिकटु चूर्ण औ अरू

सेके रसयुक्त, श्वासमें भारंगी सोंठीयुक्त, औ क्षयमें शिलाजितयुक्त देना ॥ ४२ ॥

क्षीणेमांसरसेदेयंदुग्धेवाललनोत्तमे ॥ यकृत्प्लीहहरंकांतेवरापिप्पलिसंयुतं ॥ ४३ ॥

टीका–क्षीणतामें मांसका जूस अथवा दुग्धसंयुक्त, यकृत् प्लीहामें त्रिफला औ पीपरीसाथ ॥ ४३ ॥

पुनर्नवायुतंशोफेपांडौमंडूरसंयुतं ॥ वलीपलितहंकांतिक्षुत्करंघृतसंयुतम् ॥ ४४ ॥

टीका–शोथमें पुनर्नवासाथ, पांडूमें मंडूरयुक्त, वलीपलितमें घृतयुक्त, क्षुधा औ कांतिकोंभी बढाता है ॥ ४४ ॥ इति रौप्यविधिः.

अथताम्रविधिः ॥ तत्रमारणयोग्यं ताम्रं ॥द्विविधंताम्रंवैद्यैर्गदितंम्लेच्छं तथैवनैपालम् ॥ छालनतोयच्छया मंतन्म्लेच्छंरक्तमेवनैपालं ॥ ४५ ॥

टीका–अथ रौप्यविधिकथनानंतर ताम्रविधिः कहते है. ताम्रकों वैद्योंनें दोनप्रकारका कहा है. एक म्लेंच्छ, दूसरा नैपाल, जो मंजन करनेसें श्यामता पकडता है सो म्लेच्छ, औ जो रक्तवर्ण रहता है सो नैपाल ॥ ४५ ॥

त्याज्यंवालेम्लेच्छंग्राह्यंनैपालकंहि शुद्धतरम् ॥ शृणुतद्दोपान्शुद्धेशो धनमपिसुप्रयत्नेन ॥ ४६ ॥

टीका–तिनमें शुद्ध नैपाल ग्रहण करना. औ म्लेच्छकों त्यागना. हे शुद्धे, उस ताम्रके दोप और शुद्धि सुनो ॥ ४६ ॥

वांतिभ्रांतिविरेकत्वंक्लमस्तापस्तथैवच ॥ वीर्यहंतृत्वकंडुत्वेशूलंदोपाष्टकंरवौ ॥ ४७ ॥

टीका–वांति १, भ्रांति २, रेचनता ३, ग्लानि ४, ताप ५, वीर्यनाशकता ६, कंडू ७, शूल ८, ये आठ दोप ताम्रमें सदा हैं. अब इन दोपोंको मिटानेके वास्ते शोधन कहता हों ॥ ४७ ॥

वक्ष्यमाणेपुद्रव्येपुतप्तंतप्तंविनिःक्षिपेत् ॥ सप्तकृत्वःसुशुद्धःस्याद्रविरेवनसंशयः ॥४८॥

टीका–अगाडीके श्लोकनमें लिखैंगे जो द्रव्य तिनमे तपाइ तपाइके वुझावै, सात सात वेर तौ शुद्ध होई ॥ ४८ ॥

तैलंतक्रंचगोमूत्रंवांतिंहन्याद्विचक्षणे ॥ कां जिकंचकुलत्थांभोभ्रांतिंहन्यात्सुदारुणां ४९

टीका—तेल, मठा, गोमूत्र, वांति दोष दूरि करता है. कांजी औ कुलथीका काढा भ्रांति दूरि करता है ॥ ४९ ॥

वज्रीदुग्धंचगोदुग्धंक्लमंहंतिविशेषतः ॥ चिंचांभोनिंबनीरंचतापंपापंयथाहरिः॥५०॥

टीका—सेहुडथूहरका दूध और गोदुग्ध क्लम जो ग्लानि तिसकों मिटाता है. अमिलीका पानी औ निंबूका पानी तापकों हरता है ॥ ५० ॥

शीर्षिनोभस्तथाकन्यारसःशूलंनि वारयेत् ॥ कंडुतांगोघृतंदुग्धंहंति वृद्धायथाबलम् ॥ ५१ ॥

टीका—नारियलका रस तथा घी कुमारीकास्वरस शूल निवारण करता है. कंडूताकों गोघृतयुक्त दूध हरता है ॥ ५१ ॥

हन्याद्वैवीर्यहंतत्वंद्राक्षाक्षौद्रंनितंविनि ॥ रेचतांसौरणंनीरंहंतिमस्तुतथैवहि ॥ ५२ ॥

टीका—वीर्यनाशकपणा द्राक्षा ओर मधु दूरि करै है. रेचनता सूरणका पानी औ दहीका पानी हरता है ॥ ५२ ॥

अथमारणं ॥ रविपत्राणितदर्धंसूतं खल्वेविमर्दयेद्गाढं ॥ निंबुजनीरैस्ता वद्यावच्छुभ्राणितानिस्युः ॥ ५३ ॥

टीका–अब मारण कहते हैं. ताम्र पत्र बहुत पतले सुईसे छिदनेमाफिक करिके पत्रनसें आधे पारेके साथ मर्दन करै. जहांतक सब पत्र श्वेत होई ॥ ५३ ॥

तद्विगुणंशुचिगंधंधान्याम्लेनाविमर्द्य संलिंपेत् ॥ पत्राणिहिदृढभांडेक्षिप्त्वा संपूरयेत्सिकतयाभूत्या ॥ ५४ ॥

टीका–तिनसे दूना शुद्ध गंधक, धान्याम्लमें पीसिके लेपन करै. धान्याम्ल उसकों कहते है जो यव निस्तुप करिके चारि पांच दिन पानीमें भिजोये राखै. जब खट्टा होइ तब कार्यमें लेइ. फिरि ताम्र पत्र दृढ हांडीमें राखिके क्रमसें उपर वालू, रेत, औ राख भरे ॥ ५४ ॥

रुध्वाशरावपुटकेपश्चाद्भांडेविनिःक्षिपे ह्लने ॥ मंदाग्निनाब्धियामैर्म्रियतेशु ल्वंनितंवविस्तारे ॥ ५५ ॥

टीका–पत्र सब पहिले दो सरावमें राखिके हांडीमें

धरै फिरि रेती भस्म भरिके मुद्रा करिके चूल्हेपर मंदाग्निसें चारि पहर आंच देइ तौ ताम्र मरै ॥ ५५ ॥

पश्चात्तदर्थगंधंतद्भस्मनाविमर्दयेत्खल्वे॥ सूरणतोयैर्देयंपुटंगजाख्यंततश्चवैपाच्यम् ५६

टीका–फिरि उस ताम्रभस्मसें आधागंधक मिलाइ सूरणरसमें खरल करिके गजपुट देई ॥ ५६ ॥

चतुर्थांशेनगंधेनपंचगव्यैःपृथक्पृथक् ॥ पंचकृत्वःपुटेत्ताम्रंमधुनासितयापुनः ॥ ५७ ॥

टीका–फिरि भस्मसें चौथा भाग गंधक मिलाइ न्यारा न्यारा गोदुग्ध, घृत, दहीं, मठा, मूत्रमे खरल करि करि न्यारी न्यारी पुटै देई. फिरि मधु याने सहतके साथ उसी रीतिसें फिर शक्करके साथ वैसेही पुट देई ॥ ५७ ॥

सेवितंचेद्यदावांतिंविधत्तेभावयेत्पुटेत् ॥ गोक्षीरेणततःशुद्धंशिखिग्रीवनिभंभवेत् ॥५८॥

टीका–फिर जो खानेसें वांति करावै तौ गोदुग्धकी पूट दैके आंच दे जब शुद्ध मोरकी गरदनीका रंग होई तौ श्रेष्ठ है ॥ ५८ ॥

अथान्यः ॥ ताम्रपत्रसमंसूतंगंधम

म्लेनमर्दयेत् ॥ तेनसंलिप्यपत्राणि
शरावपुटकेदहेत् ॥ ५९ ॥

टीका—अथ दूसरा प्रकार. ताम्रकी बरोवर गंधक पारा खटाईसें मर्दन करिके पत्रोंके लेपन करिके गजपुट देई ॥ ५९ ॥

गजाव्हैस्त्रिपुटैरेवंपंचताजायतेध्रुवम् ॥ चल
त्कुंडलशोभाढ्येपीनोत्तुंगपयोधरे ॥ ६० ॥

टीका—ऐसे तीनि पुटसें भस्म होता है ॥ ६० ॥

अथान्यः ॥ तुर्यांशेनशिवेनैवताम्रप
त्राणिलेपयेत् ॥ अम्लपिष्टबलिंदद्या
दूर्ध्वाधोद्विगुणंततः ॥ ६१ ॥

टीका—अथ तीसरा प्रकार. ताम्रपत्रसें चौथे भाग पारेसें ताम्रपत्र लेपन करिके तिनसें दूना गंधक खटाइमें पीसीके नीचे उपर रखिके ॥ ६१ ॥

चांगेरीकल्कगर्भेतद्यामंस्थाल्यांविपाचयेत्॥
पंचत्वंजायतेशुल्वंसर्वरोगहरंभवेत् ॥ ६२ ॥

टीका—लोणीकी लुगदीमें रखिके हांडीमें एक पहरकी तेज आंच देई तौ भस्म होई इति ॥ ६२ ॥

अथसामान्यभस्मगुणाः ॥

तंप्लीहानमुदरंकृमीन् ॥ कुष्ठंशूलंज्वरंतंद्रांव
मिंशोफंचपांडुतां ॥ ६३ ॥

टीका–अथ सामान्य भस्मगुण. कास, श्वास, कफ, प्लीहा, वात, उदररोग, कृमी, कुष्ठ, शूल, ज्वर, आलस्य, छर्दि, शोफ, पांडुरोग ॥ ६३ ॥

मोहमर्शोतिसारंचक्षयंगुल्मांशिरोव्यथाम् ॥
हिक्कांमेहंभ्रमंहंतिरविर्वह्निविवोधयेत्॥६४॥

टीका–मूर्च्छा, अर्शरोग, अतिसार, क्षय, गुल्म, शिर, दर्द, हिचकी, प्रमेह, भ्रम. इतने रोगोंको हरता है औ भूख बढाता है ॥ ६४ ॥

अथापक्वदोषाः ॥ ताम्रमपक्वंवमनंविरेक
तापादिकंभ्रमंमूर्च्छां॥ मेहंवलस्यनाशंकरोति
शुक्रस्यचायुषश्चापि ॥ ६५ ॥

टीका–अथ अपक्वदोष. अधपक्का ताम्रभस्म. वमन, विरेचन, ताप, भ्रम, मूर्च्छा, प्रमेह, वलका नाश, वीर्य औ आयुष्यकामी नाश करता है॥ ६५ ॥

अथदोषशांतिः ॥ मुनिव्रीहिसितापानंबाधा
न्याकंसितांचकैः ॥ ताम्रदोषमशेषंवैपिव
न्ह्न्यादिनत्रयात्॥६६॥ कैःजलैरित्यर्थः ॥

टीका–अथ ताम्रदोषशांति कहते हैं. तिन्नी अथवा धना, शक्कर जलसें तिनि दिन पिये तौ ताम्रदोपसें छूटै ॥ ६६ ॥

अथानुपानं ॥ पिप्पलीमधुसंयुक्तंसर्वरोगेषु योजयेत् ॥ स्वबुद्ध्यापिप्रयुंजीतरोगनाशन वस्तुभिः ॥ ६७ ॥

टीका–अथ अनुपान. पीपरी सहत संग सब रोगमे देइ अथवा आपकी बुद्धिमाफिक रोगनाशक वस्तुसाथ देइ तौ रोग जाई ॥ ६७ ॥

अथनागविधिः ॥ पूर्वतच्छोधनं ॥ कुमारी स्वरसेवापिवराक्काथेसुगालयेत् ॥ तप्तंतप्तं सप्तकृत्वोनागःशुद्धतरोभवेत् ॥ ६८ ॥

टीका–अथनागविधि कहते हैं. तत्र प्रथम शोधन कहते हैं. घीकुमारिपाठाके रसमें वा त्रिफलाके कषायमें सात वेर गलाइके बुझावे तौ नाग शुद्ध होई ॥ ६८ ॥

तालकस्वरसेवारान्चत्वारिंशद्विगालयेत् ॥ तप्तंतप्तंविशुध्येतनागोनागेंद्रणाग्निभिः ॥६९॥

टीका–अथवा ताडीमें चालीश वार बुझावे तौ शुद्ध होई ॥ ६९ ॥

अथमारणं ॥ खर्परेनिहितंनागंरवि
मूलेनघट्टयेत् ॥ यामत्रिकैर्भवेद्भस्मह
रिद्वर्णमदूषणम् ॥ ७० ॥

टीका—अथ मारण, माटीके कूंडेमें सीसा रखिके चुल्हेपर आंच देइ औ आंकडेकी जडसें चलताजाय तौ तीनि पहरमें हरारंग भस्म होता है ॥ ७० ॥

अथान्यः ॥ मर्दितोवृषतोयेननागः
कुंभपुटैस्त्रिभिः ॥ सशिलोम्रियतेस
त्यंसर्वरोगहरोभवेत् ॥ ७१ ॥

टीका—प्रकारदूसरा—सीसाकी बरोबर मैनशिल मिलाइ अरुसाके रसमें मर्दन करि एक घडेमें बहुतसे छिद्र करि कोइला आधा घडा भरी बीचमें संपुटमें सीसा रखिके उपर फिरि कोइला भरिके अग्नि देवै, ऐसे तिनिवारमें भस्म होता है ॥ ७१ ॥

अन्योपि ॥ भूलताऽगस्तिपत्राणिपिष्ट्वा
पात्रंविलेपयेत् ॥ वासापामार्गजंक्षारंत
त्रनागेद्रुतेक्षिपेत् ॥ ७२ ॥ गुरूक्तित
श्चतुर्थांशंवासादर्व्याविघट्टयेत् ॥ यामैके
नभवेद्भस्मततोवासारसान्वितं ॥ मर्दये
त्संपुटेस्स्याद्वैनागसिंदूरकंशुभं ॥ ७३ ॥

टीका—तीसरा प्रकार. कचुवा औ अगस्तवृक्षके पत्र पीसिके पात्रमें लेपन करि ऊपर सीसा धरि चूल्हेपर चढावे, जब सीसा गले तब अरूसा औ अपामार्गका क्षार सीसासें चौथा भाग डारता जाई औ अरूसाकी मोटी लकडीसें चलाता जाइ तौ एक पहरमें भस्म होइ फिरि अरूसाके रसमें खरल करि गजपुट देइ तौ लाल भस्म होई ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

अथान्यः ॥ शुद्धंनागंसमादायद्विगुणाचमनःशिला॥ पलाशदारुणासम्यग्घर्षयेत्खर्परेशुभे ॥ ७४ ॥

टीका—चौथा प्रकार. शुद्ध शिसासें दूना मैनशील खरपेरपरमें चढाइ, पलासकी लकडीसे चलावे औ तीव्र आंच देइ तौ भस्म होई ॥ ७४ ॥

तीक्ष्णाग्निनाम्रतंनागंतुर्यांशांचमनःशिलां ॥ तांवूलस्वरसैर्मर्द्यशरावेपुटकेपुटेत् ॥ द्वात्रिंशतिपुटैरेवंनागभूतिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ७५ ॥

टीका—फिरि चौथे भागकी मैनशिल मिलाइके नागवेलीके पानके रसमें घोटिके पुट देइ ऐसे ३२ बत्तीस पुटमें भस्म होता है ॥ ७५ ॥

भागैकमहिफेनस्यनागभागचतुष्टयं ॥ घर्ष

णान्निंवकाष्ठेनमंदवन्हिप्रदानतः ॥ नागभू
तिर्भवेच्छ्वेतावीर्यदार्ढ्यकरीमता ॥ ७६ ॥

टीका–पांचमा प्रकार. सीसासें चौथा भाग अफीम खपरेमें दोनोंको आंच देइ औ निंवूकी लकडीसें चलाता जाइ तो श्वेतभस्म होइ. खानेसें वीर्य दृढ करै ॥ ७६ ॥

अथनागेश्वरविधिः ॥ पलद्वयंमृतंनागं
हिंगुलंचपलद्वयं ॥ शिलाकर्षमिताग्रा
ह्यासर्वतुल्यंहिगंधकं ॥ ७७ ॥ निंबुनीरे
णसंमर्द्यततोगजपुटेपुटेत् ॥ तदानागे
श्वरोऽयंस्यान्नगराजसुतोपमे ॥ ७८ ॥

टीका–अथ नागेश्वरविधि. सीसाभस्म तोला आठ, हिंगुलू तोला आठ, मनसील तोला एक, गंधक तोला सत्तरह निंबूके रसमें खरल करि गजपुट देइ तौ नागेश्वर होता है ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

अथसामान्यगुणाः ॥ वातरोगंक्षयंगुल्मंपां
डुशूलभ्रमान्कफम् ॥ वह्निमांद्यंशुक्रदोषंका
सार्शोग्रहणीकृमीन् ॥७९॥ अपमृत्युंनिहंत्या
शुशतनागसमंबलम् ॥ ददातिचायुपोवृद्धिं
चेत्कृतंविधिनाप्रिये ॥ ८० ॥

टीका—अथ नागविधिकथनानंतर वंगकी विधि कहते हैं. प्रथमं तत्र वंगपरीक्षा. श्वेत औ कठिन देखिके लेइ. अन्यमें ओर धातु मिलि है सो त्याज्य है॥८७॥

अथमारणं ॥ वंगतुल्यंवराचूर्णंनिंबकाष्ठेनघर्षयेत् ॥ खर्परेभस्मतांयातंसर्वकार्येषुयोजयेत् ॥ ८८ ॥

टीका—अथ मारणं. रंगेकी बरोबर त्रिफलाचूर्ण खपरेमें चढाई निंबके सोठेसें घोटै. जब भस्म हो तब सर्व कार्यमे युक्त करै ॥ ८८ ॥

अथान्यः ॥ वंगपादांशतोग्राह्यमपामार्गभवंरजः ॥ स्थूलाग्रयालोहदर्व्याखर्परेतंविघट्टयेत् ॥ ८९ ॥ शनैर्भस्मत्वमायातितावन्मर्द्यंपुनःशनैः ॥ एकत्रचततःकृत्वायावदंगारवर्णतां ॥ ९० ॥ भजेत्पश्चाच्छरावेणनूतनेनविरोधयेत् ॥ ततस्तीव्राग्निसंपक्वंवंगंभूतित्वमाप्नुयात् ॥ ९१ ॥

टीका—दूसरी विधि. वंगका चौथा भाग अपामार्ग जिसको लटजीरा औ चिरचिरा औ अद्धाझारो औ अधेडामी कहते हैं, सो खपरेमें अग्निप-

चढाई वडी लोहकी करछीसें घोटता जाई. धीरे धीरे घोटनेसें जवतक भस्म न होई तवतक घोटना. फिरि एक जगह करिके खूव आंच देई. जव लाल अग्निसरीखा होई तव शीतल करि शरावसंपुटमें गजपुट देई तौ श्वेतभस्म होई॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥

अथवंगेश्वरविधिः ॥ भागचतुष्कंवंगंमृतंहि शंखंरसंविभागेकम् ॥ पृथग्द्विकंहरितालंकां जिकपिष्टंशरावसंपुटके ॥ ९२ ॥ पुटेद्गजा ख्येयंत्रेघनकुचयुग्मेनिशेशमुखिवाले ॥ वंगे श्वरोऽयमवलेवलदोनृणांहिरसिकानां ॥९३॥

टीका—अथ वंगेश्वरविधिः. वंगभस्म चारि तोला, शंखभस्म एक तोला, पाराभस्म एक तोला, हरिताल दो तोला, कांजीमें पीसिके शरावसंपुटमें गजपुट देइ तौ वंगेश्वर होइ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

अथसामान्यगुणाः ॥ श्वसनमेहसमीरण नाशनःप्रदरशूलयकृत्कफपांडुहृत् ॥ भ्र मवमिक्षयजिद्वलवीर्यकृत्सकलरोगहरःशु चिवंगकः ॥ ९४ ॥

टीका—अथ साधारणगुण. श्वास, प्रमेह, प्रदर,

शूल, यकृत्, कफ, पांडु, श्रम, उलटी, क्षय, सर्व रोगनाशक औ बल वीर्यका बढानेवाला है ॥ १४ ॥

अथवंगेश्वरगुणाः ॥ श्रमतिमिरकफप्रमेह कासान्श्वसनपवनपित्तरक्तदोषान् ॥ ग्रहणिगदसशूलकुष्ठपांडुज्वरगदमपिहंतिवंगराजः ॥ १५ ॥

टीका–अथ वंगेश्वरके गुण. श्रम, तिमिर, कफ, प्रमेह, कास, श्वास, वात, पित्त, रक्तदोष, संग्रहणी, शूल, कुष्ठ, पांडु, ज्वर इन रोगोंको हरे ॥ १५ ॥

अथापक्कदोषाः ॥ यद्यपक्कंभवेद्वंगंगुल्मकुष्ठ प्रमेहकृत् ॥ वातशोणितमंदाग्निपांडुदौर्बल्यरुक्प्रदम् ॥ १६ ॥

टीका–अथ अपक्क दोष. अधपक्का वंग गुल्म, कुष्ठ, प्रमेह, वात, रक्त, मंदाग्नि, पांडु, निर्बलता इतने रोग करता है ॥ १६ ॥

अथतच्छांतिः ॥ मेषशृंगींसितायुक्तां यःसेवतिदिनत्रयम् ॥ वंगदोषविमुक्तोऽसौसुखंजीवतिमानवः ॥ १७ ॥

टीका–अथ वंगदोषकी शांति. जो मनुष्य मेढा-

शिंगी शक्करसंग तीनि दिन सेवन करै तौ वंगविकार शांति होई ॥ ९७ ॥

अथानुपानं ॥ कर्पूरेणयुतंवंगंहरत्यास्य विगंधतां ॥ पौष्टिकेक्षीरसंयुक्तंजातीफलयुतंतुवा ॥ ९८ ॥

टीका—अथ अनुपान. कपूरसाथ वंग सेवन करनेसें मुखदुर्गंध हरता है. दूधसंग वा जायफलसंग पुष्ट करता है ॥ ९८ ॥

प्रमेहेतुलसीपत्रैःखादेद्वंगंप्रसन्नधीः ॥ गुल्मे टंकणसंयुक्तंपांडुरोगेघृतेनच ॥ ९९ ॥

टीका—प्रमेहको तुलसीपत्रसें, गुल्ममें टंकणक्षारसंग, औ पांडुरोगमें घृतसंग ॥ ९९ ॥

ऊर्ध्वश्वासेरक्तपित्तेनिशयाभक्षयेत्सुधीः ॥ पित्तेशर्करयाखादेन्मधुनाबलवृद्धये ॥ १०० ॥

टीका—ऊर्ध्वश्वास औ रक्तपित्तमें हलदीसंग, पित्तमें शक्करसंग, बलवृद्धीके वास्ते मधुसंग ॥ १०० ॥

वीर्यस्तंभायकस्तूर्यानागवल्लिदलेनवा ॥ मंदाग्नौमगधाचूर्णकस्तूरीसंयुतंभजेत् ॥ १ ॥

कंकोलस्यरजोयुक्तंमंदाग्नौवाभजेन्नरः ॥ ख

दिरक्काथसंयुक्तंवर्त्मरोगेप्रशस्यते ॥ २ ॥

टीका–वीर्यस्तंभनकेवास्ते कस्तूरी वा पानसंग, मंदाग्नीमें पिपरी औ कस्तूरीसंग, अथवा ककोल चूरणसंग, नेत्रके पंकलरोगमें खैरके काढेमें ॥ १ ॥ २ ॥

धात्रीफलयुतंवापिपूगचूर्णसमन्वितम् ॥ सेवितंहरतेऽजीर्णंरसोनेनास्थिगंज्वरम् ॥ ३ ॥

टीका–अजीर्णमें आमला वा सुपारीसंग, हाडगत ज्वरमें लहसनसंग ॥ ३ ॥

कुष्ठेसिंधुफलैःसार्धंनिर्गुंडीस्वरसेनवा ॥ कौब्जेपामार्गमूलेनप्लीन्हिटंकणसंयुतम् ॥ ४ ॥

टीका–कुष्ठरोगमें समुद्रफल वा निर्गुंडीके स्वरसमें, कूवररोगमें, अपामार्गकी जडमें, औ प्लीहारोगमें टकणक्षारसंग ॥ ४ ॥

दिव्यसमुद्रफलाभ्यांवंगंसंमर्द्यनागवल्लिजलैः ॥ प्राणप्रियेविलिंपतिनायदिलिंगंभवेद्धिदीर्घतरम् ॥ ५ ॥

टीका–लवग औ समुद्रफलसाथ वग नागवेलीके पत्ररससें मर्दन करिके लिंगमें लेप करै तो लिंग वडा होई ॥ ५ ॥

लवंगरोचनायुक्तंतिलकंजनवश्यकृत्॥ लवंगै रंडमूलाभ्यांलेपश्चार्द्धावभेदके ॥ ६ ॥

टीका—लवंग औ गोरोचनसाथ तिलक करै तौ जन वश्य होइ. लवंग औ एरंडमूल साथ लेप करै तौ अर्द्धावभेद याने अधासीसी जाइ ॥ ६ ॥

यवानिकायुतंवातेवाजिगंधायुतंतुवा ॥ जलोदरेप्यजाक्षीरसंयुतंगुणकृद्भवेत् ॥ ७ ॥

टीका—वातरोगमें अजमा वा असगंधसंग, जलोदरमें बकरीके दूधसंग ॥ ७ ॥

पुत्रार्त्यैरासभीक्षीरैस्तक्राढ्यंवातगुल्मनुत् ॥ कर्कटीस्वरसैःषंढोपुरुषत्वमवाप्नुयात् ॥ ८ ॥

टीका—पुत्रप्राप्तीकेवास्ते गधीके दूधमें, वातगुल्ममें मठासंग, नपुंसककों काकडीके रसमें ॥ ८ ॥

अपामार्गरसैर्वंगंशिरोरोगनिवारणम् ॥ शाल्मकमालतीपत्रीलवंगैर्धातुदोषनुत् ॥ ९ ॥

टीका—मस्तकरोगमें अपामार्गके रसमें, धातुविकारमें जावत्री जायफल लवंगसंग ॥ ९ ॥

जातीफलाश्वगंधाभ्यांकटिपीडानिवारणं ॥ रसोनतैलयुन्नस्यमपस्मारनिषूदनम् ॥ १० ॥

टीका—कटिपीडामें जायफल औ असगंधसंग, अपस्मारमें लहसुन औ तेल युक्तनास देना ॥१०॥

जातीफललवंगाढ्यंमधुनाकसनंजयेत् ॥ स्वरसास्वरसैर्वंगंवलदंहिनॄणामिदम् ॥ ११ ॥

टीका—कासमें जायफल लवंग मधुसंग, अथवा तुलसीरससें सेवन किया मनुष्यकों वल देता है ॥११॥

अथजसदविधिः ॥ तच्छोधनंवंगवत् ॥ अथमारणं ॥ जसदस्यतुपत्राणिकृत्वासूक्ष्मतराणिच ॥ तत्पादांशोशिलागंधावर्कदुग्धविमर्दितौ ॥ १२ ॥ लेपयेत्तेनपत्राणिशरावाभ्यांनिरोधयेत् ॥ गजाव्हेसंपुटेदेयंद्वादशैर्मियतेपुटैः ॥ १३ ॥

टीका—अथ जसदविधिः तत्र शोधनं वंगवत्. अथ मारण. जसदके सूक्ष्म पत्र करे. तिसका चौथा भाग मनसील औ गंधक आंकडेके दूधमें खरल करि पत्रोंके लेप करि शरावसंपुटमें गजपुट देई. ऐसे बारह पुटमें शुद्ध भस्म होता है ॥ १२ ॥ १३ ॥

अथान्यःप्रकारः ॥ जसदस्यचतुर्थांशंपारदगंधकंक्षिपे ॥ मर्दयेत्खल्वकेसम्यकन्यानिंव

रसैःपृथक् ॥ १४ ॥ लेपयेत्तेनपत्राणिगजाव्हेपाचयेत्पुटे ॥ एवमेकपुटेनैवभस्मसाज्जसदंभवेत् ॥ १५ ॥

टीका—अथ दूसरी विधि. जसदपत्रके चौथा भाग पारा औ गंधक घीकुमारपाठेके रसमें खल करि फिरि निंबूके रसमें खरल करि पत्रोंके लेप करि शराव संपुटमें गजपुट दे तौ एक पुटमें भस्म होई ॥ १४ ॥ १५ ॥

मारयेद्वंगवद्वापिनागवद्वाविचक्षणे ॥ तेन भस्मत्वमायातिसर्वकार्यकरंभवेत् ॥ १६ ॥

टीका—अथवा वंग वा सीसाकी रीतिसें मारे तो मरै ॥ १६ ॥

अथसामान्यगुणाः ॥ त्रिदोषप्रमेहाग्निमांद्याक्षिरोगानतीसारपित्तज्वराजीर्णकासान् ॥ विवंधामवातंहरेद्वांतिहेतुर्वमिंशूलसीतज्वरास्रस्रुतीश्च ॥ १७ ॥

टीका—अथ साधारणगुण. त्रिदोष, प्रमेह, अग्निमांद्य, नेत्ररोग, अतिसार, पित्तज्वर, अजीर्ण, कास, विबंध, आमवात, वांति, शूल, शीतज्वर, रक्तातिसार इनकों नाश करै ॥ १७ ॥

अथापक्कदोषाः ॥ अपक्कंजसदंरोगान्प्रमेहा जीर्णमारुतान् ॥ वमिंभ्रमंकरोत्येनंशोधये न्नागवत्ततः ॥ १८ ॥

टीका—अथ अपक्क दोष. अपक्क जसद प्रमेह, अजीर्ण, वात, वांति, भ्रम, इनकों पेदा करता है ॥ १८ ॥

अथशांतिः ॥ बालभयांसितायुक्तांसेवयेद्यो दिनत्रयम् ॥ जसदस्यविकारोस्यनाशमाया तिसत्वरम् ॥ १९ ॥

टीका—अथ शांतिः. बालहरड शक्करसंग तीनि दिन सेवन करे तो जसदविकार जाई ॥ १९ ॥

अथानुपानं ॥ जसदंभिषजांवसुदंललनेप्रव वदाम्यनुपानमहंसुखदम् ॥ त्रिसुगंधयुतंभ सितंह्यशितंत्रिमलोद्भवमाशुनिहंतिगदं २०

टीका—अथ अनुपान. तज तमालपत्र, इलायची-साथ जसद त्रिदोषका नाश करता है ॥ १२० ॥

अग्निमंथरसैर्हंतिवन्हिमांद्यंदुरासदं ॥ नेत्र रोगंगवाज्येनजीर्णेनैवांजनेकृते ॥ २१ ॥ अथवालालयाप्रातर्नेत्ररोगंहिव्युष्टया ॥ अ

हिवल्लिदलोत्पन्नवीटकेनप्रमेहनुत् ॥ २२ ॥

टीका—अग्निमांद्यमें अरनीके रसमें, नेत्ररोगमें जीर्ण गोघृतसें अंजन करै अथवा बासी थूकसें अंजन करै. प्रमेहमें पानके वीडासाथ खाई ॥ २१ ॥ २२ ॥

सतंडुलहिमैर्हंतिखर्जूरैर्मायुजज्वरम् ॥ यवानिकालवंगाभ्यांयुतंशीतज्वरंजयेत् ॥ २३ ॥

टीका—पित्तज्वरमें चावलका हिम औ खजूरमें शीतज्वरमें अजमायन लवंग साथ ॥ २३ ॥

खर्जूरतंडुलहिमैरक्तातीसारनाशकृत् ॥ शर्कराजाजिसंयुक्तमतीसारंवमिंजयेत् ॥ २४ ॥

टीका—खजूर औ चावलके हिमसें रक्तातिसार जाई. अतिसार औ वांतीमें जीरा शक्कर साथ ॥ २४ ॥

यवानिकालवंगजीरकैःसशर्करैःशिवायुधास्यमामयंनिहन्तिवामलोचनेप्रिये ॥ यवानिकाकवोष्णनीरसंयुतंविबंधनुत्तथामवातनुद्यवानिकालवंगसंयुतं ॥ २५ ॥

टीका—शूलरोगमें अजमायन लवंग जीरा शक्कर-संग, विबंधरोगमें अजमायन औ गरम जलसंग, आमवातमें अजमायन लवंगसंग ॥ २५ ॥

महिषीनवनीतेनप्रमेहंजयतिध्रुवं ॥ वल्लंप थ्येचगोधूमकर्पटीघृतसंयुता ॥ २६ ॥

टीका-प्रमेहमें भैंसके माखनसंग तीनि रति सेवन करे, पथ्यमें फकत गेहूकी भौरीया जिसकों अंगाकडी औ वाटीभी कहते हैं सो घृतयुक्त खाई ॥ २६ ॥

यवानिकालवंगाभ्यामजीर्णेकोष्ण नीरयुक् ॥ मधुपिप्पलिसंयुक्तंका संजयतिसत्वरम् ॥ २७ ॥

टीका-अजीर्णमें अजमायन, लवंग औ गरम जल संग, कासमें मधु पिप्पलीसंग लेइ तौ शीघ्र कास जाइ ॥ २७ ॥

अथलोहविधिः ॥ तत्रलोहपरीक्षा ॥ वामोरु त्रिविधंलोहंप्रवदंतिभिषग्वराः ॥ कांतंती क्ष्णंतथामुंडंदिव्यमध्याधमंक्रमात् ॥ २८ ॥

टीका-अथ लोहविधिः. तत्र परीक्षा. लोह तीनि प्रकारका है, कांत, तीक्ष्ण, मुंड; क्रमसें दिव्य, मध्य, अधम है ॥ २८ ॥

कांतंश्रेष्ठतमंग्राह्यंकांताभावेतुतीक्ष्णकं ॥ मुं डकंसर्वथात्याज्यंयतोदोषाहिमुंडके॥ २९ ॥

टीका–सर्वमें कांत श्रेष्ठ है. कांत न मिले तौ तीक्ष्ण औ मुंडकों सर्वथा त्याग करना दूपित है इसतें ॥२९॥

चतुर्धाकांतमप्याहूरोमकंभ्राजकंप्रिये ॥ चुंब कंद्रावकंतेषांगुणाज्ञेयायथोत्तरं ॥ १३० ॥

टीका–कांतभी चारि प्रकारका है. रोमक,भ्राजक, चुंवक, द्रावक यथोत्तर एकसें एक श्रेष्ठ है ॥ १३० ॥

ताम्रवच्छोधयेल्लोहंविशेषात्त्रैफलेजले ॥ त्र योदशपलान्नोर्ध्वंतथापंचपलादधः॥ ३१ ॥

टीका–लोहकी शुद्धि ताम्रवत् है. विशेप त्रिफलामें सात वेर वुझाना तेरह पलसें जादा न करना. पांच पलसें नीचा करना ॥ ३१ ॥

अथमारणं ॥ मृदुमध्यखरैर्भेदैर्लोहपाकस्त्रि धामतः ॥ शुष्कपंकसमोपूर्वोसिकतासदृशः खरः ॥ ३२ ॥

टीका–अथ मारण. मृदु मध्य खर भेदकरिके लोहपाक तीनि प्रकारका है. सूखा कीच-सरीखा मृदु औ मध्य है. वालुरेतसरीखा खर है ॥ ३२ ॥

गंधलिप्तमयःपत्रंवन्हौतप्तंपुनःपुनः ॥ मीना क्षीस्वरसेक्षिप्त्वायावत्तन्नोविशीर्यते ॥ ३३ ॥

ततःपारदगंधेनतुल्याशंमर्दयेद्धितत् ॥ मीनाक्षीदृषनिर्गुंडीरसैर्गजपुटान्मृतिः ॥ ३४ ॥

टीका–गंधक खटाइसें लेपन करिके अग्निमें तप्त करिके छभीके रसमें बुझाता जाई. जहांतक पत्र फुटै नहीं. फिर पत्रके सममाग पारा गंधक मिलाई माछभी और निर्गुंडीके रसमें घोटि गजपुट देइ तौ लोह मरै ॥ ३४ ॥

अथान्यःप्रकारः ॥ अयश्चूर्णंवराकाथेकृत्वा गोलंपुनःपुनः ॥ गर्तेनिर्वातकेदेशेषोडशांगुलसंमिते ॥ ३५ ॥ पुटंदत्वाप्रयत्नेनचतुःषष्टिपुटैरयः ॥ भस्मीभूतंविशालाक्षिपद्मरागनिभंभवेत् ॥ ३६ ॥

टीका–अथ दूसरा प्रकार. शुद्ध लोहका चूरण त्रिफलाके काढेमें घोटिके संपुटमें रखिके सोलह अगुल गेहिरे खाढेमें पुट देइ ऐसे चौपठि ६४ पुट देई तो पद्मरागतुल्य रग लोहभस्म होता है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

अथान्यः ॥ भागैकंपारदंकांतेद्विभागंगंधकंशुचिम् ॥ तयोस्तुल्यमयश्चूर्णंमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ ३७ ॥ यामद्वयमितंप

श्चात्स्थापयेत्ताम्रभाजने ॥ व्याघ्रपत्रैः समाच्छाद्ययदोष्णंप्रहरद्वयात् ॥ ३८ ॥ स्थापयेच्चततःपश्चाद्धान्यराशौदिनत्रयं॥ ततःसंमर्दयेद्गाढमेवंवारितरंभवेत् ॥ ३९ ॥

टीका—अथ तिसरा प्रकार. एक भाग पारा, दो भाग गंधक, तीनि भाग लोहचूरण, घीकुमारपाठेके रसमें खरल करि ताम्रके पात्रमें रखिके उपरसें एरंडका पत्र ढकिके तीव्र सूर्यके तापमें दोपहर रखी देइ जव उष्ण होई तब अन्नकी राशीमें रखी छोडे. दिन तीनिपाछे निकासि खरल करै. पानीपर तिरैगा तब जान की भस्म भया ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

अथसामान्यगुणाः ॥ मृगविलोचनिकुंजरगामिनिश्शृणुवदाम्ययिलोहगुणानहं ॥ सुविधिमारितमेवहरत्ययःकृमिसमीरणपांडुविषज्वरान् ॥ १४० ॥ भ्रमवमिश्वसनग्रहणीगदान्कफजराकसनक्षयकामलाः ॥ अरुचिपीनसपित्तप्रमेहकान्गुदजगुल्मरुगामसमीरणात् ॥ ४१ ॥

टीका—अथ साधारण गुण. कृमिरोग, वातरोग,

पांडु, विष, ज्वर, भ्रम, वांति, श्वास, संग्रहणी, कफ, जरा, कास, क्षय, कामला, अरुची, पीनस, पित्त, प्रमेह, अर्श, गुल्म, आमवात जाते हे ॥ ४० ॥ ४१ ॥

प्लीहस्थौल्यविनाशनंबलकरंकांताजनानं ददंक्षीणत्वंविधुनोतिदृष्टिजनकंशोफापहं कुष्टनुत् ॥ भक्तंशुद्धरसेंद्रसंयुतमिदंस र्वामयध्वंसनंकांताच्छ्रेष्ठरसायनंनहिपरं कांतेऽस्तिबिंबाधरे ॥ ४२ ॥

टीका—प्लीह, स्थूलता इनरोगोंकों हरै. बलकों बढावै, स्त्रीकों सुख देइ. क्षीणता मिटावै. दृष्टि निर्मल करै. सोजा दूरि करै. कुष्ठ हरै. जो शुद्ध पारेसंग सेवन करै तौ सर्व रोग जाई. लोहतें श्रेष्ठ ओर रसायन है नहीं ॥ ४२ ॥

अथापक्कदोषाः ॥ विषंक्लेदंकरोत्येवंवी र्यंकांतिंनिहंतिच ॥ अपक्कंहियतोलोहं ततःसम्यग्विपाचयेत् ॥ ४३ ॥

टीका—अथापक्कदोष. अपक्क लोह विष औ जीमतिलाना पैदा करै, वीर्य औ कांतिकों नाश करै, इसवास्ते शुद्ध भस्म लेइ ॥ ४३ ॥

अथशांतिः ॥ खंडमाक्षिकसंयुक्तमेलाचूर्णंदिनत्रयम् ॥ विकारोलोहजस्तस्यभुक्त्वानाशंसमाप्नुयात् ॥ ४४ ॥

टीका–अथ लोहविकारशांतिः. खांड औ मधु साथ इलायचीचूर्ण तीनि दिन सेवन करे तौ लोहविकार जाइ ॥ ४४ ॥

अथान्यः ॥ सिंधूत्थंत्रिवृताचूर्णंसेवितंकोष्णवारिणा ॥ लोहजाविकृतिस्तस्यविनश्यतिनसंशयः ॥ ४५ ॥

टीका–अथ अन्यप्रकार. सैंधव लवण औ निशोत्तर चूरण गरम जलसैं पियै तौ लोहविकार जाइ ॥४५॥

अन्यच्च ॥ सितयामधुनावापिश्वेतदूर्वारसंपिबेत् ॥ विकारंलोहजंत्यक्त्वा सुखमेवहिजीवति ॥ ४६ ॥

टीका–अथवा दूर्वारस शक्कर वा मधुसंग पिवै तौ लोहविकार जाइ ॥ ४६ ॥

अथलोहयोनिरक्षामंत्रः ॥ ॐअमृतोद्भवाय फट् ॥ अथलोहमर्दनमंत्रः ॥ ॐअमृतोद्भवायस्वाहा ॥ अथवलिदानमंत्रः ॥ ॐनमश्चं

डवज्रपाणयेमहायक्षसेनाधिपतयेकुरुकुरुम
हाविद्याविलायस्वाहा ॥ अथभक्षणमंत्रः ॥
ॐअमृतंभक्षयामिस्वाहा॥इतिमंत्राः॥ अथा
नुपानं ॥रसराजयुतंलोहंसर्वरोगेषुयोजयेत्॥
भार्ङ्गीत्रिकटुकक्षौद्रयुतंधातुविकारनुत् ॥४७

टीका—अथ लोहयोनिरक्षामंत्रः ओं अमृतोद्भवायफट्. अथ लोहमर्दनमंत्रः ओं अमृतोद्भवाय स्वाहा. अथ बलिदानमंत्रः ओं नमश्चंडवज्रपाणये महायक्षसेनाधिपतये कुरु कुरु महाविद्याविलाय स्वाहा. अथ भक्षण मंत्रः अमृतं भक्षयामि स्वाहा. इति मंत्राः अथानुपानं. सर्व रोगमें लोहभस्म पारासंग देना. धातुविकारमें भारंगमूल, सुंठी, मिरच, पिपरी, मधुसंग देना॥ ४७ ॥

रसगंधयुतंलोहंमाक्षिकेणकफप्रणुत् ॥ चातु
र्जातसितासार्धरक्तपित्तंजयेत्सुधीः ॥ ४८ ॥

टीका—कफरोगमें पारा, गंधक, मधुसंग रक्तपित्तमें तज, पत्र, इलायची, नागकेशर, शक्करसंग देना॥४८॥

पुनर्भूरजसायुक्तंगोदुग्धेनबलप्रदं ॥ क्वाथे
पौनर्नवेपांडुखंडयेल्लोहमेवाहि ॥ ४९ ॥

टीका—बलवृद्धिकेवास्ते पुनर्नवाके चूर्ण औ गा-.

टीका—अथ मंडूरविधि, जो गुण लोहमें है सो लोहकीटमेंभी है. लोहका कीट बहेडेकी लकडीकी अग्निमें तपाई गोमूत्रमें सात वेर बुझावे ॥ ५३ ॥

निर्वाप्यचूर्णयेत्पश्चान्मर्दयेत्सुरभीजलैः ॥ एकंगजपुटंदत्वामंडूरंसर्वकार्यकृत् ॥ ५४ ॥

टीका—फिरि चूरण करिके गोमूत्रमें खरल करै सुखाई गजपूट देई तौ शुद्ध मंडूर होई ॥ ५४ ॥

लोहवत्सर्वमाख्यातंसेवनादिकमस्यवै ॥ ताम्रवत्पित्तलंकांस्यंजानीयान्मारणादिषु ॥५५

टीका—इस मंडूरका गुण अवगुण शांति अनुपान लोहवत्. कांसा पीतलका मारना गुणादि अनुपान वगैरे ताम्रवत् जानना ॥ ५५ ॥

अथधातुसेविनोवर्ज्यानि ॥ राजिकामद्यमाषान्नंतैलमम्लरसंतथा ॥ पत्रशाकंनसेवेत लोहभक्षीकदाचन ॥ ५६ ॥

टीका—अथ धातु सेवनीवालेकों वर्जनीय पदार्थ. राई मदिरा, उडदका व्यंजन, तेल, खटाई, पत्तेउंकी भाजी ॥ ५६ ॥

कूष्मांडंकदलीकंदंकरमर्दंचकांजिकं ॥ कार

वेल्लंकरीरंचषट्ककारादिकंत्यजेत् ॥ ५७ ॥
इतिश्रीपंडितरघुनाथप्रसादविरचितायामनु
पानतरंगिण्यांप्रथमा वीचिः ॥ १ ॥

टीका—कूष्माड जिसकों कोला औ कुह्मडा ओ नूराभी कहते है औ केलेका कंद, करौंदा, कांजी, करेला, करील इनकों न खाई ॥ ५७ ॥

इतिश्रीमद्रमणविहारीकृतायांअनुपानतरंगिणीटीकायांनौकाख्यायांप्रथमकोष्टकः ॥ १ ॥

अथोपधातुविधिः ॥ तत्रोपधातुसंख्या ॥ माक्षिकंतुत्थकंतालंनीलांजनमथाभ्रकं ॥ मनःशिलाचरसकंप्राहुःसप्तोपधातवः ॥ १ ॥

टीका—अथोपधातुविधिः. तत्र उपधातुसख्या. सोनामाखी १, नीलातूथा जिसकों मोरतूथा औ तुटियाभी कहते हैं २, हरिताल ३, सुरमा ४, अभ्रक, ५, मनःशिला ६, खपरिया ७, ये सात उपधात हैं ॥ १ ॥

तत्रादौहेममाक्षिकशोधनं ॥ भागत्रयं कांचनमाक्षिकस्यासिंधूत्थभागैकमयःकटाहे ॥ जंबीरनीरैःफलपूरजैर्वानीरैर्विपाच्यंललनेऽग्निनावै ॥ २ ॥

टीका–तहां प्रथम सोनामाखीविधि. तत्र शोधन. तीनि भाग सोनामाखी, एक भाग सैंधव नोन, लोहकी कडाहीमें डारिके जंभीरी वा बिजोराके रसके साथ पचावै ॥ २ ॥

यावत्कटाहंभजतेरुणत्वंतावद्विघट्टेदयिलोहहव्याँ ॥ पश्चात्स्वयंशीतलतामुपेतमुत्तार्यशुद्धंसुरसेषुयोज्यम् ॥ ३ ॥

टीका–जबतक कडाह लाहलन होई तबतक लोहकी करछीसें घोटता जाई. फिरि उतारी ठंढा भएपर रसक्रियामें युक्त करै ॥ ३ ॥

अथमारम् ॥ कुलत्थस्यकषायेणवाजमूत्रेणमर्दयेत् ॥ वातैलेनारविंदाक्षितक्रेर्वास्वर्णमाक्षिकम् ॥ ४ ॥

टीका–अथ सोनामाखीमारण. सोनामाखीकों कुलथीके काढेमें वा बकरेके मूत्रमें वा तेलमें वा छाछिमें खरल करै ॥ ४ ॥

पश्चात्संपुटकेरुध्वापुटेद्गजपुटेहितत् ॥ रक्तवर्णंमृतंसम्यक्सर्वकार्येषुयोजयेत् ॥ ५ ॥

टीका–फिरि शरावसंपुटमें राखिके गजपुट देई तो लाल भस्म होई सो सर्वकार्यमें युक्त करना ॥ ५ ॥

अथान्यःप्रकारः ॥ भागैकंगंधकंशुद्धंचतुर्भा गंसुमाक्षिकं ॥ संमर्द्यैरंडतैलेनततोनागपुटे पुटेत् ॥ ६ ॥

टीका—अथ दूसरी विधि. एक भाग गंधक, चारिभाग शुद्ध सोनामाखी एरंडके तेलमे मर्दन करिके गजपूट देई ॥ ६ ॥

सिंदूराभंमाक्षिकस्यभसितंभवतिध्रुवम् ॥ अनेकैर्वैद्यशास्त्रज्ञैःकथितंप्रियवल्लभे ॥ ७ ॥

टीका—तौ सिंदूरवर्ण माक्षिकभस्म होता है. ऐसा अनेक वैद्यशास्त्रज्ञ कहते हैं ॥ ७ ॥

अथगुणाः ॥ वृष्यंस्वर्यंहिचक्षुष्यंव्यवाय्यपिरसायनं ॥ हंतिवस्त्यर्तिशोफार्शोमेहकुष्ठोदरक्षयान् ॥ ८ ॥

टीका—अथ स्वर्णमाक्षिकगुण. वाजीकरण है. स्वर शुद्द होता है. नेत्ररोग हरता है. स्त्रीसंगकी रुचि वढाता है. रसायन हे. वस्तिपीडा, शोफ, अर्श प्रमेह, कुष्ठ उदररोग, क्षय ॥ ८ ॥

पांडुरोगंविषंपित्तंकामलांचहलीमकं ॥ वातं वातात्मजःपुत्रंरावणस्ययथाऽहनत् ॥ ९ ॥

इतिशोधनमारणे ॥ अथगुणदोषौ ॥ तुत्थं भस्मकफंहंतिपामांकुष्ठंविषंकृमीन् ॥ चक्षुष्यंलेखनंभेदिशुद्धिहीनंहिदोषकृत् ॥ १६ ॥

टीका–अथ गुण औ दोष. तुत्थभस्म कफनाशक है. कडू, कुष्ठ, विष, कृमी हरता है. नेत्ररोग हरता है. फूली वगैरे काटता है, मलको फोडता है. औ अशुद्ध रोगकारक है ॥ १६ ॥

अथशांतिः ॥ जंबीरस्वरसंवापिलाजावारिसमन्विताः ॥ लामजकजलंवापिपिबेत्तुत्थकशांतये ॥ १७ ॥

टीका–अथ तुत्थविकारशांतिः. जमीरीका रस वा चावलकी खीलै जिनकों कुरमुरा औ धानी औ लाईभी कहते है तिन्हे जलसंग सेवन करै वा खस जिसको वालाभी कहते है तिसका अर्क पिये तौ तुत्थविकार शांति होइ ॥ १७ ॥

अथानुपानं ॥ नवनीतयुतंकंडूविषकुष्ठनिवारणं ॥ कृमिरोगंविडंगेनतांबूलेनकफंजयेत् ॥ १८ ॥

टीका–अथ अनुपान. माखनसंग खाज, विष

कुष्ठ निवारण करता है. वायविडंगमें कृमिनाशक है. पानमें कफ हरता है ॥ १८ ॥

माक्षिकेणांजितंहंतिचक्षूरोगंसुदारुणं ॥ एरंडतैलसंयुक्तंभेदयेदिदमेवहि ॥ १९ ॥

टीका—मधुसंग अंजन करनेसें नेत्ररोग हरता है. एरंड तेलसग रेचन है ॥ १९ ॥

अथहरितालविधिः ॥ तत्रशोधनं ॥ तालकं त्रिफलाक्वाथेस्वेदयेत्कांजिकेतथा ॥ कूष्मांड स्वरसेतैलेयामंयामंपृथक्पृथक्कुवा ॥ दोलायंत्रेसुधानीरेशुद्धंस्यात्सर्वकार्यकृत् ॥ २० ॥

टीका—अथ हरितालविधिः. तत्रशोधन. हरतालको त्रिफलाके काढेमें औ कांजीमें औ भूरा कुह्मडाके रसमें, तेलमें न्यारा न्यारा पहरकी आंच दोलायत्रसें देना. अथवा चूनाके जलमें पहर चारि दोलायंत्रमें स्वेदन करना तो शुद्ध सर्व कार्ययोग्य होता है ॥ २० ॥

अथमारणं ॥ अश्वत्थस्वरसैस्तालंमर्दयेद्दिनविंशकम् ॥ गोलकंतुततःकृत्वाशोषयेद्रातपेदृढम् ॥ २१ ॥ पश्चाद्भांडेश्वत्थभूतिं पूरयेदर्द्धकेदृढां ॥ शनैर्गोलंनिधायाथततोभू

तिंप्रपूरयेत् ॥ २२ ॥ संयंत्र्यमुद्रयेत्पश्चाच्चु ल्ह्यांसंस्थाप्यदीपयेत् ॥ चतुर्यामावधिंवन्हि स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥ २३ ॥

टीका—अथ मारण. पीपरके रसमें वीस दिन हरिताल खरल करिके गोला बनाईके धूपमें खूब सुखाइलेइ ॥ २१ ॥ फिरि एक हंडीमें पिपरकी भस्म आधी भरै खूब दवाइके तिसपर गोला धरिके ऊपर वही भस्म फिरि दवादेइके भरै औ हडीकों मुद्रा दैके चूल्हेपर चढाई चारि पहर आंच देइ सीतल भये भस्म युक्तीसें निकालै ॥ २२ ॥ २३ ॥

अन्यःप्रकारः ॥ तालंपुनर्नवानीरैःपुटेदेक दिनंप्रिये ॥ कृत्वातद्गोलकंपश्चाच्छोषयेदात पेसुधीः ॥ २४ ॥

टीका—दूसरी विधि. हरितालको पुनर्नवाके रसमें ए- क दिन खरल करिके गोला बनाई सुखावै ॥ २४॥

तद्भूत्यार्धभृतेभांडेगोलकंन्यस्यपूरयेत् ॥ व र्षाभूभस्मनामुद्रांविदध्याच्चापिशोषयेत् २५

टीका—फिरि पुनर्नवाकी भस्म आधी हडीमें भरिके ऊपरसें गोला रखिके फिरि भस्म दवाइके भरि मुद्रा देके ॥ २५ ॥

चूल्यांखवेदयामांतमग्निदानात्सुनिश्चितं ॥ भवेद्भूतिस्तुगुंजैकाभक्षितारुग्विनाशिनी२६

टीका—चूल्हे चढाई चालीस ४० पहरकी आंचसें भस्म होता है. रती एक सर्व रोगहारक है ॥२६॥

अथान्यः ॥ द्रोणपुष्पीरसैर्भाव्यंतालकंन्यस्य यंत्रके ॥ उर्ध्वपातनकेदत्त्वावन्हियामचतुष्टयं ॥ २७ ॥ स्वांगशीतंतमुद्घाट्यचोर्ध्वलग्नं हितालकं ॥ गृहीत्वाभावयेत्पश्चात्पूर्ववत्पाचयेत्ततः ॥ २८ ॥ त्रिःसप्तपुटकैरेवंताल भूतिर्भवेद्ध्रुवं ॥ एवंहिकन्यकाद्रावैःशतकृत्वोविपाचयेत् ॥ २९ ॥

टीका—अथ तीसरी विधि. गूमाके रसमें हरिताल घोटिके डमरू यंत्रमें आंच देइ ठंढे भये पीछे ऊपरकी हांडीमे लगा छोडाइके फिरि घोटिके आंच देइ. ऐसें एकइस २१ आंचमें भस्म होता है. ऐसे ही कुमारिपाठेके रसमें सौ १०० आंचसें भस्म होता है ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

अथगुणाः ॥ हंतिवातामयान्सर्वान्कफपित्तगुदामयान् ॥ हरितालंमृतंकुष्ठंप्रमेहंचैज्वरादिकान् ॥ १३० ॥

टीका-अथ हरितालगुण, संपूरण वातरोग, औ कफरोग औ पित्तरोग, गुदाके रोग, कुष्ठ, प्रमेह औ ज्वरादिक सब रोग हरता है ॥ १३० ॥

अथाशुद्धदोषाः ॥ अशुद्धंपीतवर्णंयन्स्मृतंताळंसधूमकम् ॥ वातपित्तामयान्कुष्ठंदेहनाशंकरोतिच ॥ ३१ ॥

टीका-अथ अशुद्ध दोष. जो हरिताल अशुद्ध औ पीला औ अग्निपर डालनेसें धूवां देवै सो वात पित्तकुष्ठादिक रोगकारक औ देहनाशकभी है ॥ ३१ ॥

अथशांतिः ॥ कूष्मांडस्वरसंवापियवासांच निषेवयेत् ॥ नाकुलीस्वरसंवापिसितायुक्तं वरांगने ॥ ३२ ॥

टीका-अथ शांतिः. सफेद कुह्मडेका रस वा यवासा वा कडुविनाइका रस शकरयुक्त सेवै ॥ ३२ ॥

ससितंजीरकंबालेयःखादेद्दिनसप्तकं ॥ हरितालविकारेणमुक्तःस्यात्सुखसंयुतः ॥ ३३ ॥

टीका-जीरा शक्कर सात दिन सेवन करै तो तालविकार मिटै ॥ ३३ ॥

अथानुपानानि ॥ तालंछिन्नारजोयुक्तंतक्का

थेनयुतंतुवा ॥ वातास्रंकुष्ठकंहंतिचक्रपाणि र्यथाऽसुरान् ॥ ३४ ॥

टीका—अथ अनुपान. हरितालको गिलोइके चूरणमें वा काढेमें लेई तौ वातरक्त जाई ॥ ३४ ॥

रक्तदोषंनिशायुक्तंतांबूलेनक्षयंजयेत् ॥ तद्व ज्जलोदरातंकंहंतिसिंधुफलान्वितं ॥ ३५ ॥

टीका—हलदीमें रक्तदोष, तांबूलमें क्षयरोग, समुद्रफलमें जलोदरको नाश करता है ॥ ३५ ॥

कूष्मांडस्वरसैःकंडुमुपदंशंभगंदरं ॥ विसर्पं मंडलंवातरक्तंविस्फोटकंजयेत् ॥ ३६ ॥

टीका—भूरे कुह्मडाके रससें खुजली औ उपदंश, भगंदर, विसर्प, मंडल, कुष्ठ, वातरक्त, विस्फोटक हरता है ॥ ३६ ॥

पांडुक्षयज्वरान्हंतिहरितालंसितायुतं ॥ भुक्त्वैवपथ्यमश्नीतगोदुग्धांधःसितायुतं ॥ ॥ ३७ ॥ अंधःओदनं ॥

टीका—शक्करसंग खानेसें पांडु, क्षय, ज्वर नाश करै है. परंतु पथ्य गाईका दूध औ शक्करसग भात खाइ है ॥ ३७ ॥

अल्पाहारंप्रकुर्वीतनीरमल्पंप्रियेपिवेत् ॥सदु ग्धालप्सिकांपीत्वाभक्षयेच्चसितोपला॥३८॥

टीका—औ अल्प आहार करै. जल थोरा पिये. औ दूधसंग लापसी पिवै. मिश्री खाई ॥ ३८ ॥

सायंतनाशनेखादेत्कृसरांलवणंविना ॥ वर्ज येत्प्रमदासंगंस्वपेद्धन्वंतरिंस्मरन् ॥ ३९ ॥

टीका—संध्याको अलोनी खिचडी खाई. स्त्री-संभोग त्यागै. सोवनेके वख्त धन्वंतरिका स्मरण करिके सोवै ॥ ३९ ॥

शृंगवेरांबुनावातंशूलंसूतिगदंजयेत् ॥ कृस रांतघृतांखादेत्पथ्येदुग्धौदनंतुवा ॥ ४० ॥

टीका—वातरोग शूल सूतिकारोगमें अदरकके रसमें लेई अदरकको आदाभी कहता है. पथ्यमें घी खिचडी वा दूधभातभी खाता है ॥ ४० ॥

भेषजादनमारभ्यमुहूर्तद्वितयावधि ॥ पानी यंनपिवेद्धालेपिपासुरपिरोगवान् ॥ ४१ ॥

टीका—जिस वख्त औषध खाय तबसें दोमुहूर्त पियास होई तौभी पानी न पिये ॥ ४१ ॥

शृतशीतांबुनातालमशक्तःपुरुषःपिवेत् ॥ स

न्निपातंवातगुल्मंवायुमर्धांगकंजयेत् ॥ ४२॥

टीका—अशक्त पुरुप शक्ति प्राप्तिकेवास्ते दूध गरम करि ठढा करिके उसमें लेई औ इसी अनुपानसें सन्निपात, वातगुल्म, वातरोग, अर्धांग इनमें देई ॥ ४२ ॥

निर्बलोबलसंप्राप्त्यैजातीफलसमन्वितं ॥ रक्तपित्तेनिशासार्धंवीर्यस्तंभायपर्णयुक् ॥४३

टीका—बलप्राप्तिकेवास्ते जायफलमें देई, रक्तपित्तमें हलदीसग, वीर्यस्तभनको पानमें ॥ ४३ ॥

ऊर्ध्वश्वासंशिवायुक्तंशुंठ्यालस्यंजयेत्सुधीः ॥ त्रिसुगंधान्वितंतालमास्यदौर्गंध्यनाशनम् ॥ ४४ ॥

टीका—ऊर्ध्वश्वासमें हरडयुक्त, आलस्यमें सोंठीसंग, मुखदुर्गंध जानेकों तजपत्र इलायचीमें ॥ ४४ ॥

जलोदरमजामूत्रैःप्रमेहंस्वरसारसैः ॥ जातिपत्रीकुंकुमाभ्यांप्रतिश्यायंनिवारयेत् ॥ ४५ ॥

टीका—जलोदरमें बकरीके मूत्रसंग, प्रमेहमें तुलसीके रससग, जायपत्रीके केसरसग प्रतिश्यायमें, जिसको जुकाम औ सरदीभी कहते हैं॥ ४५ ॥

अग्निमांद्यंजयेत्कांतेपिप्पलीमधुसंयुतं ॥ का

संक्षयंसितायुक्तंनाशयेद्विषमज्वरान् ॥ ४६॥

टीका—मंदाग्निमें मधु पिप्परीसंग, कास, क्षय, विषमज्वरमें शकरसंग ॥ ४६ ॥

लवंगतजकर्पूरैर्वीर्यस्तंभायतालकम् ॥ गोक्षीरेणयुतंसेवेद्वीर्यवृद्ध्यैघटस्तनि ॥ ४७ ॥

टीका—फिरि वीर्यस्तंभकेवास्ते लवंग, तज, कर्पूरसंग, वीर्यवृद्धिकेवास्ते गौके दुग्धसंग ॥ ४७ ॥

अथनीलांजनविधिः ॥ जंबीरस्यांबुनाभाव्यं नीलांजनमथातपे ॥ शोषयेत्त्रदिनेकेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् ॥ ४८ ॥

टीका—अथ नीलांजनविधि. सुरमाको जंभीरीके रसकी पुट दैके एकदिन धूपमें सुखाइ लेइ तौ शुद्ध होता है ॥ ४८ ॥

अथान्यः ॥ सौवीरंकांजिकेस्विन्नंयामैकेनविशुद्ध्यति ॥ अथगुणाः ॥ सौवीरंशीतलंग्राहि चक्षुष्यंमधुरंस्मृतम् ॥ सिध्मानंक्षयपित्तास्रकफंहंतिविशेषतः ॥ ४९ ॥

टीका—अथ दूसरी विधि. सुरमा एक पहर कांजीमें दोलायंत्रमें पचावै तौ शुद्ध होई. अथ गुण. सुरमा सीत

ल है. ग्राही है. नेत्र निरोग करता है. मीठा है. सहुवो, क्षय, पित्त, रक्त, कफ इनकों मारता है ॥ ४९ ॥

नीलांजनमतीसारंग्रहणीमपिनाशयेत् ॥ काश्मीरनागफेनाभ्यामरविंदविलोचने ॥ ५०॥

टीका—औ केशर अफीमसंग संग्रहणी अतीसारकोंभी दूरी करता है ॥ ५० ॥

समंवैपारदंनागंद्वयोस्तुल्यमयेंऽजनम् ॥ शुद्धकर्पूरकंबालेपारदापंचमांशकम् ॥५१॥ विमर्द्यखल्वकेसम्यगंजयेन्नेत्रयुग्मके ॥ नेत्रदोषविमुक्तःसन्सुखंसौंदर्यमाप्नुयात् ॥ ५२ ॥

टीका—पारा सीसा समभाग, दोनोंके सम सुरमा, पारासैं पंचमांश शुद्ध कपूर. सबको खरल करिके अंजन करै तौ नेत्ररोग जाई ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

सौवीरंसैंधवंकुष्ठंवीजान्येडगजस्यच ॥ विडंगंसर्षपान्पिष्ट्वाकांजिकेनप्रलेपयेत् ॥ सिध्मानंमंडलंकुष्ठंदद्रुमेवजयेत्क्षणात् ॥ ५३ ॥

टीका—सुरमा, सैंधव लवण कुट जिसकों उपलेटभी कहते हैं. पमाडका बीज, वायविडंग, सरसौं, कांजीमें पीसिके लगावै तौ. सेहुवा, मंडल, कुष्ठ, दाद इनकों नाश करै ॥ ५३ ॥

संक्षयंसितायुक्तंनाशयेद्विषमज्वरान् ॥ ४६॥

टीका—मंदाग्निमें मधु पिप्परीसंग, कास, क्षय, विषमज्वरमें शक्करसंग ॥ ४६ ॥

लवंगतजकर्पूरैर्वीर्यस्तंभायतालकम् ॥ गोक्षीरेणयुतंसेवेद्वीर्यवृद्ध्यैघटस्तनि ॥ ४७ ॥

टीका—फिरि वीर्यस्तंभकेवास्ते लवंग, तज, कर्पूरसंग, वीर्यवृद्धिकेवास्ते गौके दुग्धसंग ॥ ४७ ॥

अथनीलांजनविधिः ॥ जंबीरस्यांबुनाभाव्यं नीलांजनमथातपे ॥ शोषयेच्चादिनैकेनशुद्धि मायातिनिश्चितम् ॥ ४८ ॥

टीका—अथ नीलांजनविधि. सुरमाको जंभीरीके रसकी पुट देके एकदिन धूपमें सुखाइ लेइ तौ शुद्ध होता है ॥ ४८ ॥

अथान्यः ॥ सौवीरंकांजिकेस्विन्नंयामैकेनविशुद्ध्यति ॥ अथगुणाः ॥ सौवीरंशीतलंग्राहि चक्षुष्यंमधुरंस्मृतम् ॥ सिध्मानंक्षयपित्तास्र कफंहंतिविशेषतः ॥ ४९ ॥

टीका—अथ दूसरी विधि. सुरमा एक पहर कांजीमें दोलायंत्रमें पचावै तौ शुद्ध होई. अथ गुण. सुरमा सीत

ल हे. ग्राही है. नेत्र निरोग करता है. मीठा है, सहुवो, क्षय, पित्त, रक्त, कफ इनकों मारता है ॥ ४९ ॥

नीलांजनमतीसारंग्रहणीमपिनाशयेत् ॥ काश्मीरनागफेनाभ्यामरविंदविलोचने ॥ ५०॥

टीका–औ केशर अफीमसंग संग्रहणी अतीसारकोंभी दूरी करता है ॥ ५० ॥

समंवैपारदंनागंद्वयोस्तुल्यमथेंऽजनम् ॥ शुद्धकर्पूरकंबालेपारदापंचमांशकम् ॥५१॥ विमर्घखल्वकेसम्यगंजयेन्नेत्रयुग्मके ॥ नेत्रदोषविमुक्तःसन्सुखंसौंदर्यमाप्नुयात् ॥ ५२ ॥

टीका–पारा सीसा समभाग, दोनोंके सम सुरमा, पारासें पंचमांश शुद्ध कपूर. सवको खरल करिके अंजन करै तौ नेत्ररोग जाई ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

सौवीरंसैंधवंकुष्ठंवीजान्येडगजस्यच ॥ विडंगंसर्षपान्पिष्ट्वाकांजिकेनप्रलेपयेत् ॥ सिध्मानंमंडलंकुष्ठंदद्रुमेवजयेत्क्षणात् ॥ ५३ ॥

टीका–सुरमा, सैंधव लवण कुट जिसकों उपलेटभी कहते हैं. पमाडका बीज, वायविडंग, सरसौ, कांजीमें पीसिके लगावै तौ सेहुवा, मडल, कुष्ठ, दाद इनकों नाश करै ॥ ५३ ॥

शर्कराज्ययुतंपित्तंकफंशुंठ्यभयागुडैः ॥५४॥

टीका–पित्तरोगमें घी शक्करसंग, कफरोगमें हरड गुड सोंठीसंग ॥ ५४ ॥

नीलांजनंकनकजंवरखंविशुद्धंहैयंगवेनससितामधुनैकगुंजं ॥ खादेन्नरःक्षयनिपीडितआशुकांतेकांतिंलभेताविपुलंवलमंबुजाक्षि ५५

टीका–शुद्ध सुरमा एक रती सोनेका वरख दोनोंको एकत्र करि माखनमिश्रि सहतसंग खाई तौ क्षयीरोग जाई ॥ ५५ ॥

अथाभ्रकविधिः ॥ तत्तुचतुर्विधं ॥ श्वेतंकृष्णंतथापीतंधूम्रवर्णंक्रमात्प्रिये ॥ ब्राह्मणंक्षत्रियंवैश्यंशूद्रंप्राहुर्भिषग्वराः ॥ ५६ ॥

टीका–अथ अभ्रकविधि. सो अभ्रक चारि प्रकारका है. श्वेत, कृष्ण, पीत, धूम्र. श्वेत ब्राह्मण, कृष्ण क्षत्रिय, पीत वैश्य, धूम्रवर्ण शूद्र ॥ ५६ ॥

कृष्णेहेमगुणान्प्राहुःश्वेतेरौप्यगुणानपि ॥ पीतेताम्रारवंगादिगुणान्धूम्रंनिरर्थकम्५७

टीका–कृष्णमें सोनेके गुण है. श्वेतमें रूपेके गुण है. पीतमें ताम्र, पित्तल वगादिके गुण है. धूम्र निरर्थक है ॥ ५७ ॥

अन्यच्च ॥ नागंभेकंपिनाकाख्यंवज्र
मभ्रंचतुर्विधं ॥ नागमग्नौसुसंतप्तंफू
त्कारंकुरुतेभृशम् ॥ ५८ ॥ भेकाव्हं
दार्दुरंशब्दंपिनाकंदलविस्तृतिम् ॥
वज्रमेववरंतेषांविकारंनयतोव्रजेत्॥५९॥

टीका—औरभी भेद है. नाग १, भेद २, पिनाक ३, वज्र ४, ए चारि भेद है. नागजातीका अभ्रक अग्निमें तपाया फूंकार करते है. भेक मेडकका शब्द करता है. पिनाकके वरख फैलते है. वज्र ज्योंका त्यों रहता है सो श्रेष्ठ है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

गृण्हीयाच्चततोवज्रंजराव्याधिविनाशनम् ॥
कफवातकरंचाभ्रमशुद्धंमृत्युदंस्मृतं ॥ ६० ॥

टीका—इसवास्ते वज्रही ग्रहण करना. जो जराव्याधिका टालनेवाला है. जो अशुद्ध है सो कफवातका करनेवाला है औ मृत्युकारक है ॥ ६० ॥

तस्माद्विशोधनंवक्ष्येविशेषामयनाशनं ॥ ग
गनंवन्हिसंतप्तंगवांक्षीरेविनिक्षिपेत् ॥ ६१॥

टीका—तिसवास्ते शोधन कहते हैं. जो विशेषकरिके रोग नाशक है. अभ्रक अग्निमें तपाइके गाइके दूधमें बुझाई लेना ॥ ६१ ॥

शर्कराज्ययुतंपित्तंकफंशुंठ्यभयागुडैः ॥५४॥

टीका—पित्तरोगमें घी शक्करसंग, कफरोगमें हरड गुड सोंठीसंग ॥ ५४ ॥

नीलांजनंकनकजंवरखंविशुद्धंहैयंगवेनससि तामधुनैकगुंजं ॥ खादेन्नरःक्षयनिपीडितआ शुकांतिकांतिंलभेतविपुलंबलमंबुजाक्षि ५५

टीका—शुद्ध सुरमा एक रती सोनेका वरख दोनौंको एकत्र करि माखनमिश्रि सहतसंग खाई तौ क्षयीरोग जाई ॥ ५५ ॥

अथाभ्रकविधिः ॥ तत्तुचतुर्विधं ॥ श्वेतंकृष्णंतथापीतंधूम्रवर्णंक्रमात्प्रिये ॥ ब्राह्मणंक्षत्रियंवैश्यंशूद्रंप्राहुर्भिषग्वराः ॥ ५६ ॥

टीका—अथ अभ्रकविधि. सो अभ्रक चारि प्रकारका है. श्वेत, कृष्ण, पीत, धूम्र. श्वेत ब्राह्मण, कृष्ण क्षत्रिय, पीत वैश्य, धूम्रवर्ण शूद्र ॥ ५६ ॥

कृष्णेहेमगुणान्प्राहुःश्वेतेरौप्यगुणानपि ॥ पीतेताम्रारवंगादिगुणान्धूम्रंनिरर्थकम्५७

टीका—कृष्णमें सोनेके गुण हैं. श्वेतमें रूपेके गुण हैं. पीतमें ताम्र, पित्तल वंगादिके गुण हैं. धूम्र निरर्थक है ॥ ५७ ॥

अन्यच्च ॥ नागंभेकंपिनाकाख्यंवज्र
मभ्रंचतुर्विधं ॥ नागमग्नौसुसंतप्तंफू
त्कारंकुरुतेभृशम् ॥ ५८ ॥ भेकाव्हं
दार्दुरंशब्दंपिनाकंदलविस्तृतिम् ॥
वज्रमेववरंतेषांविकारंनयतोव्रजेत्॥५९॥

टीका–औरभी भेद है. नाग १, भेद २, पिनाक ३, वज्र ४, ए चारि भेद है. नागजातीका अभ्रक अग्निमें तपाया फूकार करते है. भेक मेडकका शब्द करता है. पिनाकके वरख फैलते है. वज्र ज्योंका त्यों रहता है सो श्रेष्ठ है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

गृण्हीयाच्चततोवज्रंजराव्याधिविनाशनम् ॥
कफवातकरंचाभ्रमशुद्धंमृत्युदंस्मृतं ॥ ६० ॥

टीका–इसवास्ते वज्रही ग्रहण करना. जो जराव्याधिका टालनेवाला है. जो अशुद्ध है सो कफवातका करनेवाला है औ मृत्युकारक है ॥ ६० ॥

तस्माद्विशोधनंवक्ष्येविशेषामयनाशनं ॥ ग
गनंवन्हिसंतप्तंगवांक्षीरेविनिक्षिपेत् ॥ ६१॥

टीका–तिसवास्ते शोधन कहते हैं. जो विशेषकरिके रोग नाशक है. अभ्रक अग्निमें तपाइके गाइके दूधमें बुझाई लेना ॥ ६१ ॥

भिन्नपत्रंततःकुर्यात्तंडुलीयाम्लयोर्द्रवैः ॥ भावयेदष्टयामांतमेवमभ्रंविशुध्यति ॥ ६२ ॥

टीका–फिरि जुदे जुदे पत्रकरिके तांदुलिया जिसको चौलाईभी कहते हैं ओ खटाईके रसमें आठ पहर भिजाये रखना तो शुद्ध होता हे ॥ ६२ ॥

पश्चात्कांजिकसंपिष्टंकंवलेव्रीहिसंयुतं ॥ बध्वासंमर्दयेद्गाढंमृद्भांडेकांजिकान्विते ॥ ६३ ॥

टीका–फिरि कांजीमें पीसिके चतुर्थांश व्रीहिसंयुक्त कंवलमें बांधिके एक वासनमें कांजी भरिके उसमें खूब मर्दन करना ॥ ६३ ॥

मर्दनाद्यद्गलेत्पात्रेधान्याभ्रंतंविदुर्बुधाः ॥ अथवावदरक्वाथेनिःक्षिप्तंवह्नितापितम् ॥ मर्दितंसुदृढंशुष्कंधान्याभ्रादतिरिच्यते ॥ ६४ ॥

टीका–जो मर्दन करनेसें पात्रमें कवलके छिद्रनमे होइके गिर सो धान्याभ्रसेंभी उत्तम होता हे ॥ ६४ ॥

अथमारणं ॥ अर्कक्षीरेणसंपिष्टमभ्रकंगोलकीकृतम् ॥ संवेष्ट्यार्कदलैःपश्चात्संपुटेत्संनिरोधितम् ॥ ६५ ॥ पुटेग्गजपुटेनैवंसप्तवारंप्र

यत्नतः ॥कपर्दिनोजटाक्राथैरेवंदत्वापुटत्रयं॥ रक्तवर्णभवेदभ्रंसर्वकार्येषुयोजयेत् ॥ ६६ ॥

टीका—अथ मारण. अभ्रकको आंकडेके दूधमें खरल करिके गोला बनावै. फिरि आंकके पत्रऊपर लपेटिके संपुट करै ॥ ६५ ॥ फिरि गजपुट देई. ऐसे सात पुट देई. फिरि तीनि पुट वडकी जटाके काढेकी देई तौ लाल अभ्रक होता है. सर्व कार्यमें लेना ॥ ६६ ॥

अथान्यःप्रकारः ॥ मुस्ताशुंठ्योःपृथग्भागं षड्भागंशुद्धमभ्रकम् ॥ कांजिकाग्निरसैर्घस्त्रं मर्दितंपुटितंपुनः ॥ ६७ ॥

टीका—दूसरा प्रकार. नागरमोथा औ सोंठिका एक एक भाग छ भाग शुद्ध अभ्रकके कांजी औ अरनीके रसमें मर्दन करिके पुट देना ॥ ६७ ॥

मर्दयेत्त्रिफलाक्राथेनैवंदत्वापुटत्रयं ॥ वला नीरैश्चगोमूत्रैर्मुशलीशूरणद्रवैः ॥ ६८ ॥

टीका—औ तीनि गजपुट त्रिफलाके काढेमें देना. औ वरिपारा जिसकों चिकणाभी कहते हैं उसके बीजकों वल्बीज कहते हैं. तिसके रसमें औ गोमूत्रमें मुसलीके रसमें शूरणके रसमें ॥ ६८ ॥

स्वरसास्वरसैरस्यैपृथग्दत्वापुटत्रयम् ॥ ग
गनंसुमृतंरक्तंशुभ्रंरस्यमिदंभवेत् ॥ ६९ ॥

टीका–तुलसीके रसमें इनमें तीनि तीनि पुटः जुदे जुदे देई तो मरा अभ्रक रक्तवरण रमणीक होता है ६९

अथान्यःप्रकारः ॥ वज्रीक्षीरैरर्कदुग्धैर्धेनुमू
त्रैर्वलाजलैः ॥ ब्राह्मीरुदंतीस्वरसैर्वासाग्नि
शाल्मलीद्रवैः ॥ ७० ॥ कूष्मांडस्वरसैरेवंदा
डिमीसलिलैस्तथा ॥ वराक्काथेनगोजिव्हा
सलिलैरमृताद्रवैः ॥ ७१ ॥ जातीगोक्षुरमे
घानांकषायैर्बर्वरीद्रवैः ॥ शंखपुष्पीरसैर्द्राक्षा
रसैर्मूलकजैरसैः ॥ ७२ ॥ राक्षसीतुलसीमुं
डीविशालासलिलैरपि ॥ विदारीलतिकाभृं
गीमद्राक्काथैःपृथक्पृथक् ॥ ७३ ॥ सेतिका
तपनक्काथैरुग्रगंधश्रृतैरपि ॥ सप्तकृत्वोविशा
लाक्षिपाचयेदभ्रकंततः ॥ ७४ ॥

टीका–तीसरा प्रकार. सेहुड थूहरके दूधमें १, आंकडेके दूधमें २, गोमूत्रमें ३, वरियारके रसमें ४, ब्राह्मी ५, रुदंती ६, अरूसा ७, चित्रक ८, सेमर ९, मूराकोहला १०, दाडीम ११, इनके र-

समें त्रिफलाके काढेमें १२, गोभीके रसमें १३, गिलोयके रसमें १४, जाई १५, गोखरू १६, नागरमोथ १७, इनके इनके काढेमें ववईके रससें १८, शंखाहुली १९, द्राक्ष २०, मूली २१, ववई जिसके बीजको तुकमारिआं औ तुष्मरेहांमी कहते हैं. २२, तुलसी २३, गोरखमुंडी २४, इंद्रवारुणी जिसकों इंद्रायणभी औ इंद्रारुणभी कहते हैं २५, इनके रसमें विदारी कंदकी वेली २६, जलभांगरा २७, धवईके फूल जिसकों धाई औ धावडीभी कहते हैं २८, इनके काढेमें सौंफ जिसकों वरियालीभी कहते हैं २९, भिलामा ३०, लहसुन ३१, इनके काढेमें इन एकतीसौ ३१, औषधीनमें न्यारा न्यारा खरल करि करि सात सात पुट देना. इतने दोसौ दसपु २१७ होइंगे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३॥७४॥

वटारोहकषायेणकुकुंद्रुस्वरसैस्तथा ॥ कपित्थस्याम्लिकायाश्चफलोद्भवरसेनच ॥ ७५॥ पृथग्विंशपुटैरेवंपाचयेद्गगनंततः ॥ निंबूकस्वरसैःपंचदशकृत्वोविपाचयेत् ॥ ७६ ॥ तत्संख्याकैःपुटैरेवंगुडदुग्धाविमिश्रितम् ॥ गवांदधियुतंतद्वद्घृतखंडाविमिश्रितम् ॥ ७७॥

पाचयेदभ्रकंशुद्धंरम्यंरक्ततरंभवेत् ॥ चंद्रिकारहितंशुद्धमशुद्धंस्यात्तदन्वितम् ॥ ७८ ॥

टीका–फिरि वडकी जटाके काढेमें वीस पुट १ औ कुकरौंधेके रसमें २ ओ कैथके फलके रसमें जिसको कोठभी कहते हैं ३ औ आमलीके फलके रसमें ४ इन चारोंको वीस २० वीस पुट देई. फिरि निंबूके रसमें १ औ गुडयुक्त दूधमें २ औ गाइके दहींमे ३ औ घीशाकरमें ४ इन चारोंमें पंदरह १५ पदरह १५ पुट देई तौ रक्तवरण औ चमकरहित शुद्ध होता है. जो चमक होई तो अशुद्ध हे फिरिभी पुट देना चाहिए परतु यह तौ निश्चंद्रही होता है ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

पुटान्येवंसहस्राणिभिषग्बुध्याप्रदापयेत् ॥ अथवाकन्यकाद्रावैःपुटेद्वा रसहस्रकम् ॥७९

टीका–ऐसेही वैद्य अपनी बुद्धीसें हजार पुट देई. अथवा कुमारी पाठेके रसकी हजार पुट देई तौभी शुद्ध भस्म होता है ॥ ७९ ॥

अथगुणाः ॥ वातपित्तकफान्मेहकुष्ठश्वासविषभ्रमान् ॥ गुल्मकासक्षतक्षीणग्रहणीपांडुकामला ॥ भगंदरादिकान्हन्यादभ्रंकामबलप्रदम् ॥ ८० ॥

टीका—अथ गुण. वात, पित्त, कफ, प्रमेह, कुष्ठ, श्वास, विष, भ्रम, गुल्म, कास, क्षतक्षीण, संग्रहणी, पांडु, कामला औ भगंदर आदिक रोग दूरि करिके काम औ बलकों देता है ॥ ८० ॥

अथापक्वदोषाः ॥ अपक्वमभ्रकंयत्स्यात्तथा चंद्रिकयान्वितम् ॥ करोतिविविधान्रोगा न्प्राणानपिक्षयंनयेत् ॥ ८१ ॥

टीका—अथ अपक्वदोष. जो अपक्व औ चमकयुक्त अभ्रक है सो नानाप्रकारके रोग करता है. औ प्राणनकाभी घातक होता हे ॥ ८१ ॥

अथतच्छांतिः ॥ पिष्ट्वांबुनापिवेत्कांतेधात्री फलमतंद्रितः ॥ अपक्वाभ्रविकारेणमुक्तःस्या द्दिवसत्रयैः ॥ ८२ ॥

टीका—इसवास्ते इसकी शांति कहते हैं. अथ शांति. आमला जलसें पीसिके तीनि दिन पिये तौ अभ्रकविकार जाई ॥ ८२ ॥

अथानुपानं ॥ गुंजैकंवाद्विगुंजंवात्रि गुंजंगगनंनरः ॥ गुंजाचतुष्टयंवापि भक्षयेद्रोगशांतये ॥ ८३ ॥

टीका–अथ अनुपान. शुद्ध अभ्रकभस्म एक रती वा दो वा तीन वा चारितक वलदेषिके रोगशांतिके वास्ते भक्षण करना ॥ ८३ ॥

मधुपिप्पलिसंयुक्तंकासंश्वासंविषंभ्रमम् ॥ नाशयेत्कामलांगुल्मंपांडुंसंग्रहणीमपि ॥ ८४ ॥ कफक्षयंप्रमेहंच ललनोत्तमभूषणे ॥ वातपित्तकफान् कुष्ठंजीर्णज्वरमरोचकम् ॥ ८५ ॥

टीका–कास, श्वास, विष, भ्रम, कामला, गुल्म, पांडु, संग्रहणी, कफक्षय, प्रमेह, वात, पित्त, कफ, कुष्ठ, जीर्णज्वर, अरोचक इन रोगोंकी शांतिकेवास्ते मधु पिप्पलीमें ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

विडंगत्र्यूषणैर्युक्तंवल्लमभ्रंनिषेवितम् ॥ पांडुसंग्रहणीशूलक्षयश्वासारुचिप्रणुत् ॥ ८६ ॥ तथामकुष्ठमंदाग्निकोष्ठरुक्कासमेहनुत् ॥ नवकंजविशालाक्षि शुक्रवृद्धिविवर्धनम् ॥ ८७ ॥

टीका–पांडु, संग्रहणी, शूल, क्षय, श्वास, अरुची, आम, कुष्ठ, मंदाग्नि, कोष्ठरोग, कास, प्रमेह,

इन रोगोंमें वायविडंग, सोंठि, मिरच, पीपरी, इनके चूरणमें देई. औ इसी अनुपानमें धातु औ बुद्धीकी वृद्धि करता है ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

शिलाजतुकणाचूर्णमाक्षिकैःसर्वमेहनुत् ॥ क्षयंस्वर्णान्वितंहंतिधातुवृद्धिंकरोतिच ॥ ८८॥

टीका—शिलाजित, पीपरीचूर्ण सहतसंग प्रमेहकों हरता है. क्षयकों सोनेके वरखसंग नाश करता है. औ धातु बढाता है ॥ ८८ ॥

कायस्थागुडसंयुक्तंवातलोहितकंजयेत् ॥ रक्तपित्तंनिहंत्यभ्रंद्राविडीसितयान्वितम् ८९

टीका—वातरक्तमें गुड हरडसंग. रक्तपित्तमें इलायची शकरसंग ॥ ८९ ॥

त्रिकटुत्रिफलात्रिसुगंधसितागजकेशरमाक्षिकसंयुतखम् ॥ व्यतिपांडुगदंक्षयमुत्पललोचनिसत्पथगाग्रसरेललने ॥ ९० ॥

टीका—सोंठी, मिरच, पीपरी, हरड, आमला, बहेडा, तज, पत्रज, इलायची, शकर, नागकेशर, इनका चूरण औ सहतमें अभ्रक लेई तौ पांडु औ राजयक्ष्मा जाई ॥ ९० ॥



भूधात्रीशर्कराव्यालदंष्ट्रैलाक्षीरसंयुतम् ॥ मूत्रकृच्छ्रंप्रमेहंचहंत्यभ्रंनवयौवने ॥ ९१ ॥

टीका–भूआमला, शक्कर, गुखरू, इलायची, इनका चूरण औ गाईके दूधमें अभ्रक लेई तौ मूत्रकृच्छ्र प्रमेह जाई ॥ ९१ ॥

सितोपलाऽमृतासत्वयुक्तंमेहगणंजयेत् ॥ मध्वाज्याग्र्यारजोयुक्तंवीर्यकृन्नेत्ररोगहृत् ९२॥

टीका–प्रमेहमात्रमें गिलोइका सत्व, औ मिश्रिसंग. त्रिफलाका चूर्ण औ मधुघीसंयुक्त लेई तौ वीर्यवृद्धि होई औ नेत्ररोग जाई ॥ ९२ ॥

आरुष्करयुतंहन्यादर्शांसिविविधानिवै ॥ धातुस्तंभकरंभंगासंयुतंमधुरस्वरे ॥ ९३ ॥

टीका–भिलावायुक्त नानाप्रकारका अर्शरोग हरै. भांगसंग वीर्यस्तंभन करै ॥ ९३ ॥

भार्ङ्गीपौष्करविश्वाश्वगंधामध्वन्वितंजयेत् ॥ वातंकट्फलपांचालीमधुयुक्तंकफामयम् ९४

टीका–भारंगी, पुष्करमूल, सोंठी, असगंध, जिसको आसंधभी कहते हैं. इनका चूरण औ अभ्रक मधुसंग लेई तौ वातके रोग जाई. कायफल, पीपरी, मधुसंग लेई तौ कफरोग जाई ॥ ९४ ॥

सर्वक्षारयुतंवह्निंदीपयेदलिकुंतले ॥ मूत्रकृच्छ्रंतथामूत्राघातकंघातयेद्ध्रुवम् ॥ ९५ ॥

टीका—सर्व क्षारोंमें लेई तौ मंदाग्नि, मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात जाई ॥ ९५ ॥

लवंगमधुसंयुक्तंशुक्रवृद्धिप्रदंप्रिये ॥ गोदुग्धशर्करायुक्तंपित्तातंकप्रणाशनम् ॥ ९६ ॥

टीका—लवंग औ मधुसंग लेई तौ धातुवृद्धि होई. गोदुग्ध औ शकरसंग पित्तरोग हरे ॥ ९६ ॥

अन्यान्रोगान्जयेद्युक्त्यागगनेनभिषग्वरः ॥ निश्चयंमृगशावाक्षिप्रिये प्राणकुमारिके ॥ ९७ ॥

टीका—और रोगोंको वैद्य अपनी बुद्धिसें अभ्रक अनुपानयुक्त करिके देई तौ जीतै. हे प्राणकुमारी,यह निश्चै है ॥ ९७ ॥

अथमनःशिलाशुद्धिः ॥ अजामूत्रेशिलापाच्यादोलकेदिवसत्रयम् ॥ तप्तपात्रेततःपाच्याक्षणैकंचविशुद्ध्यति ॥ ९८ ॥

टीका— अथ मनःशिलाविधि. तत्रशुद्धि. मनशील बकरीके मूत्रमें दोलायंत्रमें तीनि दिन पचावे.

फिरि गरम खपरा वा कुरछी वा तवापर छिनभरि राखै तौ शुद्ध होई ॥ ९८ ॥

अथान्यः ॥ शृंगवेरस्यतोयेनाऽगस्तिपत्रांबुनाऽथवा ॥ सप्तकृत्वःपृथग्भाव्यामनोन्हा शुद्धिमृच्छति ॥ ९९ ॥

टीका–दूसरी औ तीसरी विधि. आदेके रसमें अथवा अगस्तीके रसमें सात भावना देई तौ शुद्ध होई ॥ ९९ ॥

अन्योपिप्रकारः ॥ गवांतक्रेणयामेकंमर्दनाच्छुभखल्वके ॥ नागमाताविशुद्धास्याच्छुद्धचित्तेवरांगने ॥ १०० ॥

टीका–चौथी विधि. गाईके मठामें एक पहर खरल करै तोभी मनशील शुद्ध होता है ॥ १०० ॥

अथगुणाः ॥ ज्वरंनेत्राभयंश्वासंकासंभूतभयंकफम् ॥ कृच्छ्रंविषंमनोगुप्ताहंतिकुष्ठादिकामयान् ॥ १ ॥

टीका–अथ गुण. ज्वर, नेत्ररोग, श्वास, कास, भूतपीडा, कफ, कृच्छ्र, विष औ कुष्ठादि रोगोंको हरता है ॥ १ ॥

अथानुपानं॥ पिप्पलिनिंबफलाभ्यांशिलावि

मर्यासुकेरिवाल्लरसैः ॥ गुटिकाज्वरामयघ्नी त्रिदोषभूतंज्वरंनिहंत्येव ॥ २ ॥

टीका—अथ अनुपान. पीपरी, नींबके फल, मनशील करेलाके रसमें घोटिके चनाप्रमाण गोली त्रिदोषज्वरमें देना ॥ २ ॥

शिलायाद्विगुणंशंखमर्धंमारीचकंरजः ॥ सैधवंस्याच्चतुर्थांशचूर्णंनेत्रगदापहम् ॥ ३ ॥

टीका—मनःशिला एक भाग, शंख दोभाग, मिरच मनशीलसें आधा, सैंधवलोन मिरचसें आधा भाग इनका सूक्ष्म चूरन नेत्ररोगकों नाश करता है ॥ ३ ॥

शुक्रंतिमिरकंहंतिमाक्षिकेणचपिच्चटम् ॥ अर्बुदंदधितोयेनकंजाक्षिप्रमदोत्तमे ॥ ४ ॥

टीका—फूली तिमिर सहतसंग हरता है. औ चिपक्कापनभी जाता है. दहींके पानीसें अर्बुदरोग हरता है ॥ ४ ॥

कणामरिचसंयुक्ताशिलापिष्टांबुनांजिता ॥ भूतावेशहरानेत्रेसन्निपातज्वरापहा ॥ ५ ॥

टीका—पीपरी मिरचसंग जलमें पीसि गोलि करिके अंजन करनेसें भूत औ सन्निपात जाता है ॥ ५ ॥

भार्ङ्गीविश्वान्वितंश्वासंविपंस्वर्णसमन्वितं ॥

वासकस्वरसव्योषैःकफंकासंजयेच्छिला ॥६॥

टीका—वासकों भारगी सोंठिसंयुक्त; सोनसग-विषकों; सोंठी, मिरच, पीपरी, अरूपेके रसमें कफ औ कासकों हरती है ॥ ६ ॥

शिलैलार्जुनकासीसगृहधूमाब्दसर्जकैः ॥ स रोध्ररोचनैर्लेपःसर्षपःस्नेहसंयुतः ॥ ७ ॥ कि लासंकिटभंदद्रुकुष्ठंपामांभगंदरम् ॥ इंद्रलु प्तमथार्शांसिहन्यादेवनृणामियम् ॥ ८ ॥

टीका—मनशील, इलायची, अर्जुनवृक्ष जिसकों कौहाभी कहता हैं तिसकी छाल, काशीस, घरका धुवां, नागरमोथ, राल, लोध, गोरोचन सरसोंका तेल लेप करनेसें किलासरोग, किटभरोग, दाद, कुष्ठ, खाज, भगंदर, इंद्रलुप्त, अर्श इतने रोग जाते है ॥ ७ ॥ ८ ॥

अथाशुद्धदोषास्तच्छांतिश्च ॥ अशुद्धाकुनटी कुर्याद्भ्रांतिभ्रांत्यादिकानूगदान् ॥ तच्छांत्यै त्रिदिनंपीत्वामधुक्षीरंविशुध्यति ॥ ९ ॥

टीका—अथ अशुद्ध दोष औ दोषकी शांति. अशुद्ध मैनशील उलटी भ्रांत्यादि रोग, करता है. तिसकी शांतिकेवास्ते तीनि दिन मधु दुध पीवें ॥ ९ ॥

अथखर्परशुद्धिः ॥ रसकंनरमूत्रेणपा
चयेद्दिनसप्तकम् ॥ दोलकेवाथगोमू
त्रेशुद्धिमायातिखर्परः ॥ ११० ॥

टीका—अथ खपरियाशुद्धि. खपरियाको दोलायंत्रकरिके मनुष्यके मूत्रमें सात दिन पचावै अथवा गोमूत्रमें पचावै तौ शुद्ध होई ॥ ११० ॥

अथगुणाः ॥ रसकोहरतेरोगान्रक्त
दोषंगुदामयम् ॥ जीर्णज्वरमतीसा
रंप्रदरादिगदानपि ॥ ११ ॥

टीका—अथ गुण. खपरिया गुदाके रोग, जीर्णज्वर, अतिसार, प्रदर इत्यादि रोग हरता है ॥ ११ ॥

अथदोषास्तच्छांतिश्च ॥ अशुद्धाद्रसकाद्रो
गाजायंतेचेत्कथंचन ॥ गोमूत्रेणशमंयांति
प्रकाशेनयथातमः ॥ १२ ॥

टीका—अथ दोष औ शांति. जो अशुद्ध खपरिया सेवन करै तौ अनेक रोग होई. तौ गोमूत्र पीनेसें शांत होते है ॥ १२ ॥

अथानुपानं ॥ एकांशंमारिचंचूर्णंद्वावंशौरस
कस्यच ॥ तद्वयोरष्टमांशेननवनीतेनमर्दयेत्

त् ॥ १३ ॥ पश्चान्निंबुकनीरेणघृतंयावन्निग च्छति ॥ मर्दयेच्चततःकृत्वावटींवल्लमितामि यम् ॥ १४ ॥ कणामाक्षिकसंलीढानाशये द्विपमज्वरान् ॥ ज्वरंधातुस्थितंघोरमर्शांसि प्रदरंतथा ॥ १५ ॥ जीर्णज्वरंनेत्ररोगंपित्ता तिरक्तवैकृतिम् ॥ रक्तातीसारकंहन्यात्पथ्ये क्षीरोदनंहितम् ॥ १६ ॥

टीका—अथ अनुपान. एक भाग मिरचका चूरण, दोनभाग खपरियाके, दोनोंके आठवे अंश गाईके माखनमें, मर्दन करे. पीछे नींबूके रसमें मर्दन करे जबतक घी न सुखा होई जब चिकनई जाती रहे तब रती तीनिकी गोली बनावे. गोली एक मधु पीपरीसंग खाई तौ विषमज्वर, धातुगतज्वर, अर्श प्रदर, जीर्णज्वर, नेत्ररोग, पित्तरोग, रक्तविकार, रक्तातिसार इतने रोग जाई. पथ्यमें दूधभात अथवा दूधरोटी देना ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

इतिश्रीपंडितरघुनाथप्रसादविरचितायामनुपानतरंगिण्यामुपधात्वनुपानकथनेद्वितीयावीचिः ॥ २ ॥

टीका–इति श्रीरमणविहारिकृतायामनुपानतरंगिणीटीकायां नौकाख्यायां द्वितीयः कोष्टकः ॥ २ ॥

अथरसशोधनमारणानुपानानि
तत्र पारदविधिः तत्रादावुत्पत्तिः ॥

यदादेवाविधिंगत्वातारकासुरपीडिताः ॥ तदोवाचामरान्ब्रह्माशृणुतादितिनंदनाः ॥१॥

टीका–अथ रसोंका शोधन, मारण, अनुपान, कहते हैं. तहां प्रथम पारेका कहते हैं, तहांभी प्रथम पारेकी उत्पत्ति कहते हैं. जब देव तारकासुरदैत्यकरिके पीडित होते भए, तब ब्रह्माके पास जायके विज्ञापन करते भए की, हे महाराज, हमकों तारकासुर अति दुःख देता है. तब देवतोंसें ब्रह्मा बोले की, हे अदितिके पुत्र तुम सुनो ॥ १ ॥

शिवशुक्रोद्भवेनायंमरिष्यतिरिपुर्हिवां ॥ तदादेवाःसमाजग्मुःशंकरंलोकशंकरम् ॥ २ ॥

टीका–महादेवके वीर्यसें उत्पन्न भए पुत्रसें तुह्मारा शत्रु तारकासुर मरैगा. ऐसा सुनीके देवता महादेवजीके पास गए ॥ २ ॥

विवाहंकारयामासुःपार्वत्यासहधूर्जटेः ॥ पश्चात्तयोर्गतःकालःसुरतंकुर्वतोर्महान् ॥ ३ ॥

टीका–औ शिवका विवाह पार्वतीके संग करावते भये. फिरि शिव पार्वतीकों सुरत करते करते वहुत काल वितीत भया ॥ ३ ॥

तदाग्निंहिपुरस्कृत्यदेवाजग्मुस्त्रिलोचनम् ॥
दृष्ट्वातान्त्रीडितादेवीहरंत्यक्त्वारतोत्सुका ४

टीका–तव सव देवता अग्निकों अग्रकरिके शिवजीके पास गए तव पार्वती देवतनकों देखिके लज्जा करिके महादेवकों छोडिके अलग जाई वैठी, परंतु मनमें सुरत इच्छा वनी रही ॥ ४ ॥

रेतोऽपतत्तदाभूमौतद्गृहीत्वाहुताशनः ॥ तेनतप्तःपुनःक्षिप्त्वादिक्षुभूम्यांपृथक्पृथक्॥५

टीका–तव महादेवका वीर्य पृथ्वीपर पडता भया. सो वीर्य अग्नीनें ग्रहण किया. फिरि उस वीर्यके तेजकरिके तप्त भया अग्निभी चारों दिशोंके विषे पृथ्वीमें डालि दिया ॥ ५ ॥

तत्रजातोरसःकांतेकांताधररसप्रिये ॥ गौरीशप्तउदीच्यादित्रिदिशास्थोनकार्यकृत् ॥६॥

टीका–तहां पारा उत्पन्न भया. सो पारा पार्वतीकी शापकरिके उत्तर पूर्व दक्षिण दिशामें स्थित रसादि किया योग्य नहीं है ॥ ६ ॥

पश्चिमायांतुयज्जातःसरसःसर्वसिद्धिदः ॥ एषोत्पत्तिःसमाख्यातारसज्ञेस्यरसस्यवै॥७॥

टीका—जो पश्चिममें पैदा भया सो सर्व कार्य योग्य है. हे रसके जाननेवाली प्यारी, यह पारेकी उत्पत्ति कही ॥ ७ ॥

वर्णभेदंप्रवक्ष्यामितंश्रृणुष्वसमाहिता ॥ श्वेतोविप्रोविशालाक्षिरक्तस्यात्क्षत्रियः प्रिये ॥ ८ ॥ पीतवर्णोरसोवैश्यःश्यामः शूद्रोऽलिकुंतले ॥ ब्राह्मणःश्रेष्ठएतेषांशो धितःसर्वरोगहृत् ॥ ९ ॥

टीका—अब वर्णभेद कहता हौं सो सावधान व्हैके सुनो. हे विशालनेत्रे, श्वेत पारा ब्राह्मण है. रक्तवर्ण क्षत्रिय है. पीवला वैश्य, औ श्याम शूद्र है इनमें ब्राह्मण श्रेष्ठ है. शुद्ध भयेसें सर्व रोग हरता है ॥ ८ ॥ ९ ॥

अथरसेदोषाः ॥ नागोवंगोऽग्निचांचल्यमस ह्याग्निर्विषंमलम् ॥ गिरिश्चैतेमहादोपारसे ऽशुद्धेवदंतिहि ॥ १० ॥

टीका—अथ पाराके सोभाविक दोप कहते हैं. नाग १, वंग २, अग्निमें रखनेसें चंचलता ३, औ अग्नि-

कों नसहना ४, विष ५, मैल ६, पर्वतका भाग ७, ए सात दोष अशुद्ध पारेमें सदा रहते हैं ॥ १० ॥

अशुद्धोजाड्यतांकुष्ठंदाहंवीर्यप्रणाशनं ॥ मूर्छांस्फोटंचमृत्युंचक्रमात्कुर्यान्मलैरसः ॥११

टीका—अथ दोषोंका कार्य. अशुद्ध पारा इतनें रोग करता है. नागसें जडता १, वंगसें कुष्ठ २, अग्निकी चंचलतासें दाह करता है ३, अग्निकी असह्यतासें वीर्यनाश करता है ४, विषसें मूर्छा ५, मैलसें देहमें फोडे ६, पर्वतके भागसें मृत्यु करता है ७, इति ॥ ११ ॥

अथतच्छोधनं॥ दरदंनिंबुनीरेणदिनमेकंविमर्दयेत् ॥ ऊर्ध्वपातनकेयंत्रेवह्निंदत्वात्रियामकम् ॥ १२ ॥ स्वांगशीतेसमुद्घाट्यलग्नमूर्ध्वंरसंनयेत् ॥ पुनर्विंवस्यानिंवोर्वारसैर्यामंविमर्दितः ॥ कंचुकैर्नागवंगाद्यैर्मुक्तःस्यात्पारदोत्तमः ॥ १३ ॥

टीका—अथ शोधन कहते हैं. हिंगलूकों निंबूके रसमें एक दिन मर्दन करना. फिरि डमरूयंत्रमें तीनि पहरकी आंच देना. फिरि आपसें ठंढे होनेपीछे उपरके पात्रमें लगा पारा लै लेना. फिरि निंर या

निंबूके रसमें एक पहर मर्दन करनेसें नागवंगादिक कांचलीसें छूटा पारा शुद्ध होता है ॥ १२ ॥ १३ ॥

अथान्यः ॥ रसोनराजिकेपिष्ट्वामूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ॥ तत्रसूतंसुसंरुध्यस्वेदयेत्कांजिकैर्त्र्यहम् ॥ १४ ॥

टीका—दूसरा प्रकार. लहशून औ राई पीसिके दो मूसी बनावे. मूसिकों घरियाभी कहते हैं. उन मूसिके संपुटमें पारेकों बंद करिके कांजीमें दोलायंत्र करिके स्वेदन करै ॥ १४ ॥

ततःकुमारिकानीरैर्मर्दयेद्वासरंरसम् ॥ चित्रकस्वरसैःपश्चाद्वासरंमर्दयेत्ततः ॥ १५ ॥ काकमाचीद्रवैर्घस्त्रंवराक्काथैस्ततोदिनम् ॥ ततस्तेभ्यःसमुद्धृत्यरसंप्रक्षाल्यकांजिकैः ॥१६

टीका—फिरि कुमारिपाठेके रसमें एक दिन खरल करै. फिरि एक दिन चित्रकके रसमें खरल करे. फिरि एक दिन काकमाचीके रसमें जिसको मकोई औ पीचूडीभी कहते हैं. फिरि एकदिन त्रिफलाके काढेमें खरल करिके कांजीसें धोवै ॥ १५ ॥ १६ ॥

ततःखल्वेविनिःक्षिप्यतदर्धसैंधवान्वितम् ॥ दिनैकंनिंबुनीरेणमर्दयेदयिवल्लभे ॥ १७ ॥

टीका–फिरि पारासें आधा सैंधव मिलाइके नीं-बूके रसयुक्त एक दिन खरल करै ॥ १७ ॥

ततःसूतसमानेतान्गृहीत्वानवसादरम् ॥ राजिकांचरसोनंचप्रियेचैतैस्तुषांबुवा ॥ १८ ॥ संमर्यचक्रियांकृत्वाशोपयित्वाप्रलेपयेत् ॥ हिंगुनाशोषयेत्पश्चादूर्ध्वपातनकेन्यसेत् ॥ १९ ॥

टीका–फिरि पारेकी बरोबर नवसागर, राई, लहशून इनकों लैके इनमें मर्दन करिकै टिकिया बनाइके सुखावे, फिरि हिंगेलपन करे, फिरि सुखाइके डमरूयंत्रमें धरै ॥ १८ ॥ १९ ॥

तांचक्रिकामधस्थाल्यांपूरयेल्लवणेनहि ॥ अधःस्थालींततोमुद्रांदद्याद्दृढतरांबुधः ॥ २० ॥

टीका–नीचेकी हाडीमें वह टिकडी धरिकै औ उस हडीकों लवणसें भरि देई. फिरि दृढ मुद्रा देई ॥ २०

विशोष्यस्थापयेच्चुल्ल्यामधोवह्निंत्रियामकं ॥ दत्वातीक्ष्णमुपर्यंबुनिर्षिचेत्सुप्रयत्नतः ॥ २१

टीका–फिरि सुखावै. सुखे पीछे चूल्हेपर रखिकै तीनि पहर तीक्ष्ण अग्नि देई. औ उपरकी हाडी जलसें ततवीरसाथ भीजी राखै ॥ २१ ॥

स्वांगशीतंसमुद्घाट्यातिर्यक्कृत्वाप्रयत्नतः ॥

अथोर्ध्वभांडसंलग्नंगृण्हीयाद्रसमुत्तमं॥२२॥

टीका—स्वांगशीतल भये पीछे तिरछी करिके यत्नसें खोलै. ऊपरकी हंडीमें लगा शुद्ध पारा लेलेई॥२२॥

पश्चाद्दलप्रकर्षायस्वेदयेद्दोलयंत्रके ॥ सिंधूत्थचूर्णगर्भस्थंवस्त्रेबध्वोत्तमोरसः॥ २३ ॥

टीका—फिरि सैंधवके चूर्णके वीचमें रखिके वस्त्रमें बांधिके दोलायंत्रमें केवल जलसें स्वेदन करै, तौ पारा वलवान होता है ॥ २३ ॥

अथरसजारणं ॥ तत्रसामान्यतःषड्गुणबलिजारणम् ॥ ससूतमल्पकंभांडंवालुकायंत्रकेन्यसेत् ॥ षड्गुणंगंधकंतत्रक्षिपेदल्पाल्पकंशनैः ॥ २४ ॥

टीका—अथ रसजारण, तहां सामान्यसें छ गुना गंधक जारण कहते हैं. छोटे मृत्तिकाके पात्रमें पारा रखिके वालुकायंत्रमें धरै. फिरि छ गुना गंधक थोरा थोरा ऊपरसें डारता जाई ॥ २४ ॥

द्रवीभूतबलिंज्ञात्वाशीघ्रमुत्तार्ययत्नतः॥स्वांगशीतेदृढंगंधेस्फोटयित्वानयेद्रसम् ॥ २५॥

टीका—जब गंधक गलिजाई तब धीरेसें उतारि-

लेई. जब ठंढा होई तब गंधककों फोरिके शुद्ध पारा निकासि लेई ॥ २५ ॥

सर्वरोगहरःसूतोहरःपापहरोयथा ॥ पतिप्राणप्रियेकांतेयत्तेहरिहरार्चने ॥ २६ ॥ (यत्तासावधाना) ॥

टीका–सो पारा सर्व रोगका हरनेवाला है, जैसे महादेव सर्व पाप हरनेवाला है ॥ २६ ॥

अथषड्गुणगंधकजारणफलं ॥ समांशेगंधकेजीर्णेशुद्धाच्छतगुणोरसः ॥ गंधकेद्विगुणेजीर्णेसर्वकुष्ठनिषूदनः ॥ २७ ॥

टीका–अथ छगुणगंधक जारणेका फल. पारेके समान गंधक जीर्ण होनेसें शुद्धसेंभी सौ गुणा उत्तम पारा होता है. दूना गधक जीर्ण होनेसें कुष्ठनाशक होता है ॥ २७ ॥

गंधकेत्रिगुणेजीर्णेजाड्यहारसउत्तमः ॥ जीर्णेचतुर्गुणेगंधेवलीपलितजिद्रसः ॥ २८ ॥

टीका–त्रिगुण गंधक जीर्ण होनेसें जडताकों हरता है. चौगुणा जीर्ण होनेसें वलीपलितनाशक होता है ॥ २८ ॥

गंधेबाणगुणेजीर्णेक्षयक्षयकरःशिवः ॥ गंधे रसगुणेजीर्णेसर्वांतकप्रणाशनः ॥ २९ ॥

टीका–पंचगुण जीर्ण होनेसें क्षयरोगहारक होता है. छगुणा गंधक जीर्ण होनेसें सर्व रोगहारक होता है ॥ २९ ॥

सत्यंसत्यंशिवोदेवीमुवाचस्वप्रियामये ॥ त्वां वदाम्यरविंदाक्षिहितायजगतामपि ॥ ३० ॥

टीका–हे प्राणकुमारि, यह सत्य है. शिवजीनें आपकी प्रिया पार्वतीसें कहा है. मैंभी जगतके उपकारके वास्ते तुमसें कहता हौं ॥ ३० ॥

जारणस्यविशालाक्षिशृणुमाहात्म्यमुत्तमम्॥ सर्वपापेप्रणष्टेहिप्राप्यतेसूतजारणम् ॥३१॥

टीका–अब जारणको माहात्म्य सुनौ. जब सर्व पाप नष्ट होते हैं तब पारेका जारण प्राप्त होता है ॥३१॥

तस्मिन्प्राप्तेहिविज्ञानंप्राप्यतेमुक्तिलक्षणं ॥ यथासूर्योदयेप्राप्तेप्रकाशंप्राप्यतेजनैः ॥३२

टीका–तिसके प्राप्ति होनेसें मुक्तिलक्षण विज्ञान प्राप्त होता है. जैसे सूर्योदयसें प्रकाश प्राप्त होता है ३२

यावद्दस्राणिवन्हिस्थंरक्षयेत्पारदंप्रिये ॥ तावदब्दसहस्रांतंशंभुलोकेमहीयते ॥ ३३ ॥

टीका—इनके संग पारा मिलाइके धानके तुषकी अग्निपर खरल रखिके तीनि दिन मर्दन करै तो पारा भूखा होता है. औ सर्व धातकों खाता हे ॥ ४० ॥

अथमारणविधिः ॥ गंधकंनवसारंचसौराष्ट्रीं धूमसारकम् ॥ रसंभागैःसमान्सर्वान्याममम्लेनमर्दयेत् ॥ ४१ ॥ मृद्वस्त्रवेष्टितायांतत्काचकूप्यांविनिःक्षिपेत् ॥ वक्रेकूप्याहढांमुद्रांदत्वासम्यग्विशोषयेत् ॥ ४२ ॥

टीका—अथ मारण. गंधक, नवसादर, सोरठी, माटी जो सोरठी माटी न मिले तो फटकरी घरमें-का धुंवां औ पारा ये समभाग लेंई एक पहर कोइभी खटाइसें मर्दन करे पीछे कपरमाटी करीभई शीशीमें भरे. फिरि शीशीके मुखमें दृढ मुद्रा देके सुखावे ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

अधश्छिद्रान्वितेभांडेपंचास्येमृन्मयेन्यसेत्॥ कूपिकांवालुकापूरैःपूरयेदागलंचताम्॥४३॥ पंचास्येविस्तृतमुखे ॥

टीका—फिरि एक कूंडागहिरा मट्टीका लेई जिसके नीचे छिद्र करै जिसपर शीशी रखिके शीशीके गलेपर्यंत वालू रेत भरे ॥ ४३ ॥

चुह्ल्यांसंन्यस्यशनकैरग्निंदत्वाग्धिया मकं ॥ पश्चाद्विवर्धयेद्वह्निंक्रमात्सम्य क्प्रयत्नतः ॥ ४४ ॥ एवंद्वादशभि र्यामैःपारदोभस्मतांव्रजेत् ॥ स्वांग शीतांहितांकूपींस्फोटयेन्मधुरस्वरे ॥४५

टीका—फिरि धीरेसें चूल्हेपर धरै. फिरि चारी पहरकी मद आंच देई फिरि तेज आंच क्रमसें बढावै. ऐसे वारह १२ पहरकी आंचसें पारा भस्म होता है. फिरि आपसें शीतल भएपर शीशीकों फोडै ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

ऊर्ध्वेलग्नंत्यजेद्गंधमधस्थंपारदंमृतं ॥ गृहीला सर्वकार्येपुयोजयेदामयापहम् ॥ ४६ ॥

टीका—शीशीमें ऊर्ध्व लगा गधक छोडि देई औ नीचे मरा पारा लैलेई सो सर्व कार्य करनेवाला है. औ रोगनाशक है ॥ ४६ ॥

अथान्यःप्रकारः ॥ काष्ठोदुंबरिकादुग्धैर्मर्दये त्पारदंततः ॥ अपामार्गस्यवीजानांमूषायु ग्मेविमुद्रयेत् ॥ ४७ ॥

टीका—अथ तीसरा प्रकार. पारेको कठूमरीके दू-

धमें मर्दन करिके गोळा बनाइ. फिरि अपामार्गके वीजोंके दो मूसै बनावे. जिसमें पारेका गोला धरै॥४७॥

द्रोणपुष्पीप्रसूनानांविडंगमिरिमेदयोः ॥ कल्कैर्मूषांविलिप्यैवपरितोंगुलमात्रकम्॥४८॥

टीका–फिरि द्रोणपुष्पी जो गूमा उसके पुष्प औ वायविडंग औ खैर इनकी लुगदी मूसीके चौतरफ एक अंगुल फिरती लगावे ॥ ४८ ॥

तद्गोलंमृन्मयेन्यस्यमूषायुग्मेविसुद्रयेत् ॥ मृद्वस्त्रैःशोष्यनागाव्हेपाचयेद्धिपुटेरसं ॥ भस्मीभूतंरसंनेयंयोजयेत्सर्वकर्मसु ॥ ४९ ॥

टीका–फिरि उसको माटीके संपुटमें रखिके कपरौटी करि सुखाइके गजपुट आंच देई तो पारा-भस्म सर्वकार्य योग्य होई ॥ ४९ ॥

अथान्यःप्रकारः ॥ मलयूदुग्धसंमिश्रंरसराजंविमर्दयेत् ॥ तद्दुग्धमिश्रहिंगोश्चमूषायुग्मेविसुद्रयेत् ॥ ५० ॥

टीका–अथ चौथा प्रकार. पारेकों कठूमरिके दूधमें मर्दन करै औ उसीके दूधमें हींग घोटिके दो मुसी बनावे तिसमें वह पारा भरै ॥ ५० ॥

तांमूषांमृन्मयेरुध्वांमूषायुग्मेतुवेष्टयेत् ॥ मृ

द्रवैःसप्तभिः पश्चाच्छोपयेदातपेभृशम्॥५१
पुटेन्मृदुपुटेयत्नाद्रसोभस्मत्वमाप्नुयात् ॥ न
वयौवनसौंदर्यभूषणेमदिरेक्षणे ॥ ५२ ॥

टीका–फिरि उस मूषाकों माटीके संपुटमें वंद करिके सात कपरौटी करै. फिरि सुखाईके हलकी-सी पुट देई तौ भस्म होई ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

अथान्यः ॥ नागवल्लीरसैःपिष्टःकर्को
टीकंदगर्भगः ॥ मृन्मूषासंपुटेपक्कोर
सोयात्येवभस्मताम् ॥ ५३ ॥

टीका–अथ पांचमा प्रकार. नागवेलीके पानके रसमें खरल करिके वांझकंकोडीके मूलमें संपुट क-रिके पुट देई तौ भस्म होई ॥ ५३ ॥

अथगुणाः ॥ रसोरसरसैर्युक्तःशोधितो
भस्मसात्कृतः ॥ त्रिदोषशमनःकामवर्ध
नःसर्वरोगहृत् ॥ ५४ ॥

टीका–अथ साधारणगुण. पारा छ रसकरिके युक्त है सो पारा शुद्ध भस्म कियाभया त्रिदोपकों शांत करता है, कामदेवकों वढाता है औ सव रो-गोंकों हरता है ॥ ५४ ॥

कामिनीदर्पदलनःसुधास्पर्धीसुवर्णकृत् ॥ च
क्षुष्यःस्मृतिदौर्बल्योरूपदःकृमिकुष्ठहा ५५॥

टीका—कामिनी स्त्रीके दर्पकों दूरी करता है. अ-
मृततुल्य है. सुवर्णकारक है. नेत्रनिर्मल करता है.
स्मृति ओ वल औ रूपकों देनेवाला है. कृमी औ
कुष्ठकों नाश करता है ॥ ५५ ॥

जरामरणजाड्यघ्नोयोगवाहीवरांगने ॥ दह
त्यग्निस्तृणानीवधातुस्थानामयान्रसः॥५६॥

टीका—जराअवस्था, अपमृत्यु औ जडता इनका
नाशक है. औ योगवाही है जैसें अनुपानसें देवै वै-
साही गुण करे जैसें अग्नि घासको जलाता है ऐसें
धातुगत रोगोंकों पारा जलाता है ॥ ५६ ॥

अथदोषाःपूर्वमेवोक्ताःतच्छांतिःकथ्यते ॥ ग
वांदुग्धयुतंपीत्वागंधकंदिनसप्तकम् ॥ पार
दस्यविकारेणमुक्तःसुखमवाप्नुयात् ॥ ५७ ॥

टीका—दोप तो पहले कहिआए. अव शांति क-
हते हैं. गाईके दूधमें सात दिन गधक पीनेसें पारद-
विकार शांति होता है ॥ ५७ ॥

अथानुपानं ॥ गुंजैकमानमारभ्यचतुर्यं

जावधिंनरः ॥ रसराजंप्रियेयुक्त्याभक्ष
येदनुपानतः ॥ ५८ ॥

टीका—अथ अनुपान. एक रतीसे लेके चारिरती-
तक पाराका सेवन बलाबल देपिके करे ॥ ५८ ॥

घृतवह्लिजचूर्णेनमगधामधुनाऽथवा ॥ मधू
च्छिष्टघृताभ्यांवासर्वरोगेषुयोजयेत् ॥ ५९ ॥

टीका—काली मरीच औ घृतसंग अथवा मधुपिप्प-
लीसंग अथवा घृतमधुसंग सर्व रोगमें देई ॥ ५९ ॥

पित्तेक्षीरसितायुक्तंपिप्पल्याथसमीरणे ॥ श्ले
ष्मण्यार्द्रकजैर्नीरैर्ज्वरेजंबीरजैरसैः ॥ ६० ॥

टीका—पित्तमें दूध शक्करसग, वातरोगमें पीपरीसा-
थ, कफमें आदेके रसयुक्त, ज्वरमें जभीरीके रसमें ॥ ६०

मधुनारक्तविकृतौदध्नातीसारकेगदे ॥ सम
तोयशृतंदुग्धंपीत्वापश्चात्सितायुतम् ॥ ६१ ॥

टीका—रक्तविकारमें मधुसाथ, अतीसारमें दही-
साथ, लैके उपरसें पथ्यमें यहकी दूधपानी मिलाइके
औटै. जब पानी सूपिके दूध रहै तिसमें शक्कर डा-
लिके पीवै ॥ ६१ ॥

रक्तातीसारकेदेयंमेघनादभवैरसैः ॥ प्रति
श्यायेकफेदुष्टेगुडसर्पिर्मरीचकैः ॥ ६२ ॥ पथ्ये

न्नंसदधिस्निग्धंकवोष्णंभोजनेहितम् ॥ हित मालिंगनंतेस्याद्यथामेमदनज्वरे ॥ ६३ ॥

टीका—रक्तातिसारमें चौलाइके रसमें चौलाइको तांडुळियाभी कहते हैं, जुपाममें औ कफांबगडेमें गुड मरीच घृतसाथ लैके सचिक्कणदहीकेसाथ गरमागरम भोजन करे तौ हित है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

वीर्यवृद्धौतथास्तंभेमाषकूष्मांडयष्टिजैः ॥ चूर्णैर्दुग्धसितायुक्तैर्मधुसर्पिर्युतैस्तुवा ॥ ६४ ॥

टीका—वीर्यवृद्धि तथा वीर्यबंधनेके वास्ते उडद, भूराकुह्मडा, जेठीमधु जिसको मुलेठी कहते हैं इनके चूरणमें पाराभस्म लैके ऊपरसें दूध शक्कर पिये अ- अथवा मधु घृतमें लेई ॥ ६४ ॥

तृतीयकेज्वरेपित्तेभ्रमेमधुसितायुतं ॥ जग्ध्वामेघामृतारक्तधान्याकजलजांपिवेत् ६५ क्वाथंकमलभूकांतातुल्यशीलेमनोहरे ॥ सुखीस्यात्तेरतावास्यचुंबनेनयथात्वहम्॥६६॥ रक्तंरक्तचंदनं ॥ जलमुशीरं ॥

टीका—तृतीयज्वर, पित्त, भ्रम इनरोगोंमें मधु- शक्करयुक्त लेई फिरि तुरतही नागरमोथ, गिलोई,

रक्तचंदन, धणा, उशीर जिसको पसमी कहते हैं उनका काढा पियें ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

रक्तपित्तेकफेकासेश्वासेक्काथेनसेवयेत् ॥ द्राक्षावासाशिवानांभोपथ्ययुक्तोवरांगने ॥ ६७ ॥ शिवाहरीतकी ॥

टीका—रक्तपित्त, कफ, श्वास, कास इनमें द्राख औ अरूसा, हरड इनके काढेमें लेईं ॥ ६७ ॥

मेदोगदेशालिमंडैर्वांबुमाक्षिकसंयुतं ॥ भजेद्गजास्यतुल्योऽपिस्थूलःकृशतरोभवेत्॥६८॥

टीका—मेदरोगमें चांवलके माडमें अथवा मधु पानीसाथ ॥ ६८ ॥

नष्टपुष्पेरक्तगुल्मेशिवशस्त्राभिधेगदे ॥ क्काथेकृष्णातिलोत्थेतुभार्गीत्रिकटुहिंगुजैः॥६९॥ चूर्णैस्तुसगुडैर्युक्तैरसभूतिनिषेविता ॥ सुखदातंयथारात्रौप्रियेशृंगारसंयुता ॥ ७० ॥

टीका—जिस स्त्रीका रज नष्ट भया होई सो औ रक्तगुल्मवाली औ शूलरोगमें भारगी, सोंठि, मिरच, पीपरी, हिंग, गुड, इनके साथ लेके उपरसें काले तिलोंका काढा पियें तो शीघ्र दुःख जाई ॥ ६९ ॥ ७० ॥

अथपथ्यं ॥ मुद्गयूषघृतंदुग्धंशाल्यन्नंसैंधवं तथा ॥ नागरंपद्ममूलंचमुस्तकंगिरिमल्लिका ॥ ७१ ॥ शाकंपौनर्नवंश्रेष्ठंमेघनादंचवास्तुकम् ॥ अभ्यंगंसुखदंस्नानंकोष्णतोयेन नित्यशः ॥ ७२ ॥

टीका–अथ पारा सेवनेमें पथ्य. मूगका जूष, घृत, दुग्ध, चावलका भात, सैंधव लवण, सोंठि, कमलकी जड, मोथा, गिरमर, पुनर्नवाका शाक, चौलाईका शाक, बथुवाकाशाक, तैलमर्दन, नित्य गरम जलसें स्नान ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

रूपयौवनसंपन्नांस्वानुकूलांभजेत्प्रियाम् ॥ तेनबुद्धिर्बलंकांतिर्वर्धतेरससेविनः ॥ ७३ ॥

टीका–ओ रूपयौवनयुक्त आपकी प्यारी स्त्रीसें संग करै तौ पारासेवनेवालेका बुद्धि, बल, कांति बढाता है ॥ ७३ ॥

अथापथ्यं ॥ कालिंगंकर्कटींचैवकूष्मांडंकारवेल्लकम् ॥ कुसुंभशाकंकर्कोटींकदलींकाकमाचिकाम् ॥ ७४ ॥

टीका–अथापथ्य. तरबूज, जिसको कलींदामी कहते हैं, काकडी, कूष्मांड, करेला, कुसुंभरा

शाक, ककोडा, केला, कंद, काकमाची, जिसै मकोई कहे हैं ॥ ७४ ॥

ककाराष्टकमित्येतद्वर्जयेद्रससेवकः ॥ जराव्याधिविनिर्मुक्तोजीवेद्वर्षशतंसुखी ॥ ७५ ॥

टीका–यै ८ ककारादि वस्तु रससेवक त्यागे तौ जराव्याधिसें मुक्त होईके सौवर्ष जिवै ॥ ७५ ॥

अथरसकर्पूरविधिः ॥ संक्षेपाद्विरसंपूर्वंशोधयेच्छुद्धमानसे ॥ पश्चाच्छुद्धेनप्रत्येकंतुल्यंकृत्वारसेनहि ॥ ७६ ॥

टीका–अथ रसकर्पूरविधि. पहले संक्षेपसें पारेको शुद्ध करे फिरि प्रत्येक द्रव्य जो अगाडी लिखि है सो पारेकी बरोबरी लेना ॥ ७६ ॥

गैरिकंखटिकामिष्टिंसौराष्ट्रींसैंधवंतथा ॥ टंकणंक्षारलवणंमृत्स्नाचूर्णंसुसूक्ष्मकम् ॥ ७७ ॥ खटिकाखरी ॥ इष्टिंईटइतिप्रसिद्धा ॥ मृत्स्नामुलतानीमट्टीतिलोकेप्रसिद्धा ॥

टीका–गेरु, खडी, ईंठ, सोरठी माठी अथवा फटकरी, सैंधव लवण, टंकण औ खारीलोण, मुलतानीमाटी इनका बारीक चूरण करे ॥ ७७ ॥

एतच्चूर्णान्वितंसूतंयाममेकंमर्दयेत्ततः ॥ ऊर्ध्वं पातनकेयंत्रेवन्हिंदद्याच्छनैःशनैः ॥ ७८ ॥

टीका–फिरि इस चूरणके संग एक पहरभरि पारेको मर्दन करै. फिर ऊर्ध्व पातनयंत्रमें मंदमंद आंच देई ॥ ७८ ॥

अहोरात्रैश्चतुर्भिश्चततोवैस्वांगशीतलं ॥ उद्घाट्योर्ध्वविलग्नंवैरसंकर्पूरसंज्ञिकम् ॥७९॥

टीका–चारि राति औ दिन आंच देई. फिरि स्वयं शीतल भये पीछे खोलिके ऊर्ध्वपात्रमें लगा रसकपूर लैलेई ॥ ७९ ॥

गृहीलासर्वरोगघ्नंवलबुद्धिविवर्धनं ॥ वृंताक शतकैःशुद्धंभक्षितंगुणवत्तरम् ॥ ८० ॥

टीका–वह रसकपूर सर्व रोगका हरनेवाला है औ वलवुद्धिका वढानेवाला है. सौवेगनमें शुद्धकिया वहुत गुण देता है. शुद्ध ऐसे करै की, वेगनके वीचमें रसकपूर धरिके थोडीसी अग्निमें पचावै, जव वेगन पकी जाई तव निकालिके दूसरे वेगनमें धरै. ऐसे सौ १०० वैगनमें शोधै ॥ ८० ॥

कस्तूरिकाचंदनदेवपुष्पैःसकुंकुमैरब्जविलो

चनेयः ॥ कर्पूरकंपारदसंभवंनानिषेवयन्सं जयतेफिरंगम् ॥ ८१ ॥

टीका—शुद्ध रसकपूर, कस्तूरी, चंदन, लवंग केसरी, समभाग मिलाइ रती एक सेवन करै तौ फिरंगरोग जाई ॥ ८१ ॥

सोपद्रवंविंदतिचाग्निदीप्तिंवीर्यंबलंपुष्टिमदीर्घकालात् ॥ स्त्रीणांसमूहंरमयेत्प्रियेत्वंमयारमस्वाद्यनिषेवितंमे ॥ ८२ ॥

टीका—औ फिरंगके उपद्रवभी जाई. भूप वढावै. वीर्यबलपुष्टि करै, स्त्रीके समूहसें रमै ॥ ८२ ॥

अथदोषाः ॥ सेवितोऽविधिनाकुष्ठंसंधिवातं कफादिकम् ॥ रसकर्पूरकःकुर्यात्तस्माद्यत्ने नसेवयेत् ॥ ८३ ॥

टीका—अथ दोष. जो विधिहीन रसकपूर सेवन करै तौ कुष्ठ, संधिशोथ, कफवात पैदा करै. इसवास्ते यत्नसें सेवन करे ॥ ८३ ॥

अथतच्छांतिः ॥ महिषीशकृतोनीरंधान्याकं वासितायुतम् ॥ पिबेन्नीरेणमुक्तःस्याद्रसकर्पूरजैर्गदैः ॥ ८४ ॥

टीका—अथ शांति. भैसके गोबरका पानी अथवा धणा औ शकर पानीसें पिये तौ रसकपूरविकार जाई ॥ ८४ ॥

अथरससिंदूरविधिः ॥ शुद्धंगंधंरसाच्छुद्धादर्धभागंविमिश्रयेत् ॥ तयोःकज्जलिकाकूप्यां काचमय्यांविनिःक्षिपेत् ॥ ८५ ॥

टीका—अथ रससिंदूरविधि. शुद्ध पारेसें आधा शुद्ध गंधक मिलाई कजली करिके आतशी काचकी शीशीमें भरे ॥ ८५ ॥

मृद्वस्त्रैःकुट्टितैःकूपींलेपयेच्छोषयेत्ततः ॥ स्थापयेद्वालुकायंत्रेवन्हिंदद्याच्छनैःशनैः ॥८६॥

टीका—फिरि शीशीके ऊपर मृत्तिका और वस्त्र खूप कूटिके लेप करिके सुखावे. फिरि वालुकायंत्रमें मंद मंद आंच देई ॥ ८६ ॥

चतुर्घस्त्रावधिंपश्चात्स्वांगशीतांहिकूपिकां ॥ स्फोटयेदूर्ध्वसंलग्नंसिंदूराभ्हंरसंनयेत् ॥८७

टीका—ऐसें चारि दिनराति निरंतर आंच देई फिरि आपसें ठढे होनेपर सीसीको फोडिके उसके ऊपरके भागमें लगा रससिंदूर लेलेवे ॥ ८७ ॥

अथान्यउत्तमप्रकारः ॥ पारदंगंधकंतुल्यंगं धार्धंनवसादरम् ॥ कज्जलींचित्रकक्काथैस्त तोन्मत्तदलांवुना ॥ ८८ ॥ कुमारीस्वरसैर्घ स्रंप्टथक्कृत्वाविमर्दयेत् ॥ काचकूप्यांविनि स्थाप्यलेपयेत्कूपिकांप्रिये ॥ ८९ ॥

टीका–अथ दूसरी उत्तम विधि. पारा गंधक समभाग, औ गंधकसें आधा नवसादर इनकी कज्जली करै, तिस कज्जलीकों चित्रकके काढेमें औ धतुरेके पनके रसमें औ घीकुमारिके रसमें न्यारा न्यारा एक एक दिन मर्दन करै, फिरि कांचकी शीशीमें भरिके ऊपर लेप चढावै ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

तद्विधानंप्रवक्ष्यामितच्छृणुत्वंसमाहिता ॥ खटिकांलोहकिट्टंचचूर्णयेद्वस्त्रगालितम्॥ ९०

टीका–लेपका विधान कहौं सो तुम सुनो. खडी औ लोहका कीट सूक्ष्म चूरण करि कपडेमें छाने ॥ ९० ॥

लोहकिट्टचतुर्थांशंचूर्णंगोधूमसंभवम् ॥ दिनैकंमर्दयेत्सर्वंसवस्त्रंलेपयेच्चताम् ॥ ९१ ॥

टीका–औ लोह कीटका चौथा भाग गेहूका आंटा मिलाइके एक दिन मर्दन करै फिरि वस्त्रमें लगाइके सीसीमें लेप लगावै ॥ ९१ ॥

क्रूपिकांशोषयेत्पश्चाल्लेपयेच्छोषयेत्ततः ॥ स
प्तवारंप्रलिप्यैवंशोषयेत्तांनिधापयेत् ॥ ९२ ॥

टीका—फिरि सुखाइके फिरि लगावै. ऐसें सात कपरौटी करे ओ सुखावे ॥ ९२ ॥

वालुकायंत्रकेदद्यादग्नियामचतुष्टयं ॥ स्वांग
शीतांतुसंस्फोट्यचोर्ध्वेलग्नंरसंनयेत् ॥९३॥

टीका—फिरि वालुकायंत्रमें चारि पहरकी अग्नि देई. फिरि आपसें सीतल भए पीछे सीसीकों फोडिके उपर लगा रस लैलेई ॥ ९३ ॥

सुरक्तंरससिंदूरंख्यातंवैद्यवरैःप्रिये ॥ अनुपा
नयुतंदत्तंरोगजालविनाशनम् ॥ ९४ ॥

टीका—सुंदर लालवरण लोकप्रसिद्ध रससिंदूर सो अनुपानयुक्त सेवन करनेसें रोगसमूहकों नाशकारक है ॥ ९४ ॥

अथगुणाः ॥ हरतिचरससिंदूरंकासश्वास
ग्निमांद्यमेहगणान् ॥ रक्तविकारंकृच्छ्रंज्वरा
दिरोगान्यथानुपानयुतम् ॥ ९५ ॥

टीका—अथ गुण. कास, श्वास, मंदाग्नि प्रमेह रक्तविकार मूत्रकृच्छ्र औरभी ज्वरादिक रोगोंसों योग्य है. अनुपानसें रससिंदूर हरना है ॥ ९५ ॥

अथदोषस्तच्छांतिश्च ॥ रससिंदूरमशुद्धाद्र साद्विजातंपारदवद्रोगान् ॥ कुर्याच्चेत्तच्छांत्यै घृतमरिचरजःपिबेत्सप्तदिनम् ॥ ९६ ॥

टीका—अथ दोष औ दोषकी शांति. जो अशुद्ध पारेसें रससिंदूर बनता है सो पाराकी तरह रोग करता है, तिसकी शांतिके वास्ते काली मरीच औ घृत सात दिन पिवै ॥ ९६ ॥

अथानुपानं ॥ गुंजादिमानमारभ्यचतुर्गुंजा वधिप्रिये ॥ दद्यात्कालवयोवन्हिदेशान्दृष्ट्वा मयंबलम् ॥ ९७ ॥

टीका—अथ अनुपान. एक रतीसें चारि रतीतक रससिंदूर काल, अवस्था, अग्नि, देश, रोग, बल देखिके देना ॥ ९७ ॥

पिप्पलीमधुसंयुक्तंवातमेहनिवारणम् ॥ सितोपलावरायुक्तंपित्तमेहंवरांगने ॥ ९८ ॥

टीका—वातप्रमेहमें मधुपिप्पली साथ, पित्तप्रमेहमें त्रिफलाचूर्ण औ मिश्रीसाथ ॥ ९८ ॥

भार्ङ्गीत्र्यूषणमाक्षीकःकसनश्वासशूलनुत् ॥ सितारात्रिसमायुक्तंरक्तदोषंविनाशयेत् ९९

टीका—भारंगी, सुंठि, मरीच, पीपरी, मधुसंग कास, श्वास, शूलरोगमें. औ रक्तदोषमें हलदि शकर संयुक्त ॥ ९९ ॥

कामलापांडुमंदाग्नीन्वरात्र्यूषणयुग्जयेत् ॥ यथाविष्णुःश्रियायुक्तोहृदिस्थोभक्तपातकान् ॥

टीका—कामला, पांडु, मंदाग्नि इन रोगोंमें त्रिफला औ त्रिकटुके चूर्णमें ॥ १०० ॥

हृद्रोगंबद्धकोष्ठंचवन्हिमांद्यादिकान्गदान् ॥ जयेच्चित्रकपांचालीशिवासौवर्चलान्वितं ॥१

टीका—हृदयरोग, बद्धकोष्ठ, मंदाग्नि इनमें चित्रक, पीपरी, हरड, संचलसंग देना ॥ १ ॥

शिलाजतुसितैलाभिर्मूत्रकृच्छ्रापनुद्भवेत् ॥ सौवर्चलवरायुक्तैरेचयेन्नवयौवने ॥ २ ॥

टीका—शिलाजतु, शकर, इलायची इनसंग मूत्रकृच्छ्र रोगमें देई. त्रिफला औ संचल लवणसंग लेनेसें रेचन करै ॥ २ ॥

जातीपत्रीलवंगाफूभंगापिप्पलिकुंकुमैः ॥ कर्पूरेणचसंयुक्तंधातुवृद्धिकरंपरम् ॥ ३ ॥

टीका—धातुवृद्धिकेवास्ते जायपत्री, लवंग, अफीम, भांग, पीपरी, केसर औ कपूर साथ लेई ॥ ३ ॥

लवंगरुच्यकशिवायुक्तंसर्वज्वरापहम् ॥ प्रि
येभंगाजमोदाभ्यांछर्दिरोगप्रणाशनम् ॥४॥

टीका—सर्व ज्वरमें लवंग, संचल हरडयुक्त. छर्दि रोगमें भांग औ अजमोदासंग ॥ ४ ॥

लवंगकुंकुमयुतेनागवल्लिदलोद्भवे ॥ वीटके
वापिकूष्मांडचूर्णेस्याद्धातुवर्धनम् ॥ ५ ॥

टीका—धातुवृद्धिकेवास्ते पानके बीडेमें रससिंदूर लवंग केसर रखिके देई. वा कूष्मांडचूर्णसाथ ॥ ५ ॥

गुडपर्पटसंयुक्तंकृमीन्कोष्ठगतान्जयेत् ॥ ल
वंगभंगाफूकैश्चसर्वातीसारनुत्प्रिये ॥ ६ ॥

टीका—पेटके कीडे जानेकेवास्ते पित्तपापडा औ गुडमें देई. सर्व अतिसारमें लवंग भांग अफीममें ॥६॥

दीप्यसौवर्चलोपेतंवन्हिमांद्यापहंपरम् ॥ पो
ष्टिकेप्यमृतासत्वसंयुतंपुष्टिकारकम् ॥ ७ ॥

टीका—अग्निमांद्यमें अजमोद औ संचललोनसाथ देई. पुष्टिकेवास्ते गिलोदके सत्वमें देई ॥ ७ ॥

वातंमाक्षिकपांचालीचूर्णयुक्तंविनिर्जयेत् ॥
सितोपलायुतंपित्तंजयेदंबुजलोचने ॥ ८ ॥

टीका—वातरोगमें पीपरी मधुसंग देई. पित्तमें मिश्रीसंग देई ॥ ८ ॥

त्रिकटुनियुतंहन्यात्कफरोगंसुदारुणम् ॥ अ
न्यान्रोगान्जयेद्युत्त्यायथायोग्यानुपानकैः

टीका—कफरोगमें सोंठि, मिरच, पीपरी, चित्रक-
संग. और रोगोंकों अपनी बुद्धिसें अनुपानयुक्त करै ॥१

पथ्यंपारदवत्सर्वंसेवयेद्देहरिंस्मरन् ॥ नवकं
जविशालाक्षिप्रियेपीनपयोधरे ॥ ११०॥

इतिश्रीपंडितरघुनाथप्रसादविरचिता
यामनुपानतरंगिण्यांरसानुपानकथनेतृ
तीयावीचिः ॥ ३ ॥

टीका—पथ्य पाराके तुल्य. इसकों लेके हरिस्म-
रण करै ॥ ११० ॥

इति श्रीरमण विहारीकृतायां अनुपानतरंगिणी-
टीकायां नौकाख्याया तृतीयः कोष्टकः ॥ ३ ॥

अथगंधकः तत्रभेदाः ॥ श्वेतोरक्तस्तथापी
तःकृष्णोगंधश्चतुर्विधः ॥ क्रमाद्विप्रादिकैर्व
र्णैःश्वेतःस्याद्व्रणलेपने ॥ १ ॥

टीका—अथ गंधकविधि—तत्र गंधकभेद. श्वेत,
रक्त, पीत औ कृष्ण गंधक चारि प्रकारका है. श्वेत
ब्राह्मण, रक्त क्षत्रिय, पीत वैश्य, कृष्ण शूद्र है. तहा
श्वेत घाउमें लेपन योग्य है ॥ १ ॥

रक्तःस्वर्णक्रियासूक्तःपीतवर्णोरसायने ॥ कृष्णःसर्वक्रियासूक्तोजनैरप्राप्यएवसः ॥ २ ॥

टीका–रक्त स्वर्णक्रियामें, पीत रसायनमें, रसायन उसकों कहते हैं. जिससें बुद्धिबल बढे औ जराव्याधिका नाश होई. कृष्ण सर्वकार्य योग्य है परंतु अप्राप्य हे ॥ २ ॥

अथशुद्धिः ॥ लोहपात्रेविनिःक्षिप्यगंधकंगोघृतंसमम् ॥ द्रुतेगंधेतुगोक्षीरेक्षिप्तःशुध्यति गंधकः ॥ ३ ॥

टीका–अथ गंधक शुद्धि. लोहके पात्रमें गंधक औ घृत समभाग मिलाइके मंद अग्नीसें गरम करे. जब पतला होई तब गोदुग्धमें बुझावै. तौ शुद्ध होई ॥ ३ ॥

अथानुपानं ॥ मासकाद्दशमासांतंशुद्धंगंधं निषेवयेत् ॥ शिरोव्रणेशिरःशूलेलेपयेद्यव कांजिकैः ॥ ४ ॥

टीका–एक मासेसें दशमासेतक शुद्ध गंधक सेवन करना चाहिये. मस्तकमें जब व्रण होई वा शूल होई तो कांजीसंग लेपन करना ॥ ४ ॥

नेत्ररोगेवरायुक्तोगोघृतेनव्रणंजयेत् ॥ मधु

नाज्येनवाहन्यादंजितःशुक्रमाक्षिकम् ॥ ५ ॥
आक्षिकंशुक्रंफूली ॥

टीका—नेत्ररोगमें त्रिफलासंग खाई. व्रणरोगमें घृतयुक्त लेई. नेत्रकी फूलीपर मधुमें अथवा घृतमें अंजन करे ॥ ५ ॥

सवल्लिजगवाज्येनपिप्पलीगोघृतेनवा ॥ ज
येत्कासंतथाश्वासंबृहतीफलसर्पिषा ॥ ६ ॥

टीका—कासमें गोघृत मरिचसंग, अथवा गोघृत पीपरीसंग, श्वासमें भटकटैयाका फल जिसकों भू-रिंगणीभी कहते है उसके फल औ घृतसाथ ॥ ६ ॥

मगधामधुसंयुक्तःस्वरभंगंजयेदयम् ॥ पा
र्श्वशूलंतथानागवल्लिनीरेणगंधकः ॥ ७ ॥

टीका—स्वरभंगमें मधुपिप्पली साथ. पार्श्वशूल याने पशूलीकी शूलमें नागवेलिके रसयुक्त देई ॥७॥

विपूचींनिंबुनीरेणप्रमेहंसगुडोजयेत् ॥ धा
त्रीफलरजोयुक्तोगंधकोऽयमजीर्णहा ॥ ८ ॥

टीका—विपूचिकारोगमें निंबूके रसमें. प्रमेहमें गुडसाथ. अजीर्णमें आमलाके चूर्णसाथ देई ॥८॥

पामादींस्तिलतैलेनग्रहणींविश्वसर्पिषा ॥ भ
क्षितोनिंबपचांगैःकुष्ठंकष्टतरंदहेत् ॥ ९ ॥

टीका—पामा याने खजुलीमें तिलके तेलमें, संग्रहणीमें सोंठि घृतसाथ, कुष्ठ रोगमें नींबके पंचागसाथ देई ॥ ९ ॥

वातरोगान्जयेद्गंधःसाज्येनस्वरसांबुना॥ पित्तरोगान्गवाज्येनगुडविश्वयुतःकफम् १०

टीका—वातरोगमें तुलसीका रस औ घृतसें पित्तरोगमें गोघृतसाथ, कफमें गुड सोंठिसाथ देई ॥ १०॥

वाज्यजामूत्रगोक्षीरघृतशुंठियुतंवलिम् ॥ टंकमारभ्यकर्षांतमब्देकंभक्षयेद्धियः ॥ ११ ॥

टीका—घोडेका औ बकरीका मूत्र, गाईका दूध, घृत, सोंठि इनके साथ एक टकसें लेके तोलापर्यंत एक वर्ष सेवन करे ॥ ११ ॥

जराव्याधिविनिर्मुक्तःसजीवेच्छरदांशतम् ॥ वरामार्कवचूर्णेनसेवेदब्दंजरांजयेत् ॥ १२॥

टीका—तौ जराव्याधिसें रहित होइके सौ वर्ष जिये औ त्रिफला औ भंगराके चूरणमें एक वर्ष लेई तौ वृद्धापन मिटे ॥ १२ ॥

कुष्ठेविषविकारेचानिर्गुंडीस्वरसान्विताम् ॥ रससंधभवांसम्यक्ज्ञत्वोलेपयेत्सुधीः ॥ १३॥

टीका—कुष्ठमें औ विषविकारमें निर्गुंडीके रससें

ग पारा गंधककी कजली लेप करे ॥ १३ ॥
वलिंपंचपलंशुद्धंमार्कवस्वरसैःसमैः ॥ घृष्ट शुष्कस्यतस्यार्धंशिवाचूर्णंविमिश्रयेत्॥१४॥

टीका–गंधक वीस तोला, भंगरेका रस वीस तोला, खरल करि सुखावै औ तिसका आधा हरड- का चूरण मिलावै ॥ १४ ॥

मासयुग्मंनिषेवेतमाक्षिकाज्यविमिश्रितं॥वार्धक्येनविनिर्मुक्तःशक्तिमान्वीर्यवान्भवेत् १५

टीका–फिरि घृतमधुसाथ दोमहिना सेवै तौ वृद्ध- पनासें छूटिकै शक्तिवंत औ वीर्यवंत होई॥ १५ ॥

कुष्ठंतैलयुतंभुक्त्वागंधकंचानुसेचयेत् ॥ अंगेशीततरंनीरंजयेदेवनचान्यथा ॥ १६ ॥

टीका–कुष्ठरोगी तेल साथ गंधक खाइके शरीरप- र ठंढा पानी सींचे तौ आराम होई ॥ १६ ॥

विकारोयदिजायेतगंधकाच्चेत्तदापिवेत् ॥ गोघृतेनान्वितंक्षीरंसुखीस्यादपिमानुषः॥१७॥

टीका–जो गंधकसें विकार होई तौ गोघृत दूध- संग पीवै तौ सुखी होई ॥ १७ ॥

इतिश्रीपंडितरघुनाथप्रसादविरचिता

यामनुपानतरंगिण्यांगंधानुपानकथने चतुर्थीवीचिः ॥ ४ ॥

टीका—इतिश्रीरमणविहारीकृतायामनु० नौकाख्यायां चतुर्थः कोष्टकः ॥ ४ ॥

॥ अथकेषांचिदुपरसानांविधिः ॥

॥ तत्रतावल्लोकनाथोरसः ॥

पारदंगंधकंशुद्धंसमभागंविमर्दयेत् ॥ टंकणं पारदादर्धंवराटाःस्युश्चतुर्गुणाः ॥ १ ॥

टीका—अथ उपरसविधि. तहां पहले लोकनाथरस लिखते हैं. शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक दोनों समभाग लैके कजली करे औ पारासें आधा टंकणक्षार लेई औ पारेसें चोगुणी कौडी लेई ॥ १ ॥

शरावसंपुटेसम्यक्पाचयेत्स्वांगशीतलम् ॥
पेषयित्वाप्रयत्नेनस्थापयेत्काचभाजने ॥४॥

टीका—शरावसंपुटमें गजपुट आंच देई. स्वांग शीतल भए पीछे पीसिके काचकी सीसीमें भरि राखै ॥४॥

अथानुपानं ॥ लोकनाथरसंवालेग्रहीत्वावल्लकद्वयम् ॥ विंशन्मरिचचूर्णेनयुक्तंदत्वावरांगने ॥ ५ ॥

टीका—अथ अनुपान. छ रत्ती लोकनाथरसमें बीस मरिचका चूर्ण मिलावै औ रोगीका बल देखिके एक रत्तीसें छतक देई. बिन विचारे औ बिन गुरु कोईभी रस मात्रा देइगा सो पापका भागी होइगा ॥ ५ ॥

प्रतिरोगेऽनुपानानिपृथक्कृत्वावदाम्यहम् ॥
सर्पिषावातिकंरोगंनवनीतेनपैत्तिकम् ॥६॥

टीका—अब न्यारा न्यारा अनुपान कहता हौं न्यारे न्यारे रोगोंका. वातरोगमें घीसें, पित्तमें माखनसें देई ॥ ६ ॥

कफामयंनिहंत्येवमाक्षिकेणनितंबिनि ॥ यथाहिसुरतोहन्यात्कफरोगानशेषतः ॥ ७ ॥

टीका—कफरोगमें मधुयुक्त नाश करते हैं ॥ ७ ॥

धान्याकंनिस्तुषंकृत्वाभर्जयित्वासुपेषयेत् ॥

तच्चूर्णेनसिताढ्येनलोकनाथोऽरुचिंजयेत् ८

टीका—धनियांकों छिलका दूरि करिके सेकै, फिरि पीसिके शक्कर मिलाई उसमें लोकनाथ लेई तौ अरुचि जाई ॥ ८ ॥

धान्यच्छिन्नाकषायेणज्वरंहन्यादसंशयम् ॥ मधुपिप्पलिसंयुक्तोलोकेशोवाजयेज्ज्वरम् ९

टीका—धनिया औ गिलोईके काढेमें लेई तौ ज्वर जाई. अथवा मधुपिप्पलीसें लेई ॥ ९ ॥

रक्तपित्तंकफंकासंश्वासंचस्वरवैकृतिम् ॥ वृष वालकषायेणसितामधुयुजाहरेत् ॥ १० ॥

टीका—रक्तपित्त, कफ, कास, श्वास, स्वरभंग इनरोगोंके नाशकेवास्ते अरूसा औ सुगंधवालाके काढेमें मधु औ मिश्रीयुक्त लेई ॥ १० ॥

अनिद्रतामतीसारंग्रहणीमग्निमांद्यतां ॥ भ र्जितेषजयाचूर्णमाक्षिकाभ्यांविनिर्जयेत् ११

टीका—जो निद्रा न आती होंइ तौ औ अती-सार, संग्रहणी, मंदाग्नि इनरोगोंमें किंचित् अग्निमें सेकी भई भांग औ मधुसंग लेइ ॥ ११ ॥

संचलाभयाकणारजोन्वितंनिषेवयेत् लोक नाथकंजलंपिबेत्कवोष्णकंततः ॥ शूलमाशु

संजयेद्विजीर्णमेवतत्क्षणं मंजुकोकिलस्वरेश रत्सरोजलोचने ॥ १२ ॥

टीका–जो संचललवण, हरड, पीपरी, इनके चूरणमें लेके किंचित् गरम जल पिये तौ शूल औ अजीर्णकों एक क्षणमें जीते ॥ १२ ॥

प्लीहानंछर्दिमर्शोसिरक्तपित्तंविनिर्जयेत् ॥ दाडिमीफलनीरेणलोकनाथंनिषेवयन् ॥ १३॥

टीका–प्लीहा, छर्दि, अर्श, रक्तपित्त, इन रोगों- में अनार जिसे दाडिमभी कहते हैं उसके फलके रसमें लेई ॥ १३ ॥

वृष्ठादूर्वारसैःसार्धंहारिणंशृंगकंजयेत् ॥ लोकनाथयुतंनस्येदस्रारक्तस्रुतिंनसः ॥ १४ ॥

टीका–जो नासिकासें रक्त गिरता होवै तौ दूब जिसे गुजराती ध्रो कहते हैं उसके रसमें हरिणका सींग घसिके ओ लोकनाथ मिलाइके नास देई तौ रक्त गिरना बंद होई ॥ १४ ॥

बर्हभस्मकणाकोलमज्जचूर्णासितामधु ॥ लोकनाथयुतंलीढ्वाछर्दिहिक्कांचसंजयेत् ॥१५॥

टीका–छर्दि औ हिचकी रोगमें मोरपंखकी भस्म

पीपरी बोरकी मींगी याने बोरकी गुठलीका मगज, मिश्री, मधु, इनके लोकनाथ लेई ॥ १५ ॥

तेनतेनानुपानेनयुक्त्यातंगंधदंजयेत् ॥ लोकनाथेनसद्वैद्यःप्रायश्चित्तैरघानिव ॥ १६ ॥

टीका—औरभी रोगरोगके अनुसार अनुपानयुक्त करिके वैद्य रोगीकों देई तौ सुखी होई ॥ १६ ॥

इति लोकनाथरसः ॥

अथवाजिवर्मारसः ॥ गंधकंपारदंत्र्यूपणंटंकणंदंतिबीजंवरांविष्णुबीजंविषम् ॥ मर्दयेद्भृंगराजस्यनीरैर्दिनंरक्तिकैकावटीवाजिवर्मारसः ॥ १७ ॥

टीका—अथ वाजिवर्मारसः. गंधक, पारा, सोंठि, मिरच, पीपरी, टंकण, जमालगोठा, हरड, बहेडा, आमला, हरिताल, वछनाग, इन सबका सूक्ष्म चूरण भांगरेके रसमें एक दिन मर्दन करिके एक रतीप्रमाण गोली करै यह वाजिवर्मारस है ॥ १७ ॥

अथानुपानं ॥ वटीमेकांनरःखादेद्वे वाकंजविलोचने ॥ पथ्ययुक्तोगदंहन्याद्यथारोगानुपानतः ॥ १८ ॥

टीका–अथ इसके अनुपान. एक अथवा दोगोली रोग बल देखिके अनुपानसें देई, तौ रोग मिटै ॥१८॥

वातशूलंक्षयंकासंश्वासंमूलकनीरतः ॥ हंति वाश्रृंगवेरांवुपिप्पलीमधुलःप्रिये ॥ १९ ॥

टीका–वातशूल, क्षय, कास, श्वास, इनमें मूरिके पत्ररसमें वा आदेकारस पीपरी मधुयुक्त देई ॥१९॥

वलीपलितरोगघ्नोवाजिवर्मासमाक्षिकः॥ शिग्रुमूलांवुगोसर्पिर्युतःशूलंज्वरंजयेत् ॥ २०॥

टीका–वलीपलितमें मधुयुक्त, शूल औ ज्वरमें सहिजनकी जडका रस औ गाईके घृतयुक्त. सहिजनकों सेगटाभी कहते हैं ॥ २० ॥

मस्तुनाजीर्णकंशीतज्वरमंवुजवीजकैः ॥ पुनर्नवायुतःपांडुंतंवुलांवुयुतोविषम् ॥ २१ ॥

टीका–अजीर्णमें दहींके पानीसें. शीतज्वरमें कमलके बीजसंयुत. पांडुमें पुनर्नवायुक्त. विषमें चावलके धोवनसें ॥ २१ ॥

तिलपर्णीरसैरक्ष्णोरंजितोतद्गदापहः ॥ शर्करा जाजिसंयुक्तोज्वरंपित्तभवंजयेत् ॥ २२ ॥

टीका–नेत्ररोगमें तिलपर्णीके रसमें अंजन करै. पित्तज्वरमें शक्कर जीरासंयुक्त ॥ २२ ॥

क्वाथेनास्तिगतंवातंदेवकाष्ठवचारुजाम् ॥ जातीफलान्वितोऽर्शांसिवातशूलंकटुत्रिकैः ॥ २३ ॥

टीका–अस्थिगतवातमें देवदारु, वच, कूटके काढेमें. कूटको उपलेटभी कहते हैं. अर्शरोगमें जायफलसाथ. वातशूलमें त्रिकटुसाथ ॥ २३ ॥

गोमूत्रेणनरःखादन्पुरुषत्वमवाप्नुयात् ॥ पुत्रजीवारसैर्बालेवंध्यास्यादेवगर्भिणी ॥ २४ ॥

टीका–गोमूत्रसें पुरुषत्वप्राप्ति होई. पुत्रजीवा जिसे पति जियाभी कहते हैं उसके रसमें वांझभी गर्भीण होई ॥ २४ ॥

लिप्तःसर्पविषंदंशेहंतिनिंबुरसैस्तुवा ॥ शिरीषस्वरसैर्वाज्येनाब्दनादरसैर्हिवा ॥ २५ ॥

टीका–जहां सर्पनें काटा होई उस जगहपर नींबूके रसमें शिरीषके रसमें वा घृतमें वा चौलाइके रसमें घसिके लेप करै ॥ २५ ॥

वचादीप्ययुतोहंतिकटिपीडांमरुद्भवां ॥ कसनंश्वसनंहंतिमधुवासारसान्वितः ॥ २६ ॥

टीका–जो वायुसें कमरमें दर्द होई तौ वच ओ

अजमोदासाथ लेई. कास श्वासमें अरुसेका रस औ मधुमें ॥ २६ ॥

ज्वरंहंतिविशालाक्षिसुरसास्वरसांजितः ॥ तथानित्यज्वरंहंतिभक्षितःकन्यकांबुना ॥२७॥

टीका—तुलसीके रससें अंजन करनेसें ज्वर जाई. कुमारिपाठाके रससें खाई तो नित्यज्वर जाई ॥२७॥

नारीदुग्धेननक्ताध्यमूर्ध्वश्वासंवरायुतः ॥ हंतिदाहयुतंपित्तज्वरमामलकान्वितः ॥ २८ ॥

टीका—स्रीके दूधसें अंजन करै तो रतौंधी जाई. त्रिफलासंग खानेसें ऊर्ध्वश्वास जाई. अमलायुक्त देनेसें दाहयुक्त पित्तज्वर जाई ॥ २८ ॥

सेतिकाघृतसंयुक्तःसर्वशूलानिसंजयेत् ॥ शिग्रमूलांबुगोसर्पिर्माक्षिकैर्वाविचक्षणे ॥ २९ ॥

टीका—सर्व शूलमें घृत औ सुवा जिसे सोवाभी कहते हैं तिसके संग वा सहिजनकी जडका रस घृतमधुयुक्त देई ॥ २९ ॥

कर्णरोगशिरोव्याधिपीनसार्धावभेदकान् ॥ जयेज्जातीफलेनायंवाजिपर्मास्सोत्तमः॥३०॥

टीका—कर्णरोग, मस्तकरोग, पीनस, आधासीसी इनमें जायफलसंग ॥ ३० ॥

कन्यकातुलसीतोयमाक्षिकैःसूतिकागदम् ॥
दध्नावातुगवांमूत्रैरतीसारंजयत्ययम् ॥३१॥

टीका—सूतिकारोगमें घीकुमारिका औ तुलसीका रस मधुयुक्त देई. अतीसारमें दहींसें वा गोमूत्रसें ॥३१॥

तक्रतोयेनवाजातीफलेनांबुरुहेक्षणे ॥ अथ
वामहिषीमूत्रैर्जयेत्संग्रहणीगदम् ॥ ३२ ॥

टीका—संग्रहणीमें छाछि जलसें वा जायफलसें वा भैसीके मूतसें देई ॥ ३२ ॥

कासमर्दरसैर्वापिटंकणेनाग्निमांद्यजित् ॥ त
थाब्राह्मीरसेनायंबुद्धिदोबुद्धिमत्ययम् ॥३३॥

टीका—मंदाग्निमें कसौंदीके रसमें वा टकणमें औ ब्राह्मीके रसमें लेनेसें वुद्धि वढाता है ॥ ३३ ॥

तांबूलवीटकेनायंकांतिसंस्कारकोमतः ॥ सु
धाक्षारयुतोगुल्मंनिर्गुंडीस्वरसेनवा ॥ ३४ ॥

टीका—पानके विडेमें लेनेसें शरीरकी कांतिकों करता है. गुल्ममें चुनाकेसंग वा निर्गुंडीके रसमें॥३४॥

यवानिकायुतोहंतिसन्निपातंसुदारुणम् ॥ वा
तामयमजाक्षीरैरथवागोघृतेनच ॥ ३५ ॥

टीका—सन्निपातमें अजमायनसंग, वातरोगमें बकरीके दूधसें वा घृतसें ॥ ३५ ॥

सर्ववातामयान्वार्यमार्कवस्वरसैर्जयेत् ॥ वा
जमोदाजयायुक्तोवरायुक्तोथवाप्रिये ॥३६॥

टीका—अथवा सर्व वातरोगमें भांगरेके रससें वा अजमोद ओ भांगसें वा त्रिफलासें ॥ ३६ ॥

वाश्वगंधारजःक्षौद्रसंयुतःसर्ववातजित् ॥ वि
ष्णुक्रांताजटायुक्तोधनुर्वातामयंजयेत् ॥३७

टीका—वा असगंध औ मधुकेसाथ लेई. धनुर्वातमें विष्णुक्रांताकी मूलसंग ॥ ३७ ॥

कूष्मांडस्वरसैर्मेहंगोदध्नावाविनिर्जयेत् ॥ गो
क्षुरकरजोयुक्तोधातुदोषंनिवारयेत् ॥ ३८ ॥

टीका—प्रमेहमें भूराकुह्मडाके रससंग, वा गाईके दहींसंग. धातुदोषमें गुकरूके चूरनसंग ॥ ३८ ॥

वर्धयेत्सर्पिषाशुक्रंकृच्छ्रंपूगरसैर्जयेत् ॥ रेचा
यैरंडतैलेनविद्रधिंगुडयुक्तथा ॥ ३९ ॥

टीका—घृतसंग खानेसें धातुवृद्धि करे मूत्रकृच्छ्रमें सुपारीके रससें वा काढेसें देई. एरंडतेलयुक्त लेनेसें रेचन होई. गुडसंग लेई तो विद्रधिरोग जाई ॥३९॥

आर्द्रकस्त्ररसैर्लिप्तोवृश्चिकस्यविषंजयेत् ॥
स्वेदंभृंगरसेःसार्धंचंपानीरैर्विगंधताम् ॥४०

टीका—जहां विच्छूनें डंक मारा होई तहां आदेके रसमें घसिके लेप करै. पसीना जादा आता होई तौ भांगरेके रससें लेई. देहकी दुर्गंधि मिटानेकों चंपाके रससें ॥ ४० ॥

तक्रमेहमजाक्षीरैःपित्तंशिवसितान्वितः ॥ अंजितोनिंबुतोयेनभूतावेशनिवारणः ॥ ४१ ॥

टीका—तक्रप्रमेहमें बकरीके दूधयुक्त, पित्तरोगमें आमला शक्करसंग. नींबूके रसमें अंजन करनेसें भूत शरीरमें आया होई तौ जाई ॥ ४१ ॥

त्रिफलोरुबुतैलेनसंजयेदुदरामयान् ॥ काकमाचीरसैर्वापिनात्रकार्याविचारणा ॥ ४२ ॥

टीका—उदरविकारमें त्रिफलाका चूरण और एरडके तेलसंग, अथवा मकोयके रससंग देना॥४२॥

मार्कवस्वरसैःशोफंवापलांडुरसैर्जयेत् ॥ करंजत्वग्रसैरेवंकृमिरोगंनसंशयः ॥ ४३ ॥

टीका—शोफरोगमें भांगरेके रससंग वा पियाजके रससंग कृमिरोगमें करंजकी छालीके रससंग ॥४३॥

शक्तिकृन्नवकंजाक्षिनागवल्लीदलांबुना ॥ अजाजीक्षौद्रसंयुक्तउष्णवातविघातकः ॥४४॥

टीका—पानके रसमें लेनेसें शक्ति वढाता है, उष्णवातमें जीरा औ मधुसंग ॥ ४४ ॥

वीटकेनयुतःस्वर्यःस्वरजिद्दरकोकिले ॥ आमशूलंसुरायुक्तःपामांगोमूत्रलेपितः ॥ ४५ ॥

टीका—स्वरभंगमें पानके वीडेके साथ, आमशूलमें मरोड फलीसग, खाजमें गोमूत्रयुक्त लेप करै॥४५॥

लेपितोभक्षितोलूताविषंभृंगरसान्वितः ॥ तथापल्लीविषंहंतिभक्षितोलेपितोंबुना ॥ ४६॥

टीका—लूताके विषमें भांगराके रससें खाई औ लेपभी करै. छपकलीके विषमें पानीसें लेप करै औ खाई ॥ ४६ ॥

उन्मत्तश्वविषंहंतिमेघनादरसैरयम् ॥ गोमूत्रेणगडूच्यावाकुष्ठंकष्टतरंतथा ॥ ४७ ॥

टीका—उन्मत्त कुत्तेके काटनेसें जो विष होता है उसमे चौराईके रसयुक्त, कुष्ठमें गोमूत्रसें वा गिलोयसें ॥ ४७ ॥

नमेरोगोभवेदेवंयस्येच्छास्तिवरांगने ॥ गुटीमेकांतथार्धांवाप्रत्यहंसेवयेद्विसः ॥ ४८॥

टीका—जिसके ऐसी इच्छा होई की, हमारे कोई रोग न होई; सो इसकी गोली एक अथवा आधी

नित्य सेवन करै ॥ ४८ ॥ इतिअम्बवमारसः ॥

अथाश्विनीकुमारः ॥ त्र्यूषणंफलत्रिकंचनाग फेनकंविषम् ॥ मागधीजटालवंगदंतिबीज तालकम् ॥ टंकणंचगंधकं रसंपृथक्पिचुं प्रिये ॥ क्षीरमर्धप्रस्थकंगवांविशोषयेदये ॥ ४९ ॥ मूत्रकंगवांविशोष्यभृंगराजनीरकं शोषयेद्विघर्षयन्निरंतरंविबंधयेत् ॥ वाजिमं थसन्निभांवटीमतीवसुंदरामश्विनीकुमारइत्य यंरसोवरांगने ॥ ५० ॥

टीका—अथ अश्विनीकुमाररसविधिः. सोंठि, मरिच, पीपरि, हरड, वहेडा, आमला, अफीम, वछनाग, पीपरीमूल, लवंग, जमालगोटा, हरिताल, टंकण, गंधक, पारा, ये १५ औषध एक एक तोला चूरण करिके बत्तीस तोला गेदुग्धमें खरल करै. फिरि ३२ तोला गोमूत्रमें. फिरि बत्तीस तोला भांगरेके रसमें खरल करिके चना प्रमाण गोली बनावे. यह अश्विनीकुमार रस है ॥ ४१ ॥ ५० ॥

अथानुपानं ॥ पित्तमेहनाशनोनिशायु तोऽश्विनीसुतः कृच्छ्रनाशनोयवानिका

युतोवरांगने ॥ पुंस्त्वसिद्धयेहिमाक्षिका न्वितंनिषेवयेद्विश्वभेषजान्वितंनिषेवयन् ज्वरंजयेत् ॥ ५१ ॥

टीका—अथ इसका अनुपान. पित्तप्रमेहमें हलदीसंग ई मूत्रकृच्छ्रकों अजमा इनसंग, नपुंसकपणा दूरि करनेकों मधुसंग, ज्वरमें सोंठिसग ॥ ५१ ॥

प्रमेहंतुलसीनीरैस्त्वक्कोलेनास्यगंधताम् ॥ उष्णवातंजयेत्पर्णवीटकेनगणायुजा ॥ ५२ ॥

टीका—प्रमेहमे तुलसीपत्रके रससंग, मुखदुर्गंधमें तजसंग, पानके वीडेमें पीपरीयुक्त लेनेसें उष्णवात जाई ॥ ५२ ॥

कार्पासस्वरसैःखादन्नरःशीतज्वरंजयेत् ॥ सुरसांबुसिताशुंठीयुतएकांतरंज्वरम् ॥ ५३ ॥

टीका—शीतज्वरमें कपासके रससग, एकांतर ज्वरमें तुलसीका रस, शकर, सोंठियुक्त ॥ ५३ ॥

मरिचाजाजितुलसीरसैस्तार्तीयकंज्वरम् ॥ भृंगराजरसैरेवंजयेच्चातुर्थिकंज्वरम् ॥ ५४ ॥

टीका—तृतीयज्वरमें मरिच, जीरा, तुलसीके रससंग. चातुर्थिकज्वरमें भांगरेके रससग ॥ ५४ ॥

पिप्पलीमूलसंयुक्तः प्रतिश्यायंमरुद्व्यथाम् ॥
निंबुनीरैःशिरोरोगेलेपयेच्चापिभक्षयेत्॥५५॥

टीका–सरदी लगी होई जिसकों जुषाम कहते हैं उसमें औ वातरोगमें पीपरीमूलसंग, मस्तकरोगमें नींबूके रससंग खाई. औ लेपभी मस्तकमें करै ॥ ५५ ॥

प्लीहानमुदरंहंतिविशालास्वरसान्वितः॥जीर्णज्वरंसितायुक्तःकासंसैंधवसंयुतः ॥ ५६ ॥

टीका–प्लीहा औ उदररोगमें इंद्रायनके रससंग लेई. जीर्णज्वरमें शक्करसंग. कासरोगमें सैंधवलवणसंग ॥ ५६ ॥

जयेद्वैकक्षदुर्गंधंपीतकस्वरसान्वितः॥ मंडूकपर्णिकानीरैर्बुद्धिसंवर्धनोमतः ॥ ५७ ॥

टीका–कांखकी दुर्गंधमें बबूलके रससंग, बुद्धिवृद्धिकेवास्ते ब्राह्मीके रससंग ॥ ५७ ॥

जयेज्जातीफलक्वाथैरामरक्तातिसारकौ ॥ वातामज्जसंयुक्तःपुष्टिकृद्बलवर्धनः ॥ ५८ ॥

टीका–आमातिसार औ रक्तातिसारमें जायफलके काढेमें, वदामके मगजसंग पुष्टिकारक औ वल वढानेवाला है ॥ ५८ ॥

हरिद्राघृतसंयुक्तःसूतिकागदनाश-
नः ॥ हीराबोलइतिख्यातस्तेना
पीहविमिश्रितः ॥ ५९ ॥

टीका—सूतिकारोगमें हलदी औ घृतमें औ इस-
में हीराबोलभी मिलावे ॥ ५९ ॥

भंगायुक्तोविशालाक्षिपरपुष्टस्वरप्रदः ॥ श
र्करासंयुतोहन्याज्ज्वरमस्थिगतंप्रिये ॥ ६० ॥

टीका—जो भंगयुक्त लेई तौ कोकिला ऐसा स्वर
होई. हाडमें प्राप्त भए ज्वरमें शक्करसंग ॥ ६० ॥

कदलीकंदनीरेणशूलंकोष्ठगतंजयेत् ॥ अन्य
रोगेषुवैद्येनदेयोयुक्त्यानुपानकैः ॥ ६१ ॥

टीका—कोष्ठगतशूलमें केलेकी जडके रससंग
और रोगोंमें वैद्य अपनी बुद्धीसें अनुपानयुक्त करे॥६१॥

इतिश्रीपंडितरघुनाथप्रसादविरचि
तायामनुपानतरंगिण्यासुपरसानुपा
नकथनेपंचमीवीचिः ॥ ५ ॥

टीका—इतिश्रीवैद्यरसिकविहारीविरचितायामनुपा
नतरंगिणीटीकायां नौकाख्यायां पंचमः कोष्टकः ॥५॥

॥ अथ रत्नादिविधिः ॥

॥ तत्रवज्रविधिः ॥ तस्यजातिभेद

मादौश्टणु ॥ वज्रंश्वेतंतथारक्तंपीतंकृष्णंविदुर्बुधाः ॥ विप्रक्षत्रियविट्शूद्राःक्रमाद्वर्णैरिमेमताः ॥ १ ॥

टीका–अथ रत्नादिविधि. तहा हीराकी विधि; तिसकी जातिभेद आदिमें सुनौ. श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण, ये चारि भेद हीराके हैं; तहां श्वेत ब्राह्मण, रक्तवर्ण क्षत्रिय, पीत वैश्य औ काला शूद्र है ॥ १ ॥

पुंस्त्रीनपुंसकंतत्रविज्ञेयंलक्षणैरपि ॥वृंताकसदृशारेखाविंदुहीनानराःस्मृताः ॥ २ ॥

टीका–तहां पुरुष, स्त्री, नपुंसक इसमें होते हैं; उनकौं लक्षणोंसें जानना. जौ बैंगनसरीखा होई औ रेषा विंदु उसमें न होई सो नर है ॥ २ ॥

रेखाविंदुसमायुक्ताःषट्कोणाःप्रमदामताः ॥ त्रिकोणाचिन्हसंयुक्तादीर्घास्तेवैनपुंसकाः ॥ ३ ॥

टीका–जो रेषाविंदुसयुक्त छकोणोंका होई सो स्त्री है. जो त्रिकोण औ रेषाविंदुयुक्त होई सो नपुसक है ॥ ३ ॥

सर्वेषांपुरुषाःश्रेष्ठाःश्रेष्ठवंशवरांगने ॥ देहसिद्धौस्मृतानारीनैवकांतेनपुंसकः ॥ ४ ॥

टीका—सवमें पुरुप श्रेष्ठ है औ देहकी सिद्धिके वास्ते स्त्री चाहिये नपुंसक निरर्थक है ॥ ४ ॥

विप्रोरासायनेराजारोगनाशायकीर्तितः ॥ वैश्योवादादिसिद्ध्यर्थंवयस्तंभायशूद्रकः ॥५॥

टीका—ब्राह्मण रसायनमें, क्षत्रिय रोगनाशमें, वैश्य वादादिक सिद्धिकेवास्ते है. आयुष्य दृढ करनेकों शूद्र है ॥ ५ ॥

नारीनार्येप्रदातव्यातथापंढायपंढकः ॥ पुरुषोवलवानेषसर्वेषांहितकारकः ॥ ६ ॥

टीका—स्त्री स्त्रीकों देना. नपुंसक नपुंसककों. पुरुष सर्वकों हित है; क्योंकि, यह वलवान है ॥ ६ ॥

अथशोधन ॥ कंटकारीजटाकल्कगर्भेवज्रंविपाचयेत् ॥ कुलत्थकोद्रवक्काथैर्दोलायंत्रेदिनत्रयम् ॥७॥शुद्धःस्याद्वज्रकश्चैनंसर्वकार्येप्रयोजयेत् ॥ एवंवैक्रांतकादीनिरत्नान्येवविशोधयेत्॥८॥

टीका—अथ शोधनविधि, भटकटैया जिसे भूरिंगणी कहते हैं उसकी जडकी लुगदीमें धरिके कोद्रव औ कुलथीके काढेमें दोलायंत्रसें तीनि दिन पचावै तौ शुद्ध होई. ऐसेही वैक्रांत आदिक शोधि लेई ७॥८

अथमारणं ॥ रामाब्दरूढकार्पासजटांपिष्ट्वा तदंबुना ॥ नागवल्लिजटांवापितन्नीरेणविपेष येत्॥९॥तत्कल्कमुद्रितंवज्रंपाचयेद्गजयंत्रके॥ एवंसप्तपुटैर्वज्रंपंचत्वमुपजायते ॥ १० ॥

टीका–अथ मारण. तीनिवर्षका कपासकी जड उसीके रसमें पीसे. अथवा नागवेलिकी जड उसीके रसमें पीसे. उसी कल्कमें संपुट करिके गज-पुट देई; ऐसे सात पुटमें हीरा मरता है ॥ ९ ॥ १० ॥

अथगुणाः ॥ आयुष्यंसुखदंबल्यंरूपदंरोग नाशनम् ॥ अपमृत्युहरंप्रोक्तंरत्नंवज्रादिकं प्रिये ॥ ११ ॥

टीका–अथ गुणाः. आयुष्य वढानेवाला है, सुख देनेवाला, वल देनेवाला, रूपका देनेवाला, औ रोगनाशक है औ वज्रादिक सव अपमृत्युकोंभी हरनेवाले है ॥ ११ ॥

अथाशुद्धदोषाः ॥ दाहंपांडुगदंकुर्यात्किलासंपार्श्वशूलकम् ॥ वज्रादिकंरत्नगणंरोगजालमशुद्धकम् ॥ १२ ॥

टीका–अथ अशुद्धमें दोष. दाह, पांडु, किलाश, पार्श्वशूल, इत्यादि, रोगोंकों अशुद्ध वज्रादिक करतेहे १२

अथशांतिः ॥ गोदुग्धेनसितासर्पिर्माक्षिकं दिनसप्तकम् ॥ पिवेद्वज्रादिरत्नोत्थरोगजालप्रशांतये ॥ १३ ॥

टीका–अथ शांति. मधु, घृत, शक्कर गोदुग्धसें सात दिन पीवै तौ अशुद्ध रत्नादि दोष शांत होते है ॥ १३ ॥

अथानुपानम् ॥ कुष्ठनुत्खदिरक्काथसंयुतावज्रभूतिका ॥ माक्षिकार्द्रकनीराढ्यावातव्याधिप्रणाशिनी ॥ १४ ॥

टीका–अथ अनुपान. हीरेकी भस्म खैरके काढेमें लेई तौ कुष्ठ जाई. आदेका रस औ मधुसंग लेई तौ वातरोग जाई ॥ १४ ॥

पिप्पलीमरिचाढ्येनवृषनीरेणसेवितम् ॥ कासंश्वासंकफंहन्याद्वज्रभूतिरसंशयम् ॥ १५ ॥

टीका–पीपरी औ मरीचके चूर्णयुक्त अरूसेके रसमें लेई तौ कास, श्वास, कफनाश करै ॥ १५ ॥

माक्षिकंघृतसंयुक्तंपुष्टिदंललनेमतम् ॥ सूतिरोगंगवांमूत्रैःस्वेदंशर्करयान्वितम् ॥ १६ ॥

टीका–घृत मधुसंग पुष्टिकारक है. गोमूत्रयुक्त सूतिकारोगकों हरै. शक्करसाथ स्वेदकों हरै ॥ १६ ॥

एवमन्यानिरत्नानिदत्त्वारोगेषुबुद्धितः ॥ अ
नुपानानिसंयोज्यज्ञात्वारोगवलावलम्॥१७

टीका—ऐसेही औरभी रत्न, रोगोंमें स्वबुद्धिसें देइ. रोगवलावलदेखिके अनुपानयुक्त करै ॥ १७ ॥

अथप्रवालेविशेषः ॥ शोधयेद्वज्रवच्चैनंमारये
च्चापिवज्रवत् ॥ अथवात्वर्कजेक्षीरेमारयेत्कौ
कुटेपुटे ॥ १८ ॥

टीका—अथ प्रवालमें विशेष कहते हैं. शोधन मारन पूर्ववत् अथवा आंकडेके दूधमें कुक्कुटपुट देई तौ भस्म होई ॥ १८ ॥

अथानुपानं ॥ कणामाक्षिकाभ्यांलिहेद्यःप्रवा
लंजयेच्छ्वासकासज्वरंजीर्णसंज्ञम् ॥ तथाको
ष्ठगंमारुतंसंजयेतभिषग्दुस्तरांचैवाहिक्कांनि
हन्यात् ॥ १९ ॥

टीका—अथ अनुपान. जो मधुपीपरीमें प्रवालकौं सेवै सो श्वास, कास, जीर्णज्वर, कोष्ठगतवात औ हिक्का जीतै ॥ १९ ॥

त्रिकातिक्तशिवाभिश्चज्वरंहंत्येवदारुणम् ॥
पक्वरंभाफलेनैवधातुक्षयहरंपरम् ॥ २० ॥

टीका–कुटकी चिरायता हरडयुक्त ज्वर हरे, पके केलाके फलमें धातुक्षयकों हरता है ॥ २० ॥

सितादुग्धयुतंपित्तंगुल्कंदेनउरःक्षतम् ॥ गुल्कंदंमानुषैःख्यातंनतुगीर्वाणभाषया॥२१॥

टीका–दूध शक्करसें पित्तकों गुलकंदमें उरःक्षत रोगके जीते ॥ २१ ॥

नागलतादलवीटकयुक्तंकार्श्यसुरोजघनेवि निहन्यात् ॥ कृच्छ्रहरंत्रिफलामधुयुक्तंतंडुल जैश्चहिमैरथवास्यात् ॥ २२ ॥

टीका–पानके वीडामें दुर्वलताकों हरता है. त्रिफला मधुयुक्त मूत्रकृच्छ्रकों अथवा चावलके हिमयुक्त मूत्रकृच्छ्रकों हरता है ॥ २२ ॥

धातुपुष्टिकरंकांतेसिताघृतसमन्वितम् ॥ धारोष्णेनचदुग्धेनप्रदरंदारयत्यपि ॥ २३ ॥

टीका–घृत शक्करयुक्त धातु पुष्ट करे. धारोष्ण दुग्धयुक्त प्रदर हरे ॥ २३ ॥

मधुशर्करयासुरसास्वरसेर्दतिमारुतमाशुक रोतिसुखम् ॥ अयिहंतिनिशांध्यमिदंसुरसा समूपकविड्युतमंजनकम् ॥ २४ ॥

टीका—मधु शक्कर तुलसीरसयुक्त वातरोग हरै. मूसेकी लेंडी याने उंदराकी मींगनी औ तुलसीरसयुक्त अंजन करनेसें रतौंधी हरता है ॥ २४ ॥

सितोपलार्द्रकरसैःपित्तकासहरंपरम् ॥ एवमन्येषुरोगेषुदातव्यंबुद्धिमत्तरैः ॥ २५ ॥

टीका—मिश्री औ आदेके रसयुक्त पित्तकास हरता है. ऐसे और रोगोंमेंभी बुद्धिवान् वैद्य देवै ॥२५॥

इतिश्रीपंडितरघुनाथप्रसादविरचितायामनुपानतरंगिण्यांरत्नानुपानकथने षष्ठीवीचिः ॥ ६ ॥

टीका—इति श्रीरमणविहारीविरचितायां अनुपानतरंगिणीटीकायां नौ॰रत्नविधिकथने पष्ठः कोष्टकः ॥६॥

॥ अथौषधानुपानानि ॥

तत्रत्रिफलाविधिः ॥ आमलकाभयाक्षास्तु रैघ्धिभूपक्षैभागिकाः ॥ त्रिफलैषासमाख्या तासमभागैस्तुवात्रिभिः ॥ १ ॥ भक्षितानि शिनेत्रार्तिंनिहन्यान्मधुसर्पिषा ॥ शर्करासंयुतामेहंपित्तरोगंघृतान्विता ॥ २ ॥

टीका—अथ औषध अनुपान. तहा त्रिफलाविधि. आमला ४ चारिभाग, हरड १ एकभाग, बेहेड़ा

२ दोनभाग, इसकों त्रिफला कहते हैं. अथवा तीनों समभाग लेना सोई. त्रिफला रात्रिमें घृतमधुयुक्त लेनेसें नेत्ररोगशांति होता है. शर्करयुक्त प्रमेहकों औ घृतयुक्त पित्तकों जीते है ॥ १ ॥ २ ॥

वातंतैलान्विताहंतिकफंमाक्षिकसंयुता ॥ तद्रसःक्षौद्रसंयुक्तःकामलांजयतिध्रुवम् ॥ ३ ॥

टीका—वातरोगकों तैलयुक्त. कफकों मधुयुक्त. त्रिफलाका रस मधुयुक्त कामलाकों हरता है ॥ ३ ॥

वैडंगेणकषायेणखादिरेणविभावयेत् ॥ पृथक्पृथग्विशालाक्षिभृंगराजांबुनात्रिधा ॥४॥ विशोष्यमासकंसेवेद्वलीपलितनाशनं ॥ सौंदर्यप्राप्तयेऽर्धाब्दमब्दंखादन्युवाभवेत्॥५॥

टीका—त्रिफलाचूर्णकों वायविडंगके काढेमें औ खैरके काढेमें औ भांगरेके रसमें न्यारा न्यारा तीनि तीनि भावना देई. फिरि सुखाइके एक महिना बलानुमान सेवै तो वलीपलितरोग नाश होई. सुंदरता प्राप्तिकेवास्ते छमहिना. एकवर्ष सेवन करै तौ वृद्धभी ज्वान होई ॥ ४ ॥ ५ ॥

अथगुडूच्यनुपानं ॥ छिन्नाचूर्णंतुवासत्वमनु

पानैर्गदंजयेत् ॥ चूर्णटंकात्तिंदुकातंसत्वंव ल्लाद्यमापकम् ॥ ६ ॥

टीका—अथ गिलोइअनुपान. गिलोईका सत्व अथवा चूर्ण अनुपानयुक्त लेनेसें रोग हरता है. चूर्ण एकटंकसें तोलेभरतक औ सत्व तीनि रतीसें एक मासापर्यंत वलावल देखिके लेना ॥ ६ ॥

संजयेत्सितयापित्तंमाक्षिकेणकफामयम् ॥ घृतेनवातजान्रोगान्विबंधंतुगुडेनवै ॥ ७ ॥

टीका—शक्करयुक्त पित्तरोग, औ मधुयुक्त कफरोग, घृतयुक्त वातरोग, गुडयुक्त विबंधकों हरता है ॥ ७ ॥

रुबुतैलेनवातास्रंशुंठ्याजैवामवातकम् ॥ गु ल्मंचैवोदरंरोगंजयेच्छुंठ्येवसत्वरम् ॥ ८ ॥

टीका—एरंडतेलयुक्त वातरक्त, सोंठियुक्त आमवात औ गुल्म औ उदररोग हरै है ॥ ८ ॥

तक्रेणमर्मजंरोगंमाहिपाज्येननेत्ररुक् ॥ श मंयातितथासर्वेगदाःशीतांबुनाप्रिये ॥ ९ ॥

टीका—छाछियुक्त मर्मस्थानके रोग, भैंसके घृतमें नेत्ररोग औ शीतल जलयुक्त सेवन करनेसें सर्व रोग जाते हैं ॥ ९ ॥

अथसामान्यतःसर्वेषामनुपानानि ॥ अनुपा

२ दोनभाग, इसकों त्रिफला कहते हैं. अथवा तीनीं समभाग लेना सोई. त्रिफला रात्रिमें घृतमधुयुक्त लेनेसें नेत्ररोगशांति होता है. शर्करायुक्त प्रमेहकों औ घृतयुक्त पित्तकों जीते है ॥ १ ॥ २ ॥

वातंतैलान्विताहंतिकफंमाक्षिकसंयुता ॥ तद्रसःक्षौद्रसंयुक्तःकामलांजयतिध्रुवम् ॥ ३ ॥

टीका—वातरोगकों तैलयुक्त. कफकों मधुयुक्त. त्रिफलाका रस मधुयुक्त कामलाकों हरता है ॥ ३ ॥

वैडंगेणकषायेणखादिरेणविभावयेत् ॥ पृथक्पृथग्विशालाक्षिभृंगराजांबुनात्रिधा ॥४॥ विशोष्यमासकंसेवेद्वलीपलितनाशनं ॥ सौंदर्यप्राप्तयेऽर्धाब्दमब्दंखादन्युवाभवेत्॥५॥

टीका—त्रिफलाचूर्णकों वायविडंगके काढेमें औ खैरके काढेमें औ भांगरेके रसमें न्यारा न्यारा तीनि तीनि भावना देई. फिरि सुखाइके एक महिना बलानुमान सेवे तौ वलीपलितरोग नाश होई. सुंदरता प्राप्तिकेवास्ते छमहिना, एकवर्ष सेवन करै तौ वृद्धभी ज्वान होई ॥ ४ ॥ ५ ॥

अथगुडूच्यनुपानं ॥ छिन्नाचूर्णंतुवातत्वमनु

पानैर्गदंजयेत् ॥ चूर्णंटंकात्तिंदुकांतंसत्वंव ल्लाद्यमापकम् ॥ ६ ॥

टीका–अथ गिलोइअनुपान. गिलोईका सत्व अथवा चूर्ण अनुपानयुक्त लेनेसें रोग हरता है. चूर्ण एकटंकसें तोलेभरतक औ सत्व तीनि रत्तीसें एक मासापर्यंत बलाबल देखिके लेना ॥ ६ ॥

संजयेत्सितयापित्तंमाक्षिकेणकफामयम् ॥ घृतेनवातजान्रोगान्विबंधंतुगुडेनवै ॥ ७ ॥

टीका–शक्करयुक्त पित्तरोग, औ मधुयुक्त कफरोग, घृतयुक्त वातरोग, गुडयुक्त विबंधकों हरता है ॥ ७ ॥

रुबुतैलेनवातास्त्रंशुंठ्याजैवामवातकम् ॥ गु ल्मंचैवोदररोगंजयेच्छुंठ्येवसत्वरम् ॥ ८ ॥

टीका–एरंडतेलयुक्त वातरक्त, सोंठियुक्त आमवात औ गुल्म औ उदररोग हरे है ॥ ८ ॥

तक्रेणमर्मजंरोगंमाहिषाज्येननेत्ररुक् ॥ श मंयातितथासर्वेगदाःशीतांबुनाप्रिये ॥ ९ ॥

टीका–छाछियुक्त मर्मस्थानके रोग, भैंसके घृतमें नेत्ररोग औ शीतल जलयुक्त सेवन करनेसें सर्व रोग जाते हैं ॥ ९ ॥

अथसामान्यतःसर्वेषामनुपानानि ॥ अनुपा

नमहंवक्ष्येसर्वसाधारणंरुजाम्॥शांत्यैधातूप
धातूनामौषधीनांविचक्षणे ॥ १० ॥

टीका–अथ सामान्यसें सर्व रोगोंमें सर्वौषध अनुपान. हे प्रिये, मैं सर्व रोगोंकी शांतिके वास्ते सर्व धातु, उपधातु और औषधीनका साधारण अनुपान कहता हौं ॥ १० ॥

माक्षिकेणलिहेत्कृष्णाज्वरेचविषमज्वरे ॥ त्रि
दोषेशृंगवेरस्यरसंमाक्षिकसंयुतम् ॥ ११ ॥

टीका–ज्वरमें औ विषमज्वरमें मधुपिप्पली, त्रिदोषमें आदेका रस औ मधु ॥ ११ ॥

कटुत्रिकरजोयुक्तंसिंहास्यस्वरसंलिहेत् ॥ का
सश्लेष्मविकारस्यशांतिःस्यान्नवयौवने॥१२॥

टीका–त्रिकटुचूरणयुक्त अडूसेका रस लेई तौ कास, कफरोग शांति होई ॥ १२ ॥

ज्वरेचपुनरायातेरेणुमेघकिरातकम् ॥ जीर्ण
ज्वरहराश्यामामधुनामधुराधरे ॥ १३ ॥

टीका–जो ज्वर गए पीछे फिरिके आवे तौ पित्तपापडा, नागरमोथ औ चिरायता देई औ जीर्णज्वरकों हरनेवाली मधुयुक्त पीपरी है ॥ १३ ॥

तक्रंसंग्रहणीरोगेकृमिरोगेविडंगकम् ॥ वन्हि
भल्लातकौतद्वत्प्रियेऽर्शःसुप्रयोजयेत् ॥ १४॥

टीका–संग्रहणीमें मठा, कृमिरोगमें वायविडंग, अर्शरोगमें चित्रक औ भिलामा ॥ १४ ॥

पांडुरोगेचमंडूरंक्षयेचैवशिलाजतु ॥ भार्ङ्गी
विश्वौषधेश्वासेशूलेहिंगुघृतान्वितम् ॥१५॥

टीका–पांडुरोगमें मंडूर, क्षयमें शिलाजीत, श्वासमें भारंगी औ सोंठि, शूलमें घृतयुक्त हिंग ॥ १५॥

सितायुक्तावरामेहेवानिशावासितामलम् ॥
तृषायामग्निसंतप्तहेमतापितजीवनम्॥१६॥

टीका–प्रमेहमें त्रिफलामिश्रीयुक्त अथवा हलदी अथवा मिश्रीयुक्त आमला, तृषामें तप्तसोनेका बुझाया पानी ॥ १६ ॥

लोहनिर्वापितंनीरंज्वरेतृष्णासमन्विते ॥ क
रंजोरुबुतैलाढ्यंगोमूत्रंचामवातके ॥ १७ ॥

टीका–तृषायुक्त ज्वरमें तप्तलोह बुझाया पानी, आमवातमें करंज औ एरंडतैलयुक्त गोमूत्र ॥ १७ ॥

वराकृष्णारजःक्षौद्रविषेहेमशिरीषकम् ॥ प्र
देयंभिषजानित्यंकासेक्षुद्राकटुत्रिकम्॥१८॥

टीका—प्लीहामें त्रिफला पीपरका चूर्ण, विष खाएकों सोना औ शिरीषका रस, कासमें भूरींगणी औ त्रिकटु चूरण ॥ १८ ॥

वायुरोगेऽनुपानंस्याद्यवनेष्टाज्यकौशिकम् ॥ आकल्लकवचाक्षौद्रैरपस्मारंजयेत्प्रिये ॥१९॥

टीका—वातरोगमें लशुन, घी, गुग्गुल, अपस्मारमें अकरकरहा, वच मधुयुक्त देना ॥ १९ ॥

प्रदेयंप्रदरेरोध्रंरेचनंचोदरामये ॥ वातरक्ते स्मृताच्छिन्नैरंडतैलसमन्विता ॥ २० ॥

टीका—प्रदरमें लोध्र, उदररोगमें रेचन, वातरक्तमें एरंडतैलयुक्त गिलोय ॥ २० ॥

अर्दितेमाषवटकानवनीतसमन्विताः ॥ मधुनीरेसमेमेदोगदेशस्तेनसंशयः ॥ २१ ॥

टीका—अर्दितरोगमें उडदके वडे औ माखन, मेदरोगमें मधु जल समभाग ॥ २१ ॥

अरुचौबीजपूरंवादाडिमंवाप्रदीयताम् ॥ कौशिकस्याव्रणेशोकेसुराद्राक्षाम्लपित्तके ॥२२

टीका—अरुचीमें बिजौरा वा दाडिम, व्रणमें त्रिफलागुग्गुल, शोकमें मदिरा, अम्लपित्तमें द्राक्षा ॥२२॥

शतावरीचकूष्माडस्वरसोमूत्रकृच्छ्रके ॥ सि
तोपलावराचूर्णंनेत्रातंकेसुपूजितम् ॥ २३ ॥

टीका—शतावरी औ भूराकुह्मडाका रस मूत्रकृच्छ्रमें. नेत्ररोगमें मिश्रीयुक्त त्रिफलाचूर्ण ॥ २३ ॥

अनिद्रेमाहिषंदुग्धमुन्मादेजीर्णकंघृतम् ॥ कु
ष्ठेचखदिरक्काथोलाजाश्छर्दिगदेहिताः ॥२४

टीका—निद्रा न आती होई तौ भैसीका दूध. उन्मादमें जीर्ण घृत. कुष्ठमें खैरका काथ. उलटीमें धानकी लाई ॥ २४ ॥

बालेऽजीर्णगदेनिद्रावाशिवाऽभोजनंजलम्॥
देयंतीक्ष्णतरंनस्यंगदेजत्रूर्ध्वसंभवे ॥ २५ ॥

टीका—अजीर्णमें निद्रा वा हरड वा लंघन वा जल. जत्रु कहते है गलेके आगाडी जो हड्डी है उसकों जो गलेसें नीचे दोऊ तरफ है उसके ऊपरके रोगोंमें तीक्ष्ण औपधका नास सुंघना ॥ २५ ॥

मूर्च्छासुशीतलोपायंपार्श्वशूलेतुपौष्करम् ॥
कार्श्यमांसरसोदुग्धंवालश्मर्यांशिलाजतु२६

टीका—मूर्च्छामें शीतल उपाय. पशुलीकी शूलमें ... दुर्वलताकों मांसका जूस अथवा दूध. ...रीमें शिलाजीत ॥ २६ ॥

रसोमूलकपत्राणासूर्यक्षारसमन्वितः ॥ मूत्ररोधेतुहिक्कायांसितयासहमागधी ॥ २७ ॥

टीका—मूत्ररोधमें मूलेके पत्तेका रस औ सोराखार. हिचकीमें मिश्री ओ पीपरी ॥ २७ ॥

शीतेसर्पलतापत्रस्वरसोमरिचान्वितः ॥ घृततीक्ष्णान्वितोवातेसुरसास्वरसःप्रिये ॥२८

टीका—शीतमे नागबेलीके पानका रस औ मरिच वातमें घृत औ मरिचयुक्त तुलसीका रस ॥ २८ ॥

कविप्रिया ॥ सत्कुलोद्भवप्रभोस्वकीयकंकुलादिकम् ब्रूहियेनतेपितामहादिकान्जनाःकिल ॥ संविदेयुरंबुजाक्षकाव्यकृन्नरोत्तमप्टच्छतींतवप्रियामयिप्रजेशसत्वरम् ॥ २९ ॥

टीका—अथ काव्यकर्ताका कुलपरपरा वर्णन करते है— तहां कविप्रिया पूछती हे क्री, हे महाराज! आपका परपरा वर्णन करो, जिसते आपके पितामहादिकोंकों लोग जानै ॥ २९ ॥

कविः ॥ अभूद्भागीरथीतीरेकान्यकुब्जोद्विजोत्तमः ॥ वालाशर्माहिसुकलःपौंडरीकादियज्ञकृत् ॥ ३० ॥

टीका—अथ कवि स्वयं प्रियासें कहते है. हे वरारोहे भागीरथी गंगाजीके किनारे ज्ञातीय कान्यकुब्ज ब्राह्मणोत्तम वालाशर्मा सुकल होते भए. " सुकलका अर्थ अमरकोशमें प्रमाण है सुकलो दातृभोक्तरि जो आप दानी औ भोगी होई, सो सुकल" ऐसे वालाशर्मा औ पौंडरीकादि यज्ञके करनेवाले भए ॥ ३० ॥

वीरेश्वरोऽभवत्तस्यकाशिनाथश्चतत्सुतः ॥ तदन्वयेऽभवद्वैद्योधन्वंतरिरिवापरः ॥ ३१ ॥ गोवर्धनइतिख्यातःसदैवारोग्यवर्धनः ॥ तापीरामःसुतस्तस्यवैद्यशास्त्रविशारदः ॥३२॥

टीका—तिनके पुत्र वीरेश्वर भए. तिनके कासिनाथ भए. तिनके वंशमें गोवर्धनसुकल वैद्य भए, सो जैसे दूसरे धन्वंतरी भए. सो सदा आरोग्यके वढानेवाले. तिनके तापीराम सुकल वैद्यशास्त्रमें चतुर भए ॥३१॥३२॥

सीतारामोऽभवत्तस्यसर्वशास्त्रविदांवरः ॥ तत्सुतोऽहंवरारोहेलक्ष्मीमातास्तिमद्धिता ३३

टीका—तिनके सीताराम सुकल सर्वशास्त्रमें प्रवीण भए. तिनका मैं पुत्र हौं. मेरी माता लक्ष्मी है; सो मेरा हितकरनेवाली है ॥ ३३ ॥

रघुनाथप्रसादोऽहंसत्कवींद्रसुखप्रदाम् ॥ अ
करवंतवप्रीत्याअनुपानतरंगिणीम् ॥ ३४ ॥

टीका—मेरा नाम रघुनाथप्रसाद हे सो मैंने तुमारी प्रीतिकेवास्ते सत्कवियोंके सुख देनेवाली अनुपानतरगिणी करता भया ॥ ३४ ॥

अनुपानजलैःपूर्णास्वच्छनीरैर्यथानदी ॥ सु
समाप्तेयमब्जाक्षिश्रीपतेःसुप्रसादतः ॥ ३५ ॥

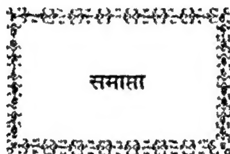
टीका—यह अनुपानरूप जलसे भरीहुई तरगिणी नाम ग्रंथरूपी नदी हे जैसें स्वच्छ जलसें भरीहुई नदी, यह तरगिणी लक्ष्मीनाथकी कृपासें समाप्त भई ॥ ३५ ॥

यत्फलंतरंगिणीकृतेऽस्तिसत्कुलांगने तत्फ
लंरमेशपादपद्मयोःसमर्पितम् ॥ तेनयेंजग
द्धितंकरीभवेदियंसदासत्सुपूजिताभिपग्वरे
पुतिष्ठताद्भुवि ॥ ३६ ॥

टीका—जो फल इसतरगिनीके रचनेसें भया सो मैंनें लक्ष्मीपति नारायणके चरणकमलमें अर्पण किया; इसकरिके यह अनुपानतरगिणी जगतके हित करनेवाली होई औ सदा श्रेष्ठ जनोंमें सराही जाई औ श्रेष्ठ वैद्योंमें बहुत काल पृथ्वीमें स्थित रहै ॥ ३६ ॥

इतिश्रीमत्पंडितरघुनाथप्रसादविरचितायामनुपानतरंगिण्यांसप्तमीवीचिः ॥ ७ ॥

टीका–इति श्रीरमणविहारीविरचितायामनुपानतरंगिणीटीकायां नौकाख्यायां सप्तमः कोष्टकः ॥ ७ ॥



पुस्तक मिलनेका ठिकाणाः–
मुंबई–कालकादेवीरोड हरिप्रसाद
भगीरथ पुस्तकालय
मुंबई.

यह पुस्तक पंडित रघुनाथप्रसाद सीताराम सुकलकाशीस्थने बनाके छपवायाथा सो हक सहित इनके पाससें लेकर

हरिप्रसादभगीरथ गौडब्राह्मणनें

निर्णयसागर छापखानेमें छपवायाहे.

मुंबई

आवृत्ती २ री

संवत् १९४६
